आर.एन.आई. नं. 3653/57 डाक पंजीयन संख्या RJ/JPC/M-21/2012-14
मुद्रण तिथि दिनांक 5 से 8 जून, 2014
वर्ष : 72 ★ अंक : 06 ★ मूल्य : 10 रु.
डाक प्रेषण तिथि 10 जून, 2014★ ज्येष्ठ, 2071

ISSN 2249-2011

हिन्दी मासिक

जिनवाणी

सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल जयपुर

मंगल-मूल, धर्म की जननी, शाश्वत सुखदा कल्याणी।
द्रोह-मोह-छल-मान-मर्दिनी, फिर प्रगटी यह 'जिनवाणी'।।

भारतवर्ष का स्वर्णतीर्थ

करो शाकाहार का
प्रचार
होगा अहिंसा का
प्रसार
इसी से खुलेंगे
केवल
विश्वशांति के
महाद्वार...

परिपूर्ण है आहार शाकाहार......
मन मैं रहे सदा शुद्ध विचार
खुलेंगे कल्याणकारी विश्वशांति के द्वार...
सफल जीवन होगा सफल साकार

रतनलाल सी. बाफना ज्वेलर्स

स्वर्णतीर्थ - औरंगाबाद 0240-2244520 | स्वर्णतीर्थ - जळगांव (H.O.) 0257-2223903 | स्वर्णमॉल - जळगांव 0257-2241353 | स्वर्णतीर्थ - नाशिक 0253-2315644

जहाँ विश्वास ही परम्परा है   मानवीय आहार शाकाहार

www.malhar.org

Jai Guru Hasti

Jai Guru Heera

Jai Guru Maan

।। जैनं जयति शासनम् ।।

दान से पुण्य होता है, पर संयम से कर्मों की निर्जरा होती है।
दान हृदय की सरलता है, पर संयम हृदय की शुद्धता है।।

DP Exports is leading Indian firm specializing in import, export and manufacture of diamonds and jewellery. We offer a wide range of rough diamonds, along with a specialization in the field of manufacturing polished diamonds and jewellery.

timeless jewels
unmatched quality
flawless craftsmanship

ACHARYA SRI KAILASSAGARSURI GYANMANDIR
SRI MAHAVIR JAIN ARADHANA KENDRA
Koba, Gandhinagar-382 009
Phone : (079) 23276252, 23276204-0

Dharamchand Paraschand Exports

1301, Panchratna, Opera House, Mumbai - 400 004. India.
t: +91 22 2363 0320 / +91 22 4018 5000
f: +91 22 2363 1982 email : dpe90@hotmail.com

।। महावीराया नमः ।।

जय गुरु हस्ती

जय गुरु हीरा जय गुरु मान

जिस दिन श्रद्धा जग जायेगी, अनमोल-दुर्लभ परम अंग रूप मानव जीवन को समर्पण करते देर नहीं लगेगी। श्रद्धा है तो प्राण अर्पण भारी नहीं लगेगा।

-आचार्य श्री हीरा

With Best Compliments From :

S. .D. GEMS & SURBHI DIAMONDS

Prakash Chand Daga

Virendra Kumar Daga (Sonu Daga)

202, Ratna Deep, Behind Panchratna, 78- J.S.S. Road, Mumbai- 400 004
Ph. : (O) 022-23684091, 23666799 (R) 022-28724429
Fax : 022-40042015 Mobile : 098200-30872
E-mail : sdgems@hotmail.com

Jai Guru Heera *Jai Guru Hasti* *Jai Guru Maan*

व्यसनी से उसी प्रकार बचना चाहिये, जिस प्रकार छूत के रोगी से बचा जाता है।

- आचार्य श्री हीरा

With Best Compliments from :

Basant Jain & Associates, Chartered Accountants
BKJ & Associates, Chartered Accountants
BKJ Consulting Private Limited
Megha Properties Private Limited
Ambition Properties Private Limited

601, Dalamal Chambers, New Marine Lines, Mumbai-400020

बसंत के. जैन

अध्यक्ष : श्री जैन रत्न युवक परिषद, मुम्बई
ट्रस्टी : गजेन्द्र निधि ट्रस्ट

Tel. : (O) 22018793, 22018794 (R) 28810702

जिनवाणी *हिन्दी-मासिक*

卐 **संरक्षक**
अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ
घोड़ों का चौक, जोधपुर (राज.), फोन-2636763

卐 **संस्थापक**
श्री जैन रत्न विद्यालय, भोपालगढ़

卐 **प्रकाशक**
विनयचन्द डागा, मंत्री-सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल
दुकान नं. 182-183 के ऊपर, बापू बाजार,
जयपुर-302003(राज.)
फोन-0141-2575997, फैक्स-0141-2570753

卐 **प्रधान सम्पादक**
प्रो. (डॉ.) धर्मचन्द जैन
सामायिक-स्वाध्याय भवन, प्लॉट नं. 2,
नेहरू पार्क, जोधपुर-342003 (राज.)
फोन : 0291-2626279
E-mail : jinvani@yahoo.co.in
Website: www.jinvani.net

卐 **सह-सम्पादक**
नौरतन मेहता, जोधपुर
डॉ. श्वेता जैन, जोधपुर

卐 **भारत सरकार द्वारा प्रदत्त**
रजिस्ट्रेशन नं. 3653/57
डाक पंजीयन सं.-RJ/JPC/M-21/2012-14
ISSN 2249-2011

परस्परोपग्रहो जीवानाम्

इड्ढी जुई जसो वण्णो,
आउं सुहमणुत्तरं।
भुज्जो जत्थ मणुस्सेसु,
तत्थ से उववज्जई।।
-उत्तराध्ययन सूत्र, 7.27

ऋद्धि कान्ति यश उच्चवर्ण,
आयुष्य सौख्य भी श्रेष्ठ जहाँ।
वैसे कुलों में च्युत हो स्वर्ग से,
लेते फिर वे जन्म वहाँ।।

जून, 2014
वीर निर्वाण संवत्, 2540
ज्येष्ठ, 2071

वर्ष 72 अंक 6

सदस्यता शुल्क

त्रिवार्षिक : 250 रु.	स्तम्भ सदस्यता : 21000/-
आजीवन देश में : 1000 रु.	संरक्षक सदस्यता : 11000/-
आजीवन विदेश में : 12500 रु.	साहित्य आजीवन सदस्यता- 4000/-

एक प्रति का मूल्य : 10 रु.

शुल्क/साभार नकद राशि 'जिनवाणी' बैंक खाता संख्या SBBJ 51026632986
IFSC No. SBBJ 0010843 में जमा कराकर जमापर्ची (काउन्टर-प्रति) अथवा ड्राफ्ट भेजने का पता
'जिनवाणी', दुकान नं. 182 के ऊपर, बापू बाजार, जयपुर-302003 (राज.)
फोन नं.0141-2575997, 2571163, फैक्स : 0141-2570753, E-mail:sgpmandal@yahoo.in

मुद्रक : दी डायमण्ड प्रिंटिंग प्रेस, मोतीसिंह भोमियों का रास्ता, जयपुर, फोन- 0141-2562929

नोट- यह आवश्यक नहीं कि लेखकों के विचारों से सम्पादक या मण्डल की सहमति हो।

विषयानुक्रम

सम्पादकीय-	वीतरागता	-डॉ. धर्मचन्द जैन	7
अमृत-चिन्तन-	आगम-वाणी	-संकलित	12
	वाग्वैभव (26)	-आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी	15
विचार-वारिधि-	ब्रह्मचर्य	-आचार्यप्रवर श्री हस्तीमल जी	14
प्रवचन-	ज्ञान-साधना के तीन साधन	-आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी	16
तत्त्व-बोध-	साधुओं को सुविधाभोगी न बनाना दायित्व है श्रावक का	-श्री उदयमुनिजी	22
	संयम जीवन की जीवन्तता	-आचार्यश्री जयघोषसूरीश्वरजी	48
अध्यात्म-	विषय सुख और आध्यात्मिक सुख : एक तुलना	-श्री कन्हैयालाल लोढ़ा	25
अंग्रेजी-स्तम्भ-	**Advocacy of Intercultural Faith in Jain's Prism**	*-Dr Samani Shashi Prajñā*	31
शोधालेख -	जैन आगम-साहित्य में अहिंसा हेतु उपस्थापित युक्तियाँ	-डॉ. धर्मचन्द जैन	37
	चतुर्विध संघ और प्रजातान्त्रिक मूल्य	-डॉ. श्वेता जैन	50
	जैन-बौद्ध परम्परा में आध्यात्मिक विकास की अवस्थाएँ	-डॉ. दीपा जैन	53
धारावाहिक-	लग्न की वेला (4)	-आचार्य श्री उमेशमुनि जी 'अणु'	61
नारी-स्तम्भ -	आनन्द का अखण्ड स्रोत- मौन	-श्रीमती अंशु संजय सुराणा	67
युवा-स्तम्भ -	शाकाहारी जैन समाज पर उठते सवाल	-डॉ. दिलीप धींग	71
स्वास्थ्य-विज्ञान -	स्वास्थ्य का मूलाधार : अन्तःस्रावी ग्रन्थियाँ	-डॉ. चंचलमल चोरडिया	76
बाल-स्तम्भ -	चोटी की कीमत	-डॉ. गिरिराजशरण अग्रवाल	86
कविता/गीत-	जीवन-बोध क्षणिकाएँ	-श्रद्धेय श्री यशवन्तमुनि जी	24
	परमेष्ठी वंदना	-मधुरव्याख्यानी श्री गौतममुनिजी	52
	हीरा गुरुवर के चरणों में	-श्री योगेशबाबू जैन	60
	जिनवाणी का पान	-श्रीमती मीमा चौधरी	66
	लघु कविताएँ	-डॉ. रमेश 'मयंक'	70
	सृजन करें ऐसे सुमन	-श्री देवेन्द्रनाथ मोदी	75
चिन्तन-	मैं किस संप्रदाय के भक्तों से मिलूँ	-कवि श्री प्रकाश नागौरी	74
	अनमोल चिंतनसूत्र	-मधुरव्याख्यानी श्री गौतम मुनि जी	117
साहित्य-समीक्षा-	नूतन साहित्य	-डॉ. श्वेता जैन	89
रचना-पुरस्कार-	जिनवाणी श्रेष्ठ रचना पुरस्कार		91
समाचार विविधा-	समाचार-संकलन	-संकलित	94
	साभार-प्राप्ति-स्वीकार	-संकलित	118

सम्पादकीय

वीतरागता

❖ डॉ. धर्मचन्द जैन

जिसका राग नष्ट हो गया है (नष्टो रागो यस्य सः) अथवा जो राग रहित हो गया है (वीतोऽपगतो रागो यस्य सः) उसे वीतराग कहा जाता है। जो वीतराग होता है वह वीतद्वेष भी होता है, क्योंकि जो राग को जीत लेता है वह द्वेष को भी जीत लेता है। वह सम्पूर्ण मोह कर्म से रहित हो जाता है। इसलिए उसे वीतमोह भी कहा जा सकता है। किन्तु राग की प्रधानता के कारण 'वीतराग' शब्द में रागादि सभी दोषों के अभाव का बोध हो जाता है। राग का पूर्ण नाश न होने पर भी जो राग-विजय की साधना में सन्नद्ध है वह भी तत्क्षण राग रहित होने से किसी अपेक्षा से वीतराग कहा जा सकता है। उत्तराध्ययन सूत्र में वीतराग का यह स्वरूप अत्यन्त सरल शब्दों में इस प्रकार प्रतिपादित किया गया है-

चक्खुस्स रूवं गहणं वयन्ति, तं रागहेउं तु मणुन्नमाहु।
तं दोसहेउं अमणुन्नमाहु, समो य जो तेसु स वीयरागो।।

-उत्तराध्ययनसूत्र, 32.7

चक्षु का ग्राह्य विषय रूप है। वह यदि मनोज्ञ (प्रिय) होता है तो राग का हेतु बनता है तथा अमनोज्ञ (अप्रिय) होता है तो द्वेष का हेतु बनता है। जो साधक राग-द्वेष न कर विषय के प्रति सम रहता है तो उसे वीतराग कहा जाता है।

हमें पाँच इन्द्रियाँ और मन प्राप्त हैं। इनके अपने विषय हैं। स्पर्शनेन्द्रिय का विषय स्पर्श, रसनेन्द्रिय का विषय रस, घ्राणेन्द्रिय का विषय गंध, चक्षुइन्द्रिय का विषय रूप, श्रोत्रेन्द्रिय का विषय शब्द तथा मन का विषय भाव है। मनुष्य को अपनी रुचि के अनुसार इन विषयों में मनोज्ञता एवं अमनोज्ञता की प्रतीति होती है। मन को जो अच्छा लगता है उसे मनोज्ञ तथा मन को अच्छा न लगने वाले को अमनोज्ञ कहा जाता है।

जैन दर्शन में 'वीतराग' शब्द का प्रयोग राग-द्वेष आदि से रहित साधक के लिए किया जाता है। प्रायः यह मान्यता है कि ग्यारहवें उपशान्तमोहनीय से लेकर चौदहवें अयोगिकेवली गुणस्थान में वीतरागता प्रकट होती है। इनमें ग्यारहवें गुणस्थान की वीतरागता मोहकर्म का उपशम होने से प्रकट होती है तथा शेष तीन गुणस्थानों की वीतरागता मोहकर्म के क्षय (सम्पूर्ण नाश) से प्रकट होती है। उपशान्त मोह गुणस्थान में प्रकट होने वाली वीतरागता अस्थायी होती है। क्योंकि इस गुणस्थान का साधक पुनः सराग हो जाता है। किन्तु बारहवें क्षीणमोह गुणस्थान में प्रकट होने वाली वीतरागता सदा के लिए हो जाती है।

वीतराग साधक समता की प्रतिमूर्ति होता है। वह सुखद प्रतीत होने वाले रूपादि विषयों एवं सम्मानादि भावों के प्रति न राग करता है और न दुःखद प्रतीत होने वाले विषयों एवं अपमानादि के प्रति द्वेष करता है। वह समतापूर्वक दोनों स्थितियों को मात्र देखता है। वह न अनुकूलता में सुखी होता है और न प्रतिकूलता में दुःखी। जो सुखद कामभोगों के प्रति राग करता है वह अपनी समता भंग करता है तथा दुःखद परिस्थितियों के प्रति द्वेष करता है अथवा उनसे दुःखी हो जाता है वह भी अपनी समता भंग करता है। समता भंग होने पर वह मोह से विमूढ़ हो जाता है। ऐसा पुरुष सदैव दुःख प्राप्त करता रहता है। वीतराग पुरुष दुःखों से रहित हो जाता है। क्योंकि दुःख के मूल कारण तो राग और द्वेष हैं। जो राग-द्वेष से रहित है वह दुःखों से भी रहित है।

उत्तराध्ययनसूत्र में कहा गया है कि ऐन्द्रियक विषयों के प्रति तीव्र राग करने वाले का तत्काल विनाश हो जाता है तथा द्वेष करने वाले को दुःखपरम्परा का फल भोगना होता है। (उतराध्ययन सूत्र 32.24-25 आदि) अतः राग एवं द्वेष दोनों त्याज्य हैं। कुछ लोग कहते हैं कि हमें द्वेष का तो पता चल जाता है, किन्तु राग का पता भी नहीं चलता है। उनका कथन सही है, क्योंकि राग को जानने के लिए अधिक समता एवं अभ्यास की आवश्यकता होती है।

साधना का प्रमुख लक्ष्य वीतरागता की प्राप्ति होता है, क्योंकि वीतरागता प्राप्त होने पर दुःख परम्परा का विच्छेद हो जाता है। वीतरागता की प्राप्ति राग-द्वेष अथवा क्रोधादि कषायों के त्याग से होती है। कहा गया है-**कसायपच्चक्खाणेणं जीवे किं जणयइ? कसाय-पच्चक्खाणेणं वीयरागभावं जणयइ। वीयरागभावपडिवन्ने वि य णं जीवे समसुहदुक्खे भवइ।** कषायों के त्याग से जीव वीतरागभाव को उत्पन्न करता है। वीतरागभाव प्राप्त होने पर जीव सुख-दुःख की स्थितियों में सम हो जाता है। उसे न सुख की स्थिति प्रभावित करती है और न दुःख की।

वीतरागता साध्य भी है और साधन भी। पूर्ण वीतरागता साध्य है तथा उसकी कुछ क्षणों के लिए होने वाली अनुभूति साधन है। साधनारूप वीतरागता की पुष्टि उत्तराध्ययन सूत्र के 29 वें अध्ययन से होती है। वहाँ गौतम स्वामी के द्वारा भगवान महावीर से प्रश्न किया गया- हे भगवन्! वीतरागता से क्या प्राप्त होता है? भगवान् ने उत्तर में फरमाया-''**वीयरागयाए णं नेहाणुबंधणाणि तण्हाणुबंधणाणि य वोच्छिंदइ मणुण्णामणुण्णेसु सद्दफरिस-रसरूवगंधेसु चेव विरज्जइ।**'' अर्थात् वीतरागता से जीव राग (स्नेह) के अनुबंधनों एवं तृष्णा के अनुबंधनों को काट देता है तथा मनोज्ञ एवं अमनोज्ञ शब्द, स्पर्श, रस, रूप एवं गंध से विरक्त हो जाता है। इस साधनारूप वीतरागता को समता भी कहा जा सकता है। समता में जो स्वाभाविक आनन्द की प्राप्ति होती है वह विषमचित्त में कदापि संभव नहीं। समता में शान्ति, स्वाधीनता एवं प्रशम सुख का अनुभव होता है। विषमता में विकारों की अग्नि धधकती रहती है जो मनुष्य के विवेक का नाश करती है। समता में विवेक जाग्रत होता है, विषमता में नहीं।

साध्य रूप पूर्ण वीतरागता की साधना सम्यग्ज्ञान (प्रज्ञा) एवं समता से ही सधती है। सम्यग्ज्ञान जहाँ विषय विकारों के उत्पन्न होने के कारणों से व्यक्ति को सावधान बनाता है वहाँ समता के माध्यम से व्यक्ति उन विकारों पर विजय प्राप्त करता है। जब साधक समता में रहता है तो वह राग-द्वेष की परिणति से बच सकता है। साधना का यही प्रारम्भ बिन्दु है। प्रायः हम इतने प्रमाद में जीते हैं कि हमें यह बोध ही नहीं होता कि राग-द्वेष, काम-क्रोध आदि विकार कब हमारे चित्त को आक्रांत कर देते हैं। प्रज्ञापूर्वक समता की साधना में सजग रहने पर ही हमें इन विकारों के उत्पन्न होने का बोध होता है तथा उस साधना के माध्यम से ही इन विकारों से बचा भी जा सकता है।

उत्तराध्ययन सूत्र के 32 वें अध्ययन में पाँच इन्द्रियों एवं मन के विषयों के प्रति समता में रहने का जो संदेश दिया गया है वह अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। वीतरागता की साधना में इन्द्रियों की प्रवृत्ति पर दृष्टिपात करना आवयक है। इन्द्रियों के साथ मन का घनिष्ठ सम्बन्ध है। मन एवं इन्द्रियों के साथ आत्मा का एवं कर्म संस्कारों का घनिष्ठ सम्बन्ध है। अतः जब-जब रूप, रस, गंध, स्पर्श और शब्द को इन्द्रियाँ ग्रहण करती हैं तब-तब ये विषय मनोज्ञ (प्रिय) होने पर व्यक्ति में राग उत्पत्ति के निमित्त बनते हैं तथा जब-जब ये विषय अमनोज्ञ (अप्रिय) होते हैं तब-तब द्वेष की उत्पत्ति में कारण बनते हैं। इसलिए वीतरागता की साधना में संलग्न साधक को प्रारम्भ में यह शिक्षा दी जाती है कि वह इन्द्रियों के तीव्र उत्तेजक विषयों से दूर रहे। विषयों में यद्यपि निमित्त कारणता तो होती है, किन्तु उपादान कारण व्यक्ति स्वयं होता है। वह विषयों से प्रभावित हो, या न हो, यह उस साधक पर निर्भर करता है। वास्तव में विषय व्यक्ति को नहीं बांधते, व्यक्ति स्वयं अपने को विषयों से बंधा हुआ अनुभव करता है। अध्यात्मसार में कहा गया है-

अज्ञानाद् विषयासक्तो बध्यते विषयैस्तु न।
ज्ञानाद् विमुच्यते चात्मा, न तु शास्त्रादिपुद्गलात्।।

अज्ञान के कारण विषयों में आसक्त जीव बन्धन को प्राप्त होता है। विषयों के द्वारा उसे बाँधा नहीं जाता। ज्ञान होने पर वह विषयों के प्रति आसक्ति को तोड़कर बंधन मुक्त हो जाता है। विषयों से प्रतीत होने वाला सुख व्यक्ति को विषयों के प्रति आकर्षित करता है। इन्द्रियों के विषय न अपने आपमें अच्छे होते हैं और न बुरे। यह मानव की रुचि पर निर्भर करता है कि उसे क्या अच्छा लगता है और क्या बुरा। उसके लिए वही वस्तु मधुर है जिसका मन उसमें लगा हुआ है। यदि चित्त में विषयों के प्रति राग एवं द्वेष उत्पन्न न हों तो विषय दुःख या सुख के कारण प्रतीत नहीं हो सकते। उत्तराध्ययन सूत्र में कहा गया है-

ण कामभोगा समयं उवेंति, ण यावि भोगा विगइं उवेंति।
जे तप्पओसी य परिग्गही य, सो तेसु मोहा विगइं उवेइ।।

-उत्तराध्ययन सूत्र, 32.101

न कामभोग समता पैदा करते हैं, न विकृति उत्पन्न करते हैं। जो उनके प्रति (भोग सामग्री के प्रति) द्वेष करता है एवं परिग्रह(राग, आसक्ति) करता है, वह उनमें मोह के कारण विकृति प्राप्त करता है। इसी तथ्य को भिन्न प्रकार से भी कहा गया है-

विरज्जमाणस्स य इंदियत्था, सद्दाइया तावइयप्पगारा।
ण तस्स सव्वेवि मणुण्णयं वा, णिव्वत्तयंति अमणुण्णयं वा।।

-उत्तराध्ययन सूत्र, 32.106

इन्द्रियों के शब्दादि विषय विरक्त (वीतराग) होते हुए साधक के लिए मनोज्ञता एवं अमनोज्ञता उत्पन्न नहीं करते।

रूपादि विषयों से विरक्त मनुष्य संसार में रहता हुआ भी दुःख-परम्परा से उसी प्रकार लिप्त नहीं होता, जिस प्रकार जल में रहता हुआ भी कमल-पत्र जल से लिप्त नहीं होता। इस प्रकार इन्द्रिय एवं मन के जो विषय रागी मनुष्य के दुःख में कारण होते हैं वे वीतराग मनुष्य में किंचित् भी दुःख उत्पन्न नहीं करते। दुःख कामभोग की सामग्री से उत्पन्न नहीं होता, अपितु उनमें रही गृद्धता (आसक्ति) से होता है। कहा गया है- **कामाणुगिद्धिप्पभवं खु दुक्खं** (उत्तराध्ययन सूत्र, 32.19)। काम भोगों के प्रति आसक्ति से दुःख उत्पन्न होता है। दुःख की इस परम्परा को तोड़ने के लिए विषयों के प्रति आसक्ति अथवा रागद्वेष की परम्परा को तोड़ना होगा। इसे तोड़ने के लिए वीतराग अथवा समता की साधना उपयोगी है। आचारांग सूत्र हो अथवा सूत्रकृतांग, उत्तराध्ययन सूत्र हो अथवा भगवद् गीता, सर्वत्र समता की महिमा गायी गई है। एक जैन श्रमण जीवन-पर्यन्त समता की साधना करने के लिए साधु जीवन अंगीकार करता है। एक श्रावक समता की साधना के लिए नियमित रूप से सामायिक का अभ्यास करता है। जीवन भर साधना कर लेने पर भी मन को समता में रखना कठिन ही प्रतीत होता है। क्योंकि पूर्व संस्कारों के कारण चित्त में राग-द्वेष आदि विकार उदित होते रहते हैं। साधक सावधान न हो तो वह विकारों में बहने लगता है। फिर वह विकारों के संस्कारों को दृढ़ करता जाता है और उसे कषाय के वे संस्कार दुर्भेद्य प्रतीत होते हैं।

दुर्भेद्य संस्कारों को तोड़ने की प्रक्रिया आगमों में निरूपित है, जिसे जीवन में अपनाने की आवश्यकता है। जो उपाय आगम में बताये गये हैं उनमें पहला उपाय इन्द्रिय निग्रह है। अपनी इन्द्रियाँ यदि विषयों के प्रति आकृष्ट होती हैं तो उन्हें प्रज्ञापूर्वक निगृहीत कर लेना चाहिए। इन्द्रिय-निग्रह के साथ मनोनिग्रह भी आवश्यक है। बल्कि यूँ कहा जा सकता है कि जो साधक मनोनिग्रह करने में सक्षम होता है वह इन्द्रियनिग्रह आसानी से कर सकता है। दूसरा उपाय यह है कि इन्द्रियों के द्वारा विषयों का ज्ञान करते समय यदि विषयों के प्रति राग-द्वेष उत्पन्न होते हैं तो सजगतापूर्वक समता का अभ्यास किया जाए एवं विषयों के प्रिय लगने पर उनके प्रति राग तथा

अप्रिय लगने पर उनके प्रति द्वेष उत्पन्न न किया जाए। यह समता ध्यान-साधना के माध्यम से सधती है। ध्यान-साधना का अभ्यास इसमें उपयोगी है। अनशनादि बाह्य तप एवं प्रायश्चित्त आदि आभ्यन्तर तप भी कर्म-संस्कारों को क्षीण करते हैं, कर्मों की स्थिति एवं अनुभाग को कम करते हैं, जिससे समता की साधना में सरलता का अनुभव होता है। उत्तराध्ययन सूत्र के 32 वें अध्ययन में इसी साधना पर बल दिया गया है। जो साधक विषयों के समक्ष आने पर राग-द्वेष उत्पन्न न करने की साधना में प्रवीण हो जाता है वह मान-सम्मान, हानि-लाभ, निन्दा-प्रशंसा आदि के प्रसंगों में भी सम रहकर वीतरागता की साधना करने में समर्थ होता है। कभी-कभी साधक के समक्ष अनेक उपसर्ग उत्पन्न होते हैं जो अत्यन्त कष्टकारी हो सकते हैं, फिर भी समता का साधक उनमें अपने को अविचलित रख कर सदैव प्रसन्नता का अनुभव करता है। समता की साधना ही पूर्ण वीतरागता तक पहुँचाती है।

समता का साधक प्रशमसुख का अनुभव करता है। कषायों के उपशान्त होने से अनुभूत सुख के साथ उसे शान्ति एवं शक्ति की अनुभूति होती है। समता की साधना समस्त विकारों पर विजय प्राप्त कराने में समर्थ होती है। अध्यात्मसार ग्रंथ में कहा गया है-

मोहाच्छादितनेत्राणामात्मरूपमपश्यताम्।
दिव्यांजनशलाकेव समता दोषनाशकृत्।।

-अध्यात्मसार, 253

मोह से आच्छादित नेत्रों वाले तथा आत्मस्वरूप के प्रति असजग साधक के दोषों का नाश करने में समता दिव्य अंजन की शलाका की भांति कारगर है। समस्त दोषों का नाश करने में समता की साधना रामबाण औषधि है। क्रोध, मान, माया, लोभ आदि दोषों का नाश भी इसी समता की साधना से संभव है। जो समता में रहता है उसमें आत्मशक्ति का विकास होता जाता है। फिर उसे अपने विकार रूपी आंतरिक शत्रुओं पर विजय प्राप्त करने में पराजय का मुख नहीं देखना पड़ता।

समता की साधना वीतरागता की साधना है। यह अहिंसा एवं अपरिग्रह की भी साधना है। अहिंसा का पूर्ण स्वरूप समता की साधना से ही प्रकट होता है। तन-मन एवं वचन के स्तर पर अहिंसा का पूर्ण पालन समता का साधक ही कर पाता है। आचार्य अमृतचन्द्र ने तो रागादि के अप्रादुर्भाव को अहिंसा कहा है। अपरिग्रह भी समता की साधना से ही पूर्णता को प्राप्त होता है। वास्तव में जो साधक शब्द आदि विषयों के प्रति आसक्त नहीं होता वही अपरिग्रही कहलाता है। जो इन विषयों के प्रति लालायित रहता है वह लोभ एवं परिग्रह में फंसा रहता है। अतः विषयों से विरक्ति रूप निर्वेद एवं उनकी प्रियता तथा अप्रियता में सम रहना ही वीतरागता की प्राप्ति का महान् सूत्र है।

★

अमृत-चिन्तन

आगम-वाणी

वित्तं पसवो य णातयो, तं बाले सरणं ति मण्णती।
एते मम तेसु वो अहं, नो ताणं सरणं च विज्जइ।।

-सूत्रकृतांगसूत्र, 1.2.3.16

अर्थ- धन-सम्पत्ति, पशु-सम्पदा और ज्ञातिजन को अज्ञानी जीव शरण मानता है। वह समझता है "ये मेरे हैं तथा मैं उनका हूँ।" किन्तु वास्तव में वे कोई त्राणकारी और शरणदाता नहीं होते।

विवेचन- मनुष्य का जिन सजीव एवं निर्जीव पदार्थों से सम्बन्ध रहता है उनसे उसे कुछ आशाएँ जाग जाती हैं। वह उन वस्तुओं से सुख, समृद्धि एवं अनुकूलता की अभिलाषा रखता है। वह इनका अपनी सुरक्षा के लिए अधिकाधिक संग्रह या परिग्रह करने लगता है।

आचारांगसूत्र में इस सत्य तथ्य को बार-बार उद्घाटित किया गया है कि न मैं परिवारजनों का त्राणकर्ता एवं शरणदाता हो सकता हूँ, और न परिवारजन मेरे त्राणकर्ता एवं शरणदाता हो सकते हैं। वहाँ कहा गया है- "**जेहिं वा सद्धिं संवसति ते वा णं णियगा तं पुव्विं पोसेंति, सो वा ते णियगे पच्छा पोसेज्जा, णालं ते तव ताणाए वा सरणाए वा, तुमं पि तेसिं णालं ताणाए वा सरणाए वा।**" (आचारांग, 1.2.1.66) जिनके साथ यह मनुष्य रहता है वे निज जन (परिवारजन) पहले (बाल्यकाल में) पालन-पोषण करते हैं, फिर बड़ा होने पर वह भी अपने परिवारजनों का पालन-पोषण करता है, किन्तु फिर भी वे त्राण करने एवं शरण देने में समर्थ नहीं हैं। तुम भी उनका त्राण करने एवं शरण देने में समर्थ नहीं हो। बाल्यकाल में या किशोरवय में परिवारजन पालन-पोषण करते हैं, किन्तु बच्चों के युवा हो जाने पर वे उनका परिहार करने लगते हैं, बच्चे भी युवा होने पर माता-पिता आदि परिवारजनों का परिहार करने (टालने) लगते हैं। (आचारांग 1.2.1.67) यही नहीं बच्चों के अपने अनुकूल न निकलने पर घर वाले उन्हें भला-बुरा कहने लगते हैं तथा बच्चे भी बड़े होकर माता-पिता आदि को अपने अनुकूल व्यवहार न करने पर उन्हें भला-बुरा कहने लगते हैं। (आचारांग 1.2.1.64 एवं 1.2.1.81) इसलिए यह सच है कि न घर वाले हमारा त्राण कर सकते हैं, न शरण दे सकते हैं तथा न ही हम घर वालों का त्राण कर सकते हैं, न उन्हें शरण दे सकते हैं। उत्तराध्ययन सूत्र के चित्त-सम्भूतीय नामक 13 वें अध्ययन में कहा गया है-

न तस्स दुक्खं विभयंति नाइओ, न मित्तवग्गा, न सुया, न बंधवा।
एक्को सयं पच्चणुहोइ दुक्खं, कत्तारमेव अणुजाइ कम्मं।।

चित्तमुनि ब्रह्मदत्त चक्रवर्ती को सम्बोधित करते हुए कहते हैं कि जब किसी पर दुःख आ पड़ता है तो ज्ञातिजन, मित्रवर्ग, पुत्र और बन्धुजन उसके दुःख को बँटा नहीं सकते हैं। अकेला जीव अपने दुःख को भोगता है, क्योंकि किये गये कर्म कर्ता का अनुसरण करते हैं।

आचारांग एवं उत्तराध्ययन सूत्र के उपर्युक्त वचन हमें तीन तथ्यों की ओर सावधान करते हैं- 1. परिवारजनों अथवा सम्पर्क में आने वाले लोगों के प्रति हमारी आसक्ति नहीं होनी चाहिए, न ही उनसे अधिक आशाएँ एवं अपेक्षाएँ होनी चाहिए। 2. अपने कृत कर्मों का फल स्वयं को भोगना होता है। रोग, दुःख आदि स्वयं को भोगने होते हैं। दूसरा सांत्वना दे सकता है, किन्तु स्वयं का दुःख स्वयं को भोगना होता है। 3. अपने को यह अहंकार नहीं होना चाहिए कि मैं सबका शरणदाता, त्राणकर्त्ता अथवा नाथ हो सकता हूँ। हाँ, एक सीमा तक '**परस्परोपग्रहो जीवानाम्**' सूत्र (तत्त्वार्थसूत्र, 5.21) के अनुसार मैं अन्य जीवों का सहयोगी हो सकता हूँ, किन्तु कृत कर्मों का फलभोग तो व्यक्ति को स्वयं करना होता है।

''परस्परोपग्रहो जीवानाम्'' का अर्थ है- जीव एक दूसरे के सहयोगी होते हैं। यहाँ प्रश्न उत्पन्न होता है कि जब जीव एक दूसरे के उपकारक एवं सहयोगी होते हैं तो उन्हें अन्य जीवों का रक्षक या शरणदाता क्यों न स्वीकार किया जाए? यहाँ पर कहना होगा कि एक सीमा तक कोई निमित्त रूप में सहयोगी हो सकता है, किन्तु स्वयं के सुधार का उपादान कारण व्यक्ति स्वयं होता है। एक सीमा तक बाह्य पदार्थ एवं व्यक्ति सहयोगी होते हैं, किन्तु रोग, दुर्घटना या मृत्यु का जो दुःख होता है उसमें कष्ट व्यक्ति को स्वयं भोगना होता है, कोई उस कष्ट को अपने पर नहीं ले सकता। अनाथीमुनि इसके एक उदाहरण हैं, जिन्होंने अक्षि पीड़ा को भोगते हुए यह अनुभव किया कि कोई इस पीड़ा से उन्हें बचाने में समर्थ नहीं है। यदि व्यक्ति के कर्मफल का भोग कोई अन्य करने लगे, तो सारी व्यवस्था ही गड़बड़ा जाएगी।

वस्तुतः स्वयं के कृत कर्मों का फल स्वयं को भोगना होता है। इसीलिए कहा गया है कि यह धन-धान्य, पशु सम्पदा या परिवारजन हमारी रक्षा नहीं कर सकते। इन्हें रक्षक मानना भ्रांति है। यदि इन्हें रक्षक मानते रहे तो संसार के दुःख से मुक्त नहीं हुआ जा सकता। कहा गया है- ''अत्त कडे दुक्खे नो पर कडे।'' दुःख आत्म कृत है, पर कृत नहीं। तात्पर्य यह है कि जो संसार को शरणभूत मानकर चलता है, वह आत्यन्तिक रूप से दुःख मुक्त नहीं हो सकता। संसार की शरण को छोड़कर जो आत्मशरण में आता है अथवा अरिहंत, सिद्ध, साधु और धर्म की शरण ग्रहण करता है वह ही दुःख मुक्ति का मार्ग प्राप्त करता है एवं उस पर चल कर संसार से मुक्त हो जाता है। संसार में कोई भी ऐसा शरणदाता नहीं हो सकता कि मैं बुरा करता रहूँ और उसका फल प्राप्त करने से दूसरा मुझे बचाता रहे।**-सम्पादक**

विचार-वारिधि

ब्रह्मचर्य (2)

आचार्य श्री हस्तीमल जी म.सा.

- अल्पायु में मृत्यु का एक कारण अधिक मैथुन एवं आहार-विहार का असंयम भी है।
- कुशील सेवन करने वाले, वीर्य-हानि के साथ असंख्य कीटाणुओं के नाश रूप हिंसा के भी भागी बनते हैं। ब्रह्मचर्य की पालना न करने वालों को प्रकृति के घर से सजा होती है और इसी के कारण आज रोगियों की संख्या अधिक हो रही है।
- दुराचारी व्यक्ति आत्म-गुणों को ही नष्ट नहीं करता, वरन् भावी पीढ़ी को बिगाड़ कर समाज के सामने भी गलत उदाहरण प्रस्तुत करता है। अत एव कहा है- "शीलं परं भूषणम्" अर्थात् सोने-चाँदी आदि के आभूषण एवं वस्त्रादि बाह्य सजावट की वस्तुएँ वास्तविक आभूषण नहीं हैं, किन्तु शील ही मानव का परम आभूषण है।
- जिस मनुष्य के मस्तिष्क में काम-सम्बन्धी विचार ही चक्कर काटते रहते हैं, वह पवित्र और उत्कृष्ट विचारों से शून्य हो जाता है। उसका जीवन वासना की आग में झुलसता रहता है। व्रत, नियम, जप, तप, ध्यान, स्वाध्याय और संयम आदि शुभ क्रियाएँ उससे नहीं हो सकतीं। उसका दिमाग सदैव गन्दे विचारों में उलझा रहता है। पतित भावनाओं के कारण दिव्य भावनाएँ पास भी नहीं फटकने पातीं। अतः जो पुरुष साधना के मार्ग पर चलने का अभिलाषी हो, उसे अपनी कामवासना को जीतने का सर्वप्रथम प्रयास करना चाहिए।
- ब्रह्मचर्य के विषय में अनेक प्रकार के भ्रम फैले हुए हैं और फैलाये जा रहे हैं। एक भ्रम यह है कि कामवासना अजेय है, लाख प्रयत्न करने पर भी उसे जीता नहीं जा सकता। ऐसा कहने वाले लोगों को संयम-साधना का अनुभव नहीं है। जो विषय-भोग के कीड़े बने हुए हैं, वे ही इस प्रकार की बातें कहकर जनता को अधःपतन की ओर ले जाने का प्रयत्न करते हैं। 'स्वयं नष्टः परान्नाशयति'- जो स्वयं नष्ट है वह दूसरों को भी नष्ट करने की कोशिश करता है। ऐसे लोग स्थूलिभद्र जैसे महापुरुषों के आदर्श को नहीं जानते हैं, न जानना ही चाहते हैं। वे अपनी दुर्बलता को छिपाने का जघन्य प्रयास करते हैं। वास्तविकता यह है कि ब्रह्मचर्य आत्मा का स्वभाव है और मैथुन विभाव या पर-भाव है। स्वभाव में प्रवृत्ति करना न अस्वाभाविक है और न असंभव ही। भारतीय संस्कृति के अग्रदूतों ने, चाहे वे किसी धर्म व सम्प्रदाय के अनुयायी रहे हों, ब्रह्मचर्य को साधना का अनिवार्य अंग माना है।

-'नमो पुरिसवरगंधहत्थीणं' ग्रन्थ से साभार

अमृत-चिन्तन

वाग्वैभव (26)

आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा.

- मांसाहार से स्वयं बचें और घर-परिवार को बचाएँ।
- समाज व राष्ट्र में मांसाहार के विरोध में प्रबल आवाज़ उठाएँ। मरने वाले जानवरों को अपनी अर्जित कमाई से बचाने के लिए सक्रिय बनें।
- समस्त सांसारिक दुःखों का मूल कारण है- असंयम।
- असंयमी मनुष्य की सर्वत्र अप्रतिष्ठा है, क्योंकि वह अपनी मर्यादा छोड़ रहा है।
- संयमी और चरित्रवान बनिए, आत्मानुशासन में रहना सीखिये।
- जीवन को सुन्दर जीने के लिए मन-वचन-कर्म में संयम रूपी कपाट लगाइये।
- संयम और तप का प्रताप ही ऐसा है कि वह इस तन के कण-कण को लब्धियुक्त बना देता है।
- संयमी सर्वत्र विश्वसनीय हो जाता है।
- अधिकार पाकर भी कोई व्यक्ति यदि किसी का उपकार नहीं करता तो उसके 'अधिकार' में आगे लगा 'अ' लुप्त हो जाता है और 'क' डबल हो जाता है।
- कुल व समाज की मर्यादाओं को बनाए रखिए। छोड़ दीजिये यह कच्ची-पक्की सगाई, मुँह बोलाई आदि समाज को कमजोर करने वाली रस्में।
- जीवन की कार में संयम का ब्रेक नहीं तो जीवन बेकार है।
- अपने हृदय रूपी पात्र से विकारों के कचरे को दूर करिये और संयम को अपनाइये।
- तप करने का प्रमुख उद्देश्य है- कर्मों की निर्जरा।
- तप अन्तर की क्षमा, सहनशीलता और धैर्य को बढ़ाने के लिए उपयोगी है।
- आपने अनादि-अनन्त आत्मा का भान किया है, अब तो पापों की आलोचना कर आत्मा को विमल, निर्मल, पवित्र व शुद्ध बनाने का पुरुषार्थ कीजिए।
- व्रत ग्रहण करिये और पापों से हटिये। सन्त नहीं बन सकते तो श्रावक तो बनिये।
- आरम्भ और परिग्रह में उलझा मानव वीतराग वाणी श्रवण नहीं कर पाता है।
- स्वार्थबुद्धि से धर्मस्थान में आना आत्मोत्थान से वंचित रहना है।
- श्रवण करना आसान है, ग्रहण करना मुश्किल है।
- सुनने का सार है- दुःखों का अन्त।
- जड़ के प्रभाव से आत्मा का ज्ञान अज्ञान में बदल जाता है।

-हीरा प्रवचन-पीयूष से संकलित : श्री पी. शिखरमल सुराणा, चेन्नई

प्रवचन

ज्ञान-साधना के तीन साधन

आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी

आचार्यप्रवर पूज्य श्री हीराचन्द्र जी म.सा. द्वारा पीपाड़ सिटी (राज.) में 11 मई 1996 को फरमाए गए इस प्रवचन का आशुलेखन श्री नौरतनमल जी मेहता, जोधपुर द्वारा किया गया है। यह प्रवचन धार्मिक शिविर के समय फरमाया गया था। **-सम्पादक**

जीवन-यापन या जीवन निर्माण

एक वे जीव हैं जो जन्म पाकर जीवन को ज्यों-त्यों कर व्यतीत कर लेते हैं और दूसरे वे जीव हैं जो जन्म पाकर जीवन का निर्माण करते हैं। एक जीवन को बिताते हैं, दूसरे जीवन को बनाते हैं। शब्दों का अन्तर कोई अधिक नहीं है, पर लक्ष्य का जो अन्तर है वह बहुत बड़ा है। जो जीव जीवन बिताते हैं, जैसे-तैसे आयु के दिन पूरे करते हैं, उनका कोई लक्ष्य नहीं होता। वे व्यक्ति अस्थिर एवं चलायमान रहते हैं। वे अनमोल मानव-जीवन को व्यर्थ में खो देते हैं।

जीवन को बनाने वाले जीव आत्मसाधना के मार्ग पर आगे बढ़ते हैं। अपने चिन्तन-मनन से वे शरीर और आत्मा के भेद-विज्ञान की तरफ अपनी अभिरुचि बढ़ाते हैं। निरन्तर व्रत-प्रत्याख्यानों का आलम्बन लेकर धर्म के पथ पर अग्रसर होते हैं। वे संसार में रहते हुए भी संसार से अलिप्त रहते हैं। संसार से विमुख होकर महाव्रतधारी बन जाते हैं। अगारी से अनगारी बनकर साधना के शिखर पर चढ़ जाते हैं। कर्म-निर्जरा करते हुए अंतिम लक्ष्य की प्राप्ति को सहज बना लेते हैं।

जीवन छोटे बच्चे भी बिताते हैं और बड़े बुजुर्ग भी। जीवन पाया है, उम्र पायी है तो एक-एक दिन उसका कम होता ही है। जन्म के साथ ही मरण भी निश्चित है। अतः मरण तक के समय को बिताने का जो ढंग है, उसी का जीवन में महत्त्व है। स्थिति आज अत्यंत शोचनीय है। कई बहुत ही दिग्गज, अनुभवी, अवस्था सम्पन्न व्यक्ति भी यह कहते सुने गए हैं कि- ''घर बैठा टाइम बीते ही नहीं, इण वास्ते दुकान जावाँ।'' वे व्यर्थ में इधर से उधर, उधर से इधर घूमते हैं। कभी ग्राम की हथाई पर जाकर पूरे ग्राम की थाँरी-म्हाँरी करते हैं, कभी कहीं ऐसे स्थल पर जाते हैं जहाँ उनका मनोरंजन हो सके। गप्पे हाँकना तो उनका मुख्य कार्य बन जाता है।

आश्चर्य होता है कि बच्चे और जवान तो ताश, चौपड़, शतरंज आदि खेलते ही हैं

पर श्वेत बाल सिर पर धारण करने वाले भी इनसे नहीं चूकते। कितनी ही बार प्रवचनों में आए, कितनी ही बार जिनवाणी सुनी, पर दृष्टिकोण में अब तक कोई परिवर्तन नहीं आया। जानते हैं शरीर और आत्मा के भेद की बात, जानते हैं त्याग और वैराग्य की महत्ता, समझते हैं आत्म-कल्याण का मार्ग, पर जीवन में मोड़ नहीं आता। तीर्थंकर भगवान महावीर ने प्रथम गणधर गौतम स्वामी को एक अनमोल सूत्र दिया था- ''**समयं गोयम मा पमायए।**'' यह जीवन निर्माण का सूत्र है। पर आज कौन ध्यान दे पाता है इस सूत्र पर।

उम्र में छोटा या पद में छोटा व्यक्ति भी अपने जीवन को उन्नत बना सकता है। कुछ प्राणी छोटे होते हुए भी बहुत बड़े होते हैं। वे बहुत बड़े कार्य को सरलता से कर जाते हैं। वज्र छोटा होता है पर बड़े-से-बड़े पर्वत को चकनाचूर कर देता है। दीपक आकार में कितना लघुकाय होता है, परन्तु घर भर का अंधकार मिटाकर उसे प्रकाश से भर देता है। अमृत की एक बूँद कितनी नन्हीं सी होती है, पर कितना बड़ा कमाल कर दिखाती है। वह न जाने कितने रोगों को नष्ट करने, कितनी कमजोरियों को मिटाने की सामर्थ्य रखती है। मंत्र भी छोटा ही होता है, परन्तु उसका प्रभाव भी बलवान होता है। साँप-बिच्छू का ज़हर तो उससे उतरता ही है, देवताओं के आसन तक हिल जाते हैं। मंत्र में अनन्त शक्ति है।

यह सत्य है कि छोटे ही बड़े बनते हैं। एक विदेशी भारत भ्रमण करते हुए मारवाड़ प्रदेश के एक छोटे से ग्राम में चला गया। उस छोटे ग्राम में बड़ी हवेलियाँ थीं, बड़े-बड़े भवन थे, बड़ा-सा एक तालाब था। विदेशी पर्यटक ने विचार किया-यहाँ इतने बड़े-बड़े भवन आदि हैं तो बड़े लोग भी होंगे। पूछा एक व्यक्ति से- ''क्यों भाई! तुम्हारे इस ग्राम में कोई बड़ा आदमी भी जन्मा या नहीं?'' जिससे प्रश्न पूछा गया-वह था एक चौधरी और हाजिर जवाबी। बोला- ''विदेशी बाबू! अठे तो सगला टाबर ही पैदा हुवे, बड़ो तो आज तक कोई पैदा नहीं हुयो। टाबर ही मोटा हुया और बड़ा बणिया।''

छोटा बड़ा कैसे बनता है? यह जानने, समझने, सीखने की बात है। बड़ा पुरुषार्थ करना पड़ता है, अपने आपको बड़ा मोड़ देना पड़ता है, बड़ा बनने के लिए। यहाँ शिविर में आप, बालक और बालिकाएँ कुछ सीखने, कुछ करने, जीवन को कुछ मोड़ देने आए हैं। आपको जीवन निर्माण के, जीवन में सफलता के, जीवन में बड़ा और महान् बनने के तीन सूत्र दे रहा हूँ। इन तीन सूत्रों पर अमल करेंगे तो बहुत कुछ प्राप्त कर सकेंगे।

जीवन निर्माण का पहला सूत्र : समय का उपयोग

पहला सूत्र है-'समय की कीमत पहचानें।' जो समय को पहचानता है, वही बड़ा पण्डित है। ''*खणं जाणाहि पंडिए*''। हे पण्डित! तुम क्षण को जानो। सही समय पर किया गया कार्य सफलता के नए आयामों पर पहुँचाता है। समय बहुमूल्य है, अनमोल है,

गया हुआ समय वापस आने का नहीं है- यह चिन्तन करते हुए आप समय का जितना सदुपयोग करेंगे उतनी ही सफलता प्राप्त करेंगे, उतने ही महान् बनेंगे। समय की जो कीमत करेगा, समय उसकी कीमत करेगा। जो समय की कीमत नहीं करेगा तो समय भी उसकी तरफ ध्यान नहीं देगा, आँख उठाकर भी नहीं देखेगा। यहाँ तो प्रकृति का सीधा-सा नियम है-"Give and take" इस हाथ दो, उस हाथ लो।

समय जीवन को बिताने के लिए नहीं, बनाने के लिए है। अतः जीवन-निर्माण के लिए समय का पूर्ण उपयोग करना चाहिए। शरीर के लिए जितने भी कार्य हैं, उनमें रुचि लेकर अधिकाधिक समय बिताना ठीक नहीं। जो जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में मिनिट-क्षण-पल का हिसाब रखे, उसकी कीमत गिने और सोचे- यह हो गया तो अब यह करूँ, यह भी हो गया तो आगे के कार्य को कर लूँ, इससे थक गया, अतः कार्य का बदलाव कर दूसरा कार्य प्रारम्भ कर दूँ। शिक्षार्थी के लिए भी यही बात है, इसे याद कर लिया तो उसे याद करना, वह याद हो गया तो अन्य विषय पर ध्यान देना, थक जाए तो प्रश्नोत्तर द्वारा ज्ञान को स्थिरता देना। सब याद हो जाए तो पुनरावर्तन करना।

अनुप्रेक्षा, चिन्तन-मनन भी सीखने के ही पहलू हैं। चिन्तन केवल सीखने के लिए नहीं, चिन्तन तो सीखे हुए को जीवन में उतारने के लिए होता है और वही शिक्षा का सच्चा रूप है। शिविरों में ऐसे भी उदाहरण देखने-सुनने में आए हैं, जहाँ शिविरार्थी एक-एक दिन में 15-15, 16-18 तक सामायिकें करते हैं। ऐसा वे कैसे कर पाते हैं? क्यों करते हैं वे ऐसा? अनेक निजी सुख-सुविधाओं, आराम-विश्राम का त्याग कर इस तरह करने से क्या मिलता है उन्हें? उनमें एक आकांक्षा, एक अभिलाषा जगती है- प्राप्त समय का अधिकतम सदुपयोग करने की। वे अपने जीवन का निर्माण करना चाहते हैं और ऐसा होता भी है। उनका जीवन विकासोन्मुख बनता है।

कुछ ऐसे भी विद्यार्थी होते हैं जो समय की कीमत नहीं पहचानते, अतः वे जब भी अवसर पाते हैं तनिक विश्राम कर लेना चाहते हैं। कभी कक्षा में ही, कभी शिक्षण-कार्य से विमुख हो पीरियड से गायब रहकर तो कभी अन्य कार्यक्रमों के मध्य। उनका मन अपने दोस्तों , नव-साथियों, आगन्तुकों से मिलने का करता है अतः वे शिक्षण पर ध्यान नहीं दे पाते। कुछ गप्पों के बेताज बादशाह होते हैं और वे शिक्षकों की आँख के नीचे ही वार्ताओं के दौर चलाने के अवसर ढूँढ लेते हैं। ऐसे शिक्षार्थी किसी भी सुकार्य में, कार्यक्रमों में आगे नहीं बढ़ पाते।

दूसरा सूत्र : मन की एकाग्रता

जो भी क्रिया या कार्य कर रहे हैं, मन उस ओर एकाग्र रहे तो वह कार्य सम्यक् प्रकार

से सम्पन्न हो सकता है। पढ़ने की क्रिया कर रहे हैं तो कान, आँखें, मन सभी एक ही कार्य पर केन्द्रित करें, तो उसका सुफल अवश्य मिलेगा। भगवान महावीर के प्रथम गणधर श्री गौतम स्वामी ने ध्यान से जो सुना, सब कण्ठस्थ हो गया। मनन-चिन्तन किया तो हृदय के भीतर उतर कर जीवन में झलकने लगा। उनकी तरह एकाग्र मन होकर जो शिक्षार्थी सीखेंगे उनको शिक्षण के प्राचीन सिद्धान्त **'घोचिपूलि'** की भी आवश्यकता नहीं पड़ेगी। ''घो''= घोकना, रटना, कण्ठस्थ करना, ''चि'' अर्थात् चितारना, चिन्तन-मनन करना, ''पू'' अर्थात् शंका होने पर या जिज्ञासा होने पर ज्ञानी-गुरुजनों से पूछकर समाधान प्राप्त करना और ''लि'' अर्थात् जिसे सीख लिया उसे लिख लेना। जहाँ मन की एकाग्रता, चित्त की स्थिरता के साथ शिक्षा ग्रहण की जाए वहाँ रटने, चितारने आदि की सारी झंझटें समाप्त। समय कम, मेहनत कम, पर प्रतिफल अधिक।

आचार्य भगवन्त (श्री हस्तीमल जी म.सा.) फरमाते थे- हर घर में चूल्हा जलता है, खाना बनाया जाता है। हर चूल्हे पर पानी उबाला जाए तो सभी चूल्हों पर रखे बर्तनों से भाप निकलेगी, पर ऐसी सैकड़ों, सहस्रों घरों से निकलने वाली भाप में इंजन को चलाने की शक्ति, समर्थता नहीं होती। क्यों? क्योंकि वह बिखरी हुई भाप है। टनों वजन को खींचने की सामर्थ्य तो एकत्रित भाप में ही होती है।

बचपन में सुनने को मिलता था कि काँच में रूई को जला देने की सामर्थ्य है। पुराने लोग मोतीझरा देखने का काँच लेकर सूर्य की धूप में रूई के ऊपर उसे इस तरह केन्द्रित करते थे कि सूर्य की किरणें उसमें से रूई पर एक-स्थान पर स्थिरता से पड़े, थोड़ी-सी देर में रूई जल उठती थी। वृद्ध आदमी का कम्पित हाथ हो, काँच उस हाथ में हो और हिलता रहे, सूर्य की किरणें काँच से निकलकर एक-स्थान पर एकत्रित न हों तो क्या रूई जल सकेगी? कदापि नहीं।

शिक्षार्थी यदि चंचल हैं, अस्थिर-मन हैं, एकाग्रता नहीं है उनमें, तो अध्यापक, गुरु, संत-सती तो क्या, ब्रह्मा भी उन्हें ज्ञान नहीं दे सकते। ज्ञान उन्हें दिया जा सकता है जो ग्रहण करें, जो ग्रहण ही न करना चाहें, उन्हें दिया हुआ ज्ञान भी व्यर्थ चला जाता है। एकाग्र मन, स्थिर चित्त से अध्ययन करना, समिति से चलना है।

जैनागमों में जहाँ भी तीर्थंकरों के समवसरण लगते हैं वहाँ और वर्तमान में धर्मस्थानकों में प्रवेश के समय, मुख्य द्वार में कदम रखने के साथ, **''निस्सही, निस्सही''** कहने का सिद्धान्त रूप से प्रचलन है। इस शब्दोच्चारण का भाव है- धर्म स्थानक में जा रहे हैं तो सावद्य योगों एवं व्यापारों को द्वार से बाहर ही तिलांजलि दे दो और अन्दर प्रवेश कर एकाग्रमना धार्मिक-प्रवृत्ति करो, जिनवाणी का श्रवण करो एवं गुरु-उपदेशामृत का पान करो।

साधना के क्षेत्र में और अन्यान्य क्षेत्रों में भी सर्वाधिक कठिन कार्य है- मन पर नियंत्रण करना, उसे स्थिर करना, एकाग्र करना। चौदह पूर्व का ज्ञान रखने वालों के लिए भी एकाग्रता कठिन बताई गई है तो आप बच्चे चंचल रहें, अस्थिर रहें तो आश्चर्य क्या? हाँ! आप एकाग्र बनें तो आश्चर्य की बात हो सकती है और यही आश्चर्य आपको कर दिखाना है। आप सैकड़ों की संख्या में हैं, आपमें यदि चार-पाँच शिविरार्थी, ज्ञानार्थी भी एकाग्र बन सकें तो समझ लीजिए शिविर-शिक्षकों का श्रम सार्थक हुआ और आप स्वयं शिविरार्थियों की मेहनत सफल हुई। प्रयत्न कभी व्यर्थ नहीं जाता, पुरुषार्थ तो अपना रंग दिखाता ही है। और कुछ नहीं तो निर्जरा तो होती ही है। आत्म-विकास की भावना से धार्मिक-नैतिक शिक्षा ग्रहण की जा रही है, वीतराग-वाणी सुनाई और सुनी जा रही है। इसमें निर्जरा तो होती ही है।

पठन-पाठन, ज्ञानार्जन, सामायिक, स्वाध्याय, जप-तप, व्रत-प्रत्याख्यान द्वारा आपको शिविर काल में आत्मविशुद्धि की तरफ बढ़ना है। आत्मविशुद्धि के लिए प्रयासरत रहें तो जीवन-निर्माण में किसी पक्ष की, किसी बात की कमी नहीं रह पाएगी। एक शिविरार्थी जितना कुछ इस शिविर से ग्रहण करेगा, उतना ही वह जीवन-निर्माण के संस्कार पाएगा। आपने घर और कुटुम्ब को छोड़ा, आमोद और प्रमोद का त्याग किया, परीषह सहन करके भीषण गर्मी में यहाँ आए, यहाँ रहकर भी परीषह सहन करेंगे, अध्ययन में मेहनत करेंगे पर इतना सब करने के पश्चात् भी मन एकाग्र नहीं कर सके, समय की कीमत नहीं पहचान सके, खाने-पीने-सोने आदि में ही समय बिताया तो आपका आना निष्फल होगा। गाय का दूध दूहना है। उसकी पिछली टाँगे बाँध ली, घुटनों के बल (उकडू) बैठकर बर्तन घुटनों पर रख लिया, दुह रहे हैं गाय को, पर दुग्धधारा बर्तन में नहीं आ रही, वह कहीं अन्यत्र गिर रही है तो बर्तन रीता ही रह जाएगा। ध्यान रहे, यहाँ शिविर में आने के बाद भी आपका अन्तर घट कहीं इसी तरह रीता न रह जाए। एकाग्रता से पढ़ोगे, कार्य करोगे तो घट रीता नहीं रहेगा। यदि मन एकाग्र हो जाए तो जातिस्मरणज्ञान भी हो सकता है।

बच्चों में सामर्थ्य की कमी नहीं होती। आवश्यकता है उस सामर्थ्य को उचित राह में उपयोग करने-करवाने की। शिक्षक यदि पूरा ध्यान दें, पढ़ना-पढ़ाना आदि भले ही कम हो, पर उन्हें एकाग्र बनाने पर बल दें, उन्हें सम्यक् संस्कार दें तो कइयों का कल्याण हो सकता है। कोई ऐसे संस्कार देने वाला चाहिए कि जो काम तलवार नहीं कर सकती, सूई उस कार्य को सफलता से कर लेती है। तलवार तोड़ती है, खंड-खंड करती है, छेदन-भेदन करती है, पर सूई नन्हीं-सी होते हुए टूटों को मिलाती है, जोड़ती है। आप भी छोटे हैं, आपका भी अद्भुत गुण है, जोड़ना, प्रेम से रहना।

तीसरा सूत्र– सुसंगति और अनुशासन

आपके लिए तीन सूत्रों में से दो सूत्र मैंने बताए– समय का सदुपयोग और मन की एकाग्रता। तीसरा जीवन निर्माण का सूत्र है– सुसंगति का लाभ। यह धार्मिक एवं नैतिक शिक्षा शिविर है। इसमें शिविर के माध्यम से उपलब्ध साधनों, संयोगों एवं व्यवस्थाओं का आपको लाभ उठाना है। पारस भी यहीं है और लोहा भी यहीं है, पर स्पर्श–योग से स्वर्ण बनने का कार्य अभी बाकी है। गाँव वाले एवं शिविर संयोजक आपके लिए जितनी बन सके उतनी व्यवस्थाएँ कर रहे हैं, अर्थ वाले अर्थ का उपयोग आपके शिक्षण में कर रहे हैं, कुछ उत्साही व्यक्ति शारीरिक श्रम–सेवा दे रहे हैं। विभिन्न ग्राम–नगरों से आपके शिक्षण हेतु शिक्षक आए हैं। अब इन संयोगों, उपलब्ध साधनों, व्यक्तियों के ज्ञान, आदर्श व्यक्तित्व आदि का स्पर्श पाकर आपको अपने आपको स्वर्ण में परिवर्तित करना है। जरूरत है सभी के पारस्परिक सहयोग की, मिलकर रहने की उत्कट अभिलाषा की। इतने सारे घटक यदि आँख से आँख नहीं मिला सके, शब्द से कानों का सुमेल नहीं कर सके तो जीवन की विशुद्धि एवं आत्म–विकास कैसे बन जाएगा?

परस्पर इस तरह सहयोग करने, मिलकर एकजुट रहने का अन्य नाम ही अनुशासन है। बस–

जो करना सो अच्छा करना।
फिर दुनिया में किससे डरना।।

आप में एकता है, अनुशासन है, पारस्परिक संगति और सहयोग है तो विद्या, ज्ञान, आगमपाठ, तत्त्व पाठ, सूत्र–तत्त्व–अर्थ, सिद्धान्त आदि स्वतः आपकी स्मृति में एकत्रित होते रहेंगे। फिर जितने अधिक आप अपने नियमों में बँधकर, मर्यादा की सीमा में रहकर चलेंगे उतना ही अधिक ज्ञान–दर्शन–चारित्र के निकट आ पाएँगे।

आपके पास पन्द्रह दिन का समय है। प्रतिदिन नियमित 9–10 घंटों का अध्ययन, मनन, स्वाध्याय आदि एकाग्रता से हुआ तो निष्फल नहीं जा सकता। अनेक उदाहरण हैं जहाँ जीव को जगाने के लिए, आत्मरमण में आने के लिए एक ही शब्द ने अपना कमाल दिखाया है तो आपको तो बहुत कुछ सुनने, पढ़ने, समझने को मिलेगा यहाँ। सफलता किसी भी अंश में यदि मिल गई तो अन्तर का अज्ञान हटेगा। जितना–जितना यह अंधकार हटेगा, मोक्ष उतना ही निकट आता आएगा। ■

‘जिनवाणी’ मासिक पत्रिका इण्टरनेट पर उपलब्ध है। वेबसाइट का पता है–

www.jinvani.net

तत्त्व-बोध

साधुओं को सुविधाभोगी न बनाना दायित्व है श्रावक का

श्री उदयमुनि

एक नगर के धर्म-संघ प्रमुख ने लिखित पत्र में प्रश्न भेजकर आगम सम्मत समाधान मांगा। उनका प्रश्न था-

प्रश्न- संयमी साधु-साध्वियों को श्रावक संघ कौन-कौनसी सुविधाएँ देने के लिये उत्तरदायी हैं? क्या श्रावकों को सुविधा प्रदान करने हेतु मजबूर किया जा सकता है?

समाधान- श्रावक संघ या श्रावक-श्राविकाओं का कोई भी दायित्व आगमों में ऐसा नहीं आया है जो संयमियों को अमुक सुख-सुविधाएँ उपलब्ध करवाने का उल्लेख करता हो। यदि वह दर्शन श्रावक या व्रती श्रावक है तो उसे निर्ग्रंथ गुरुओं के प्रति गहन धर्मानुराग, अटूट श्रद्धा स्वतः स्फुरित होती है। उन्हें वस्त्र, पात्र, पाट-पाटले, शय्या-संस्तारक, अशन-पान-खादिम-स्वादिम, औषध-भैषज आदि कल्पनीय वस्तुएँ बहराकर अथवा उपलब्ध करा कर वह स्वयं प्रतिलाभित होता है। उसका व्रत सफल हो जाता है। उन्हें जैसी आत्म-समाधि प्राप्त है वैसी समाधि और सिद्धि भी अन्ततः प्राप्त हो जाती है। (व्याख्याप्रज्ञप्ति), वह अपनी कर्म निर्जरा करता है। (व्याख्याप्रज्ञप्ति, 816) दीर्घायु का बंध करता है। (स्थानांग 3/1)

श्रमण माहण आए हैं, यह जानकर भी जो गृहस्थ उनके सामने नहीं जाता, सुख-साता नहीं पूछता, नतमस्तक नहीं होता, अभ्युत्थान आदि क्रिया से सत्कार नहीं करता, वसति (आश्रय स्थान) प्रदान नहीं करता, कल्याणरूप, मंगलरूप, धर्मदेवस्वरूप, विशिष्ट ज्ञानयुक्त मानकर सेवा नहीं करता, जीवादि पदार्थों, हेतुओं, अर्थों, आत्मा, कर्म,बंध, गतिभ्रमण ज्ञानादि रत्नत्रय के बारे में नहीं पूछता, पुनः पुनः पूछकर व्याकरणों (तत्वस्वरूप-आत्मस्वरूपों) को नहीं समझता, उपाश्रय में जाकर उक्त कार्य नहीं करता, अशन, पान, खादिम-स्वादिम से उन्हें प्रतिलाभित नहीं करता, चाहे जिस स्थान पर गृहस्थ की संगत (भेंट) श्रमण-माहण से हो जाए, पर अपने को वस्त्रादि से ढककर छिपकर चला जाता है कि कहीं श्रमण मुझे देख न लें, उसे धर्म की प्राप्ति नहीं होती। (राजप्रश्नीय सूत्र)

संयम पालनार्थ शरीर को टिकाए रखने के लिये अशनादि, वस्त्र-पात्रादि, शरीर विश्राम के लिये शय्या, उपचार, अनिवार्य हो जाए तो गृहस्थ से प्राप्त करना पड़ता है। इसके लिये उसे गृहस्थ से याचना करनी पड़ती है। परन्तु उसे याचक नहीं भिक्षु कहा गया है। याचक दीनता

दिखाकर भोजनादि मांगता है। दाता को आशीर्वाद देता है। भिक्षाचरी से पूर्ति करने/करवाने वाले भिक्षु न तो दीनता दिखाते हैं और न दाता को आशीर्वाद-आशीर्वचन देते हैं। न ही न देने वाले को अभिशाप आदि देते हैं। भिक्षु न दीनता दिखाकर लेता है, न अहंकार दिखाकर। न नहीं देने वाले के प्रति उसमें बुरे भाव आते हैं।

आचारांग सूत्र प्रथम और द्वितीय श्रुतस्कन्ध में तथा दशवैकालिक सूत्र में ऐसे तथारूप श्रमण-माहण की मर्यादाएँ निर्धारित हैं, कई विधि-निषेध दिए गए हैं। ऐसा करें, ऐसा न करें। स्पष्ट विशद विधान आए हैं। उनका पालन नहीं करने वाले साधु-साध्वियों को, निशीथ सूत्र के अनुसार आचार्य द्वारा प्रायश्चित्त दिया जाता है।

प्रासुक एवं एषणीय आहार देना, कल्पनीय वस्तुओं हेतु आज्ञा देने आदि का कार्य श्रावक-श्राविकाएँ करते ही हैं। फिर अन्य कौनसी सुविधाएँ हैं जो संयमी मांगे और श्रावक या श्राविकाएँ उन्हें देने हेतु बाध्य हों। एक भी नहीं। बाध्य करना, मजबूर करना तो किसी भी आगम में नहीं है। श्रमण मर्यादा के अनुसार स्थंडिल भूमि (परठने का स्थान) वसति, शय्या, संस्तारक न मिले तो संयमी उस स्थान को ग्रहण ही न करे। जहाँ श्रमण-मर्यादाओं का कठोरता पूर्वक निर्वाह हो, वहीं शेष काल, चातुर्मासकाल बिताए। ऐसे तो विधान आचारांग सूत्र द्वितीय चूला में आए हैं कि यदि एक बार एक या अधिक दिन के लिये वसति आज्ञा लेकर ग्रहण कर ली है तो फिर उसे सुविधायुक्त बनाने का संयमी संकेत भी नहीं कर सकता। सुविधाएँ चाहें, सुविधाएँ मांगें, अधिकारपूर्ण सुविधाएँ पूरी करने हेतु संघ या सभा को, श्रावक-श्राविका को बाध्य करें तो साधुता ही नहीं है, भिक्षु नहीं है। शरीर या इन्द्रियों के माध्यम से मिलने वाले सुख और सुविधाओं को तो साधु तुच्छ एवं त्याज्य मानता है। उनके स्थान पर अनन्त आत्मिक सुख की खोज एवं प्राप्ति हेतु संयम ग्रहण किया जाता है। यदि संयम लेने के बाद पूर्व में भोगे सुख, तदर्थ सुविधाओं की वांछा-इच्छा, आकांक्षा-अभ्यर्थना करे तो साधक संयम से भ्रष्ट हो जाता है। दुःख शय्या में चला जाता है। संयम का विनिघात कर देता है। (स्था. 3/4 और 4/3, दुःख शय्या-सुख शय्या) (उत्तरा. ब्रह्मचर्य समाधि स्थान) यदि किसी भी इन्द्रिय की आसक्ति जाग जाए, संयम लेने के बाद उसकी पूर्ति हेतु प्रयत्न हो तो अज्ञान और मिथ्यात्व आ जाता है।

इन्द्रिय विषयों की पूर्ति के सुख-साधनों का तो संयमी स्वयं स्वेच्छया त्याग करता है। वह कठोर से कठोर बाह्य तप-साधना, संसार अपेक्षा से दुःख दुविधाओं को मोल लेता है। बाईस प्रकार के परीषहों को सहता है। त्वरित गति से, निर्जरा करने हेतु विपरीतताओं, बाधाओं, प्रतिकूलताओं, संकटों, कष्टों, उपसर्गों में समभाव रखता है। कहीं साधु-साध्वियों द्वारा नित नई सुविधा की मांग की जाती है तो श्रावक संघ उसकी पूर्ति करने के लिए बाध्य नहीं है। वह अपने विवेक से संयम-यात्रा के निर्वाह में वांछित सहयोग सदैव करता रहे। ■

कविता

जीवन-बोध क्षणिकाएँ

श्री यशवन्तमुनिजी

क्षार

भोग का सुख जब लगेगा
जैसे जले पर क्षार,
तब ही खुल पाएगें तेरे
मुक्ति के द्वार।

श्रुति

हे प्रभो! आपके द्वारा
करुणा सहित कथित श्रुति,
बने मेरी अनुभूति।

निर्जन मन

साधना के लिए मात्र
निर्जन वन ही नहीं,
निर्जन मन भी चाहिए,
ऐसा करके ही शीतल
सुखद शान्ति के
निर्झर का आस्वाद पाइए।

स्मृति

उठते-बैठते, सोते-जागते
खाते-पीते सतत रहे
आत्मा की याद
तो छूट जाएगा प्रमाद।
(आत्मा की विस्मृति ही प्रमाद है)

आत्मसंगीत

वादक ने सितार के तारों को
लयबद्ध तरीके से हिलाकर
सुमधुर संगीत पैदा कर दिया,
इसी तरह आत्म साधक ने
आत्मस्मरण के तारों को
सम्यक् रूप से हिलाकर
चेतन को तन से जुदाकर
आत्मसंगीत से सराबोर कर लिया।

चमक

संसार के सुख जब लगेंगे
जैसे जले पर नमक,
तब ही आएगी हमारे
चैतन्य पर चमक।

योग्यपात्र

चेतन से पर रूप
अनुभवेगा जब गात्र,
तब हो जाएगा मुक्ति जाने के लिए
तू योग्य पात्र।

आत्मतुल्य

हे प्रभो! मैं (आत्मा) तिरुँगा कब?
हे भव्य! जब प्राणी मात्र
आत्मतुल्य लगेंगे सब।

-संकलित

अध्यात्म

विषय सुख और आध्यात्मिक सुख : एक तुलना

श्री कन्हैयालाल लोढ़ा

जहाँ पराधीनता व अभाव है, वहाँ दुःख है। इस दृष्टि से विचारें तो मानव मात्र दुःखी है। वह वर्तमान परिस्थिति से संतुष्ट या सुखी नहीं है। यदि वह विद्यमान परिस्थिति से संतुष्ट या सुखी होता तो उसके मन में कुछ भी पाने का, करने का विकल्प या विचार ही नहीं उठता। उसका चित्त शांत रहता। परन्तु हम अपने ही चित्त का कभी भी निरीक्षण करें तो देखेंगे कि चित्त कुछ न कुछ चाह रहा है, कुछ पाने के लिए चिंतन चल रहा है। चित्त चंचल है, अस्थिर है, अशांत है। चित्त की ऐसी अशांत दशा या परिस्थिति के आधार पर जीवन जीने वाले सभी की है।

बचपन से लेकर आज तक हमने सुखी बनने के लिए अनेक प्रयास किए, परन्तु हम देखते हैं कि हम आज तक भी सुखी नहीं हो सके। यही नहीं, पहले से सुख बढ़ा हो, मानसिक तनाव (दुःख) घटा हो, सो भी नहीं हुआ। आज से दस वर्ष पूर्व हम जितने सुखी थे, उससे सुख घटा ही है, बढ़ा नहीं। यद्यपि सुख के साधन, पहले से बहुत अधिक प्राप्त हो गये हैं, धन-संपत्ति, भूमि-भवन, पद-प्रतिष्ठा आदि बहुत कुछ मिल गये हैं, परन्तु तनाव (टेन्शन) ज्यों का त्यों है या अधिक ही बढ़ा है। आज साधारण सा आदमी भी रेडियो, सिनेमा, टेलीविजन, आइस्क्रीम, स्वादिष्ट मिठाइयाँ, बस, रेल, इण्टरनेट, मोबाइल आदि ऐसी सुख सामग्री का भोग करता है जो पुराने जमाने में सम्राट् अशोक तथा बादशाह अकबर को भी उपलब्ध न थीं। परन्तु आज का संपन्न मानव, अभाव के कारण उत्पन्न तनाव से, कामना अपूर्ति के दुःख से कितना व्याकुल है, दुःखी है, इससे हम सब परिचित हैं। अमेरिका जैसे धन-संपन्न देश में आधे से अधिक व्यक्तियों को नींद लेने के लिए गोलियाँ खानी पड़ती हैं। यह स्थिति चित्त की अशांति की ही द्योतक है।

अभिप्राय यह है कि जिस धन-संपत्ति रूप साधन से एवं विषयभोग से हम सुखी होना चाहते हैं उससे सुख मिलता नहीं है। यही कारण है कि हम अनन्त काल से सुख का प्रयत्न करते आए हैं, परन्तु सुख मिला नहीं। क्योंकि हमारा साधन भूलजनित है। यह भूल है हमारी यह मान्यता कि सुख कामना पूर्ति में है, परन्तु सच्चाई इससे विपरीत है और वह यह है कि 'सुख कामनापूर्ति में नहीं है, कामना के अभाव में है' कारण कि कामना पूर्ति के समय वही स्थिति हो जाती है जो कामना उत्पत्ति से पहले थी अर्थात् कामना का अभाव था। दुःख का

वास्तविक कारण कमी नहीं है, प्रत्युत कामना की उत्पत्ति है। सुख-शांति और स्वाधीनता की उपलब्धि विषय सुख के त्याग से ही संभव है। मानव जाति के सम्पूर्ण इतिहास में एक भी व्यक्ति ऐसा नहीं हुआ जिसे विषय भोग से दुःखरहित सुख मिला हो। विषय सुख में दुःख गर्भित रहता ही है, कारण कि उसमें निम्नांकित दोष होते ही हैं। साथ ही विषय रूप विकार के त्याग से जो शांति का व स्वाधीनता का आध्यात्मिक सुख मिलता है, उसमें निम्नांकित विशेषताएँ होती हैं।

विषय सुख और आध्यात्मिक सुख की तुलना

विषय सुख के दोष	आध्यात्मिक सुख की विशेषता
1. यह क्षीण होता है। भोग्य सामग्री व भोक्ता दोनों के बने रहने पर भी प्रतिक्षण क्षीण होता है और क्षीण होते-होते अंत में समाप्त हो जाता है।	1. यह अक्षय होता है। विषय-विकार के त्याग से जितना सुख प्रकट हुआ है उस अवस्था के बने रहते उस सुख में क्षीणता नहीं आती।
2. विषय-भोग के सुख का अंत नीरसता में होता है।	2. इसमें सदा सरसता बनी रहती है।
3. पराधीनता में आबद्ध करता है।	3. स्वाधीन होता है।
4. यह अभावयुक्त होता है।	4. इसमें अभाव का अभाव होता है अर्थात् वैभव (संपन्नता) युक्त होता है।
5. यह जड़ता लाता है।	5. यह चिन्मय बनाता है।
6. यह प्रमाद उत्पन्न करता है।	6. यह जागरूक बनाता है।
7. इसके फलस्वरूप दुःख मिलता है।	7. यह सदा ही सुखमय रहता है।
8. यह बाधा (अंतराय) युक्त होता है।	8. इसमें बाधा उपस्थित नहीं होती है, सदा बना रहता है।
9. इसका अंत अवश्यंभावी है।	9. इसका अंत होना आवश्यक नहीं है, यह अक्षय है, अनंत है।
10. यह श्रम से मिलता है।	10. यह विश्राम से मिलता है।
11. इसके भोग से शक्ति का क्षय होता है।	11. इससे शक्ति का आविर्भाव होता है।
12. इसकी प्राप्ति में असमर्थता का अनुभव होता है।	12. इसकी प्राप्ति में सब समर्थ हैं।
13. यह मोहमय होता है।	13. यह निर्विकार एवं प्रीतिमय होता है।
14. यह विनाशी है।	14. यह अजर, अमर, अविनाशी है।
15. इसकी तृप्ति कभी नहीं होती है।	15. इससे सदा तृप्ति रहती है।
16. यह इन्द्रियजगत् के स्तर पर अर्थात् बाह्य स्तर पर प्राप्त होता है।	16. यह आंतरिक स्तर पर उपलब्ध होता है।

17. यह संकीर्ण होता है।	17. यह अनंत रस युक्त होता है।
18. यह स्वार्थपरक होता है।	18. यह परार्थ (परोपकार) व परमार्थ युक्त होता है।
19. कामना पूर्ति में इस सुख का भास मात्र होता है, वास्तविक सुख कामना पूर्ति में नहीं होता है।	19. कामना निवृत्ति व त्याग से सुख का अनुभव होता है। यह वास्तविक सुख होता है।
20. यह सुख अनेक भेदों को उत्पन्न करता है।	20. यह सब प्रकार के भेदों का अंत करता है।
21. यह सुख निज स्वरूप का भान भुलाता है।	21. यह निज स्वरूप की स्मृति जागृत करता है।
22. यह भोग व भोक्ता को जन्म देता है।	22. यह निज स्वरूप में प्रतिष्ठित करता है।
23. यह सीमित होता है, परिच्छिन्नता उत्पन्न करता है।	23. यह असीम होता है, व्यापकता लाता है।
24. यह परिवर्तनशील है।	24. यह अपरिवर्तनशील है।
25. यह उत्पत्ति-विनाश युक्त होता है।	25. यह ध्रुव होता है।
26. यह आकुलता युक्त होता है तथा इन्द्रियों की उत्तेजना से मिलता है।	26. यह निराकुलतामय होता है।
27. इसकी क्षतिपूर्ति-निवृत्ति होती है।	27. यह क्षति, पूर्ति, निवृत्ति रहित होता है। नित नूतन रहता है।
28. यह पशुता, दानवता और नारकीयता उत्पन्न करता है।	28. यह देवत्व व मानवता को जन्म देता है।
29. यह सुख का आभास मात्र है, यथार्थ नहीं है, अतः धोखा भरा है, मिथ्या है।	29. यह वास्तविक सच्चा सुख है।
30. यह वक्रता, कठोरता, क्रूरता, क्रोध, मान, माया, लोभ, राग-द्वेष आदि दोषों को बढ़ाता है।	30. यह भव का अंत करता है।
31. इसके भोगी को बार-बार मरना पड़ता है, अतः विषयसुख विष तुल्य है।	31. अमृत रूप है- मृत्यु रहित करता है।
32. यह निजस्वरूप से विमुख करता है।	32. इससे निज स्वरूप में रमणता आती है।
33. यह विकारयुक्त होता है, अतः विभाव है।	33. यह विकार रहित है, अतः स्वभाव है।
34. इसके परिणाम में दुःख मिलता है। विषय सुख के भोगी को दुःख भोगना	34. इसके परिणाम स्वरूप दुःख दूर रहता है।

ही पड़ता है।	
35. यह प्रतिक्रिया से युक्त होता है।	35. यह क्रिया-प्रतिक्रिया रहित होता है।
36. इसकी स्मृति से कामना उत्पन्न होती है और अभाव रूप दुःख का अनुभव होता है।	36. इसकी स्मृति से पूर्वकृत सुखानुभूति ताजी होती है।
37. यह रति-अरतिमय होने से अविरति उत्पन्न करता है। नवीन भोग की प्रवृत्ति को जन्म देता है।	37. रति-अरति रहित विरतिमय होता है।
38. इसके आदि व अन्त में दुःख होता है।	38. इसके आदि, मध्य एवं अंत में सुख रहता है।
39. यह आसक्ति के रसरूप एक ही प्रकार का होता है।	39. इसमें निष्कामता से शांत रस, स्वाधीनता से अखण्ड रस, प्रेम से अनन्त रस रूप सुख मिलता है।
40. इस सुख का भोगी संसार को भेद रूप जानता है, देखता है।	40. इस सुख का स्वामी समस्त संसार को एक ही रूप (अभेद) उत्पाद-व्ययमय जानता देखता है।
41. यह अकर्त्तव्य में प्रवृत्त करता है।	41. इसमें कर्त्तव्य में स्वतः प्रवृत्ति होने लगती है।
42. यह सुख-दुःख का भय पैदा करता है।	42. यह दुःख के भय से रहित करता है।
43. इसके परिणाम में शून्य ही शेष रहता है।	43. इसके परिणाम में शांत, अखण्ड, अनन्त रस की उपलब्धि होती है।
44. इस सुख की पूर्ति अनुकूल परिस्थिति पर आश्रित है।	44. इसमें परिस्थिति की अपेक्षा ही नहीं है। अतः यह प्रत्येक परिस्थिति में संभव है।
45. इसे बलपूर्वक रोक नहीं सकते, इसे सुरक्षित बनाये रख नहीं सकते, जैसे जवानी, बचपन, नीरोगता आदि का सुख।	45. इसे सुरक्षित बनाये रखने में बल व श्रम की आवश्यकता ही नहीं होती है।
46. यह कभी पूर्ण रूप में नहीं मिलता है।	46. यह पूर्ण रूप से मिलता है।
47. इसके आदि और अंत में दुःख नियम से रहता है। यह विभाव दशा का द्योतक होता है।	47. इसमें आदि और अंत नहीं होता है, केवल विमुखता होती है। यह स्वभाव की अभिव्यक्ति है।
48. यह शरीर-संसार के तादात्म्य के बिना नहीं मिलता है।	48. यह तादात्म्य मिटने से होता है।

49. इसकी प्राप्ति प्रकृति (प्राकृतिक विधान) व प्रवृत्ति पर निर्भर करती है।	49. इसकी प्राप्ति किसी प्रकृति व प्रवृत्ति पर निर्भर नहीं करती है।
50. इसकी प्राप्ति में प्राणी परवश है, विवश है।	50. इसकी प्राप्ति में विवशता लेशमात्र भी नहीं है।
51. यह असत् के संग से होता है।	51. यह सत्संग (ध्रुवचारी बनने) से होता है।
52. इसका भोगी पर्याय दृष्टि वाला होता है।	52. इसका अनुभवकर्ता द्रव्य दृष्टि वाला होता है।
53. यह विवेक का अनादर करने, उपेक्षा करने, विवेक रहित होने से होता है।	53. यह विवेक का आदर, आचरण करने से अभिव्यक्त होता है।
54. इसमें राग रहता है।	54. यह विरागता या वीतरागता से होता है।
55. इसमें आसक्ति होती है, रहती है।	55. इसमें प्रीति का प्रादुर्भाव रहता है।
56. यह क्षितिज के समान है, जो केवल भासित होता है। परन्तु प्राप्त कभी नहीं होता है, अस्तित्व हीन होता है।	56. यह सत्, सत्तावान, अस्तित्व वाला है।
57. यह पुण्यों का क्षय करने वाला है।	57. यह पापों का क्षय करने वाला है।
58. इसकी प्राप्ति में पर की सहायता अपेक्षित है। अतः इसकी प्राप्ति में कोई भी स्वतंत्र नहीं है।	58. इसमें किसी भी प्रकार की सहायता अपेक्षित नहीं। अतः इसकी प्राप्ति में मानव मात्र स्वतंत्र है।
59. यह तन, मन और आत्मा में विकार (रोग) उत्पन्न कर आरोग्य का क्षय करता है, अस्वस्थ बनाता है।	59. यह तन, मन, आत्मा को निर्विकार बनाकर आरोग्य व स्वस्थता प्रदान करता है।
60. यह विनाशी होने से संसार की जाति का है।	60. यह अविनाशी स्वभाव का होने से ईश्वरीय जाति का है।
61. इसकी प्राप्ति में देश, काल, परिस्थिति की अपेक्षा होती है।	61. यह देश, काल, परिस्थिति पर निर्भर नहीं करता है।
62. यह पर में आसक्ति करने से होता है।	62. यह स्व से होता है। स्व में प्रीति करने से होता है।
63. जिन कामनाओं की पूर्ति में यह सुख होता है, वे कामनाएँ भी विनाशी हैं। कुछ समय पहले जो कामनाएँ थीं वे अभी नहीं हैं।	63. यह नित्य प्राप्त है, अतः अविनाशी है। इसके स्वरूप में परिवर्तन नहीं होता है। सदा एकसा रहता है।
64. इसकी उपलब्धि प्रवृत्ति से होती है।	64. इसकी उपलब्धि निवृत्ति से होती है।

65. यह संकल्पपूर्ति से होता है। — 65. यह संकल्प से अतीत होने पर होता है।

66. यह सुख भेद उत्पन्न करता है। — 66. यह सुख सब प्रकार के भेदों का अन्त करता है। अभेदता का भाव प्रकट करता है।

67. यह नाशकारी है, अहितकारी है। — 67. यह सर्वहितकारी है।

68. यह परस्पर में संघर्ष उत्पन्न करता है। — 68. यह प्रीति की एकता का भाव प्रकट करता है।

69. इससे व्यक्तित्व दूषित होता है। — 69. इसमें सुन्दर व्यक्तित्व का निर्माण होता है।

70. इससे समाज-राष्ट्र दूषित होता है। — 70. इससे समाज व राष्ट्र में सुन्दरता आती है।

71. इसे बार-बार प्राप्त करना होता है। — 71. यह एक बार प्राप्त करना होता है। पूर्ण अभिव्यक्त हो जाने पर सदा के लिए मिल जाता है।

72. इसमें अकल्याण होता है। — 72. यह सदैव कल्याणकारी है।

73. यह मानवता का घातक है। — 73. यह मानवता का पोषक है।

74. यह दर्शन के (बोध के) अनादर से होता है। — 74. यह दर्शन के आदर से होता है।

75. यह कर्म अनुष्ठान से होता है। — 75. इसमें कर्म की अपेक्षा नहीं है।

यहाँ आध्यात्मिक सुख एवं वैषयिक सुख का संक्षेप में विवेचन किया गया है। यह निश्चयात्मक रूप से कह सकते हैं कि संसार में कोई भी दुःख ऐसा नहीं है, जिसका कारण विषयसुख न हो। समस्त दुःखों का मूलकारण विषयभोग जन्य सुख ही है।

-82/127, नीलगिरी पथ, मानसरोवर, जयपुर-302020 (राज.)

सत्साहित्य-सम्पादक की आवश्यकता

सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जयपुर द्वारा सत्साहित्य का प्रकाशन किया जाता है। इस संस्था में एक ऐसे योग्य विद्वान् सम्पादक की आवश्यकता है जो हिन्दी, प्राकृत, संस्कृत तथा जैनविद्या का ज्ञाता होने के साथ नूतन सत्साहित्य का सर्जन करने में सक्षम हो तथा पूर्व प्रकाशित सत्साहित्य में परिमार्जन/संशोधन करने की क्षमता रखता हो। इच्छुक विद्वान् अपना आवेदन-पत्र पूर्ण विवरण के साथ निम्नांकित पते पर प्रेषित करें। वे चाहें तो अभीष्ट वेतन का उल्लेख भी कर सकते हैं। *-मन्त्री, सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, दुकान नं. 182 के ऊपर, बापू बाजार, जयपुर-302003 (राज.), फोनः- 0141-2575997*, **Email:jinvani@yahoo.co.in**

English-Section

Advocacy of Intercultural Faith in Jain's Prism

Dr Samani Shashi Prajñā

Introduction

Human history up to now seems to be the history of conflict, which is originated from differences when one encounters something unfamiliar or strange or different, one tends to feel uncomfortable and hostile. And one feels at home when one meets something familiar, not different from what one has been exposed to. This seems to be the natural reaction, which may be called animal instinct. Something different is alienated and is not accommodated, it is excluded. For something different, is taken to be an impediment and a threat to one's own existence.

The aim of my talk is to spell out the difference of opinions, difference of belief system which seems to be source of history of conflict and to propose an alternative one i.e. *anekantic* multi-dimensional perspective of approach, that will contribute, I hope, to reconstruct mutual well being of nature, and society of peaceful co-existence and harmony among different cultures and people.

Socialistic approach of *Nayavāda*

The analysis of *nayas* (ways of approach and observation) shows every judgement is relative to that particular aspect from which it is seen or known. This is also called *sāpekṣavāda* which means relativity of our particular knowledge or judgement to a particular standpoint. Since human judgements are always from particular standpoints, they are relative. Their outright acceptance as a sole truth or rejection as totally false, would not be correct.

The importance of this comprehensive synthesis of *Nayavāda*, which is the basis of *Anekāntavāda* supplies a rational unification and synthesis of the manifold and rejects the assertions of base absolutes. Mr. Stephen Hay, an American scholar- historian, in his article, "Jaina Influences on Gandhi's Early Thought" refers to Mahatma

Gandhi's view about the Jaina theory of *Anekanta* as under:

It has been my experience, wrote Gandhi in 1926, "that I am always true (correct) from my point of view and often wrong from the point of view of my critics. I know that we are both (myself and my critics) right from our respective points of view. It is this doctrine of the manyness of reality, that has taught me to Judge a Mussulman from his standpoint and a Christian from his, ... Jains standpoint from the platform of the Jains....."

The more important aspect of *Nayavāda* is however, the subtlety with which it introduces the practice of *ahiṃsā* even in the realm of thought. The moment one begins to consider the angle from which a contrary view-point is put forward, one begins to develop tolerance, which is the basic requirement of the practice of *ahiṃsā*. Origin of all bloody wars fought on the surface of this earth can be traced to the war of ideas and beliefs. Because violence proceeds from intolerance rooted in ideological absolutism, *ahiṃsā* requires a firm foundation for tolerance, a foundation provided by the philosophy of *anekānt.*[1] Prof. Tatia also holds that only intellectual clarity will resolve all conflict and rivalry. All dogmatism owes its genesis to this partiality of outlook and fondness for a line of thinking to which a person has accustomed himself.[2]

Anekāntavada and *Nayavāda* tries to make the man conscious of his limitation by pointing to his narrow vision and limited knowledge of the manifold aspects of things. It asks him not to be hasty in forming absolute judgements before examining various other aspects both positive and negative. Obviously, much of the bloodshed, and much of tribulations of mankind would have been saved if the man had shown the wisdom of understanding the contrary view points. 'The only attitude that we can adopt in the present context is an attitude not of exclusiveness but comprehension, not of intolerance but of understanding, not of hatred and fanaticism but of appreciation and assimilation of whatever is valuable."[3]

History of all conflicts and confrontations in the world is the history of intolerance. It was Draupadi's intolerance which caused the great, disastrous *Mahābhārat* war. Difficulty with the man is his ego-centric attitude which prevents him in attaining holistic perspective. The concept of *nayavāda* which claims for rendering due respect for diverse views, cult culture etc. because it can solve the present problem of familial violence, global violence in the name of terrorism, political violence in the form of arranged wars and in the form of assassination of political leaders.

Familial Violence

A family is a place where a group of couple of members live together and serve each other in joy and sufferings parallels. Each person has his own thinking, hobbies, interests, nature, own way of doing his works, own way of food habits. Members of the same family may have contrary views to your own that makes you angry, that is a sign that you are sub-consciously aware of having no good reason for thinking as you do. So whenever you find yourself getting angry about a difference of opinion, be on your guard; you will probably find that your belief is partially true, compared to the other view. This way of approach and looking at the practical issues of life will give full stop to increasing rate of divorce, suicide, familial quarrels etc.

So the Jaina logicians welcome all the light that comes from different ways of approach and integrates them in one whole. This intellectual charity will resolve all conflict and rivalry. So whatever may be the calling and avocation a man may be called upon to pursue he can achieve success if he is alive to the importance and the utility of all the different ways of approach in the study of problems.

The Concept of Human Race as one

Tirthankar Mahavira 2600 years back claimed that Human race is one i.e. *ekkā maṇussa Jāī.* He never discriminated any human on the basis of his birth, colour, profession, religion, country, etc. He established the novel notion of oneness of Humanity on the basis of one's action. The criteria for a human lies in the virtue of compassion, sympathy, affection, service and in the acts of benevolence. He

propounded in *Uttarādhyayaṅa Sūtra* that man is *brahmin, śūdra, kaṣtriya* and *vaiśya* not by birth but by action. [4] Noble thoughts and actions justifies the human nature. He abolished the prevailing concept of considering one person as high or low on the basis of one's birth, and re-established the merit of action in the world of disparity.

The Veda say : *Amṛtasya putraṁ vayaṁ* i.e. we all are the sons of the same God. *Ātmavat Sarvabhuteṣu* i.e. behold all living beings as of equal intrinsic values as of oneself. *Viśvam eka nīḍam* i.e. the whole universe is single nest all supporting trees keep suggesting for peaceful co-existence without discriminating between a man and a man on the narrow principles of class, colour, languages, province, caste or creed. Today we see there is a kind of absolute notion of sexual superiority, colour superiority, caste superiority, class, country and religious superiority which is creating reactive violence and inhuman behaviour in the name of untouchable considering the other as inferior.

The outstanding philosopher of the day Richard Rorty has discussed the cause of distinction between male and female. In male dominated society, only male are considered as human beings as they possess rationality. Women are emotional so they are not human beings. This kind of approach is threatening the human solidarity.

It is conceived both men and women nine times out of ten, are firmly convinced of the superior excellence of their own sex. There is abundant evidence on both sides. If you are a man, you can point out that most poets and men of science are male; if you are a women, you can retort criminals. This question is inherently insoluble, but self-esteem conceal this from most people.

Today one man or one country fight with each other because their views vary. Views are bound to differ, because we are guided by different conditions, thoughts, modes and attitudes. Hence it is wrong to think oneself right and rest others wrong.[5]

We are all, whatever part of the world we come from, persuaded that our own nation is superior to all others. Seeing that each nation

has its characteristic merits and demerits, we adjust our standard of values so as to make out that the merits possessed by our nation are the really important ones, while its demerits are comparatively trivial. It is more difficult to deal with the self-esteem of man as man because we cannot argue out the matter with some non-human mind.

The only way I know of dealing with this general human conceit is to remind ourselves that man is a brief episode in the life of a small planet in a little corner of the universe, and that for aught we know, other parts of the cosmos may contain beings superior to ourselves as we are to jelly fish. It is one Kant which envisages us to just turn our global perspective by recognizing the existence of the other human as human.

During Gandhian period our history witnessed the *śūdras* are considered as untouchables and they were prohibited to enter into temples, their children's were not allowed to admit in certain schools, they were not allowed to touch the water pot and even touch the Brahmins. If any *śūdra* violated this, he would be punished severely. The novel- 'untouchable' written by R.K. Narayan highlights the social behaviour with *śūdras*. In this novel, he writes- They clean our dirt so they untouchable if it is so, then every one of us are un-touchable as we also clean our dirt. Such an open-mindedness in thought is the need of the hour.

The central philosophy of Richard Rorty is achievement of Human solidarity i.e. to consider the other person not like external, outsider or foreigner, but as one of the member among us. Rorty has given five examples how it threaten the human relationship during IInd world war by Nazis led by Hitler claimed that only Germans have pure blue blood. All the rest are like-animals, so let us kill and make the world of human. Due to this one-dimensional perspective lakhs of Jews were killed in concentration camp.

Even the inhuman behaviour with black people in the west by the white people is really cruel. The whites don't consider blacks as one among them in present united states. They are deprived from certain

privileges of the country, certain professions etc. The kids of black people were not admitted in the convent schools where white people's kids study. Although civil rights movement occurred against their discrimination, still a kind of segregation is prevailing. Moreover white people community stay in particular area and rich white people live in highly crowded area, they don't stay together. Even policemen too misbehave with black people. All these because of difference of skin colour, only change of perspective can do away this problem. So let us recognize to be human doesn't require anything but only love, affection, compassions for all human brothers and feeling for sufferings of others.

For Jainism, role of religion is to unite all through love and respect for one another. We must also work for the survival of religious diversity. Let every religion exist and flourish let them serve the world in their own ways. Flourishing together is the secret of peace. Unity-in-diversity is the lesson of life. This spiritual unity through Surat Spiritual Declaration connects all, the whole creation in the words of *Acārya Mahaprajña*-

'So let us guide ourselves and our followers not just to tolerate but to respect other persons points of views and religions, not just to exist but to co-exist, not just to hail but to help others. We must not prosper and progress at the cost of others but sacrifice a part of ourselves for the good of others, because in the good of others lies our own, in the progress of others rests our own and in the joy of others abides our own', says Acarya Mahaprajña in his address at Surat Spiritual Declaration. **(Continue)**

References:

1. Christopher key Chapple (ed.), Jainism and Ecology, Cambridge: Harvard University Press, 2002, p.22.
2. Prem Suman Jain (ed.), Mahavira and Relevance of his Teachings
3. Radhakrishnan, Our Heritage, p. 17
4. Uttaradhyanna Sutra, Chapter 25, Verse 33.
5. Nemichandra Śastrī, Viśva Śānti aur Jaina dharma.

-Asstt. Prof. in Deptt. of Jainology Comparative Philosophy & Religion, Jain Vishva Bharati University, Ladnun (Raj.)

शोधालेख

जैन आगम-साहित्य में अहिंसा हेतु उपस्थापित युक्तियाँ

डॉ. धर्मचन्द जैन

अहिंसा का पालन एवं हिंसा का त्याग यद्यपि आधुनिक युग की महती आवश्यकता है, तथापि जैनागमों में इसके लिए किस प्रकार के तर्क दिए गए हैं, उनका अध्ययन ही प्रस्तुत शोध-निबन्ध का प्रमुख प्रतिपाद्य विषय है।

शान्ति, स्वतंत्रता, समता एवं निर्भय जीवन के लिए अहिंसा अपरिहार्य आवश्यकता है। इसके अभाव में सुखी जीवन, सुन्दर समाज, समृद्ध राष्ट्र एवं मैत्रीमय विश्व की परिकल्पना नहीं की जा सकती। आज जब विश्व में भय, आतंक एवं हिंसा का बोलबाला है, तब अहिंसा की उपयोगिता अधिक प्रासंगिक एवं आवश्यक प्रतीत होती है। हिंसा जहाँ व्यक्ति, समाज, राष्ट्र एवं विश्व को दुष्प्रभावित करती है, वहाँ अहिंसा प्राणिमात्र का कल्याण करने वाली है। हिंसा जहाँ हिंसा में संलग्न व्यक्ति को दूषित करती है एवं समष्टि के हित को प्रभावित करती है, वहीं अहिंसा शत्रुता का नाश कर व्यक्ति को भीतर से निर्मल बनाती है एवं समाज में सबके प्रति पारस्परिक मैत्री का स्थापन करती है।

जैनागमों में हिंसा को पाप एवं अहिंसा को धर्म प्रतिपादित किया गया है- **'धम्मो मंगलमुक्किट्ठं अहिंसा संजमो तवो'**[1] वाक्य से यही ध्वनित होता है। हिंसा का अर्थ जैन धर्म में किसी प्राणी का वध करना मात्र नहीं है। आचारांग सूत्र में हिंसा के पाँच रूपों का अनेकशः कथन हुआ है, यथा- 1. किसी जीव का हनन करना, 2. उस पर धौंस जमाते हुए शासन करना, 3. दास बनाना, 4. परिताप देना, 5. किसी जीव को अशान्त बनाना। इनका उल्लेख सभी प्राण, भूत, जीव एवं सत्त्व की हिंसा नहीं करने का परामर्श देते हुए किया गया है, यथा- **'सव्वे पाणा जाव सव्वे सत्ता ण हंतव्वा ण अज्जावेयव्वा, ण परिघेतव्वा, ण परितावेयव्वा, ण उद्दवेयव्वा।'**[2] साधारणतया हिंसा का अर्थ हनन से लिया जाता है, किन्तु भगवान महावीर की अहिंसा सबको समान रूप से जीने का अधिकार प्रदान करती है। इसमें प्रत्येक प्राणी के जीवन का सम्मान है। प्राणी छोटा हो या बड़ा, सबको जीने का अवसर प्राप्त है। भगवान महावीर की अहिंसा मात्र मानव समुदाय तक सीमित नहीं, यह प्राणिमात्र की रक्षा की प्रेरणा करती है। आचारांग सूत्र में कहा गया है कि

जो भी अतीतकाल में अरिहन्त हुए हैं, वर्तमान में अरिहन्त हैं तथा भविष्य में अरिहन्त होंगे, वे सभी इसी प्रकार का प्रतिपादन करते हैं कि किसी भी प्राण, भूत, जीव एवं सत्त्व का हनन नहीं किया जाना चाहिए, उन्हें शासित, दास, परितापित एवं अशान्त नहीं बनाया जाना चाहिए। यह धर्म ध्रुव, नित्य एवं शाश्वत है। इसे क्षेत्रज्ञों ने लोक को जानकर कहा है।[3] इस कथन से यह स्पष्ट है कि अहिंसा शाश्वत धर्म है। यह व्यक्ति एवं समष्टि दोनों के लिए हितकारी है।

हिंसा का प्रमुख कारण : अज्ञान

हिंसा तभी घटित होती है, जब आत्मिक स्तर पर प्रमाद या असजगता विद्यमान हो। ज्ञान का सम्यक् स्वरूप प्रकट होने पर एवं अप्रमत्तता आने पर हिंसा नहीं की जा सकती। इसलिए सूत्रकृतांग सूत्र में कहा गया है- **एवं खु नाणिणो सारं जं न हिंसति किंचणं।**[4] अज्ञान से आच्छन्न एवं उसके कारण प्रमादयुक्त बने हुए व्यक्ति ही प्रायः हिंसा में प्रवृत्त होते हैं। हिंसा के अन्य कारण भी हैं- **'कुद्धा हणंति, लुद्धा हणंति, मुद्धा हणंति।'**[5]- अर्थात् क्रोधी, लोभी एवं अज्ञानी हिंसा करते हैं।

आचारांगसूत्र में हिंसा की तीन स्थितियों का निरूपण हुआ है- स्वयं हिंसा करना, दूसरों से हिंसा कराना एवं हिंसा करते हुए का समर्थन करना। ये तीनों प्रकार के हिंसा कार्य त्याज्य हैं। वहाँ पर छह प्रकार के जीव निकायों- पृथ्वीकायिक, अप्कायिक, तेजस्कायिक, वनस्पतिकायिक, त्रसकायिक एवं वायुकायिक की हिंसा स्वयं करने, दूसरों से कराने एवं हिंसा करने वाले का अनुमोदन करने को त्याज्य बताते हुए कहा गया है कि मेधावी पुरुष इन छहों जीव निकायों की तीन प्रकार से हिंसा नहीं करता, यथा- **'तं परिण्णाय मेहावी णेव सयं छज्जीवणिकायसत्थं समारंभेज्जा, णेवऽण्णेहिं छज्जीवणिकायसत्थं समारंभावेज्जा, णेवऽण्णे छज्जीवणिकायसत्थं समारंभंते समणुजाणेज्जा।**[6] सूत्रकृतांग सूत्र में इन जीव निकायों की मन, वचन एवं काया के स्तर पर हिंसा का निषेध है, यथा- **'एतेहिं छहिं काएहिं, तं विज्जं परिजाणिया। मणसा कायवक्केणं, णारंभी ण परिग्गही'।**[7] अहिंसा के लक्षण में उत्तरवर्ती साहित्य में विकास होता रहा है। तत्त्वार्थ सूत्र में जहाँ प्रमत्तयोग से प्राणों के व्यपरोपण को हिंसा कहा है[8], वहाँ अमृतचन्द्र ने पुरुषार्थसिद्ध्युपाय में रागादि की अनुत्पत्ति को ही अहिंसा कह दिया है- **'अप्रादुर्भावः खलु रागादीनां भवत्यहिंसेति'**[9]। किन्तु इस प्रकार की अहिंसा तो वीतरागियों में ही संभव है। यह अहिंसा का उत्कृष्ट रूप है। द्वितीय रूप महाव्रतधारी उन श्रमण-श्रमणियों में उपलब्ध होता है जो तीन करण एवं तीन

योगों से हिंसा के त्यागी होते हैं। अहिंसा का तृतीय रूप अणुव्रत के रूप में श्रावक-श्राविका स्वीकार करते हैं। इसमें सभी निरपराध त्रस जीवों के हनन रूप हिंसा का त्याग किया जाता है। अहिंसा का जितने स्तर पर पालन किया जाय उतना लाभकारी है। इसलिए हिंसा से बचने में ही सबका हित निहित है।

अहिंसा का पालन एवं हिंसा का त्याग यद्यपि आधुनिक युग की महती आवश्यकता है, तथापि जैनागमों में इसके लिए किस प्रकार के तर्क दिए गए हैं, उनका अध्ययन ही प्रस्तुत शोध-निबन्ध का प्रमुख प्रतिपाद्य विषय है। जैन प्रमाणमीमांसा के अन्तर्गत प्रत्यक्ष एवं परोक्ष दो प्रमाण प्रतिपादित हैं। परोक्ष में स्मृति, प्रत्यभिज्ञान, तर्क, अनुमान एवं आगम प्रमाण का समावेश होता है। प्रस्तुत प्रसंग में मुख्यतः तर्क एवं आगम-प्रमाण को आधार बनाकर अहिंसा के औचित्य की स्थापना आगमों के आधार पर की जा रही है-

1. जीवन सबको प्रिय है-

आचारांग सूत्र में स्पष्ट प्रतिपादन है कि सभी प्राणी जीना चाहते हैं, सबको आयुष्य प्रिय है, सुख अनुकूल एवं दुःख प्रतिकूल है। वध सबको अप्रिय एवं जीवन प्रिय है। सभी जीव जीने की इच्छा रखते हैं। इसलिए किसी भी जीव का अतिपात नहीं करना चाहिए, यथा- '**सव्वे पाणा पिआउया, सुहसाता दुक्खपडिकूला, अप्पियवधा, पियजीविणो जीवितुकामा। सव्वेसिं जीवितं पियं। नातिवातेज्ज कंचणं।**'[10] दशवैकालिक सूत्र में भी कहा गया है- '**सव्वे जीवावि इच्छंति जीविउं न मरिज्जिउं, तम्हा पाणिवहो घोरं, निग्गंथा वज्जयंति णं।**'[11] हिंसा या तो प्राणी के जीवन को समाप्त कर देती है या उसमें असाता अथवा दुःख उत्पन्न कर देती है। इसलिए सब जीवों की भावना का आदर करते हुए उनकी हिंसा नहीं की जानी चाहिए। आचारांग सूत्र की इस युक्ति से प्रत्येक प्राणी के जीने के अधिकार की भी स्थापना होती है। आधुनिक युग में मानवाधिकार के अन्तर्गत मनुष्य को ही जीने का अधिकार प्राप्त है, अन्य प्राणियों को नहीं। महावीर की अहिंसा सभी प्राणियों को जीने का अधिकार प्रदान करती है। यदि पेड़-पौधे, पशु-पक्षी आदि सबके जीने के अधिकार या उनकी भावना को समझा जाए तो उनकी हिंसा में निश्चित ही कटौती संभव है।

2. सभी जीव चेतनाशील हैं-

जिस प्रकार मानव चेतनाशील प्राणी है, उसी प्रकार अन्य जीवों में भी चेतना है। भगवान महावीर ने जैनागमों में एकेन्द्रिय से लेकर पंचेन्द्रिय तक के जीवों में ज्ञान-दर्शन स्वरूप चेतना को स्वीकार किया है। एकेन्द्रिय जीवों में पृथ्वीकायिक, अप्कायिक,

तेजस्कायिक, वायुकायिक एवं वनस्पतिकायिक जीवों का समावेश होता है, क्योंकि इनमें एक ही स्पर्शनेन्द्रिय होती है। द्वीन्द्रिय जीवों (लट, केंचुआ आदि) में स्पर्शन के साथ रसना, त्रीन्द्रिय जीवों (चींटी आदि) में दोनों के साथ घ्राण तथा चतुरिन्द्रिय जीवों में चक्षु इन्द्रिय सहित चार इन्द्रियाँ होती हैं। पंचेन्द्रिय में श्रोत्रेन्द्रिय भी होती है। पंचेन्द्रिय जीव दो प्रकार के होते हैं- संज्ञी अर्थात् मन वाले एवं असंज्ञी अर्थात् मन रहित। मनयुक्त पंचेन्द्रिय जीवों में मनुष्य, पशु, पक्षी, उरपरिसर्प, भुजपरिसर्प एवं जलचर जीव हमें दृष्टिगोचर होते हैं। नारकी एवं देव भी पंचेन्द्रिय होते हैं, किन्तु वैक्रिय शरीरधारी होने के कारण वे हमारे चर्मचक्षुओं से दिखाई नहीं देते हैं। इस प्रकार जीवों की विविधता है। किन्तु छोटे हों या बड़े, एकेन्द्रिय हों या पंचेन्द्रिय- सभी जीव चेतनाशील हैं। चेतनाशील होने के कारण हमारी उनके प्रति आत्मीयता एवं संवेदनशीलता अपेक्षित है। संवेदनशीलता जागृत करते हुए आचारांग सूत्र में कहा गया है-

तुमं सि णाम तं चेव, जं हंतव्वं त्ति मण्णसि।
तुमं सि णाम तं चेव, जं अज्जावेतव्वं ति मण्णसि।
तुमं सि णाम तं चेव, जं परितावेतव्वं ति मण्णसि।।
तुमं सि णाम तं चेव, जं परिघेतव्वं ति मण्णसि।
एवं तं चेव जं उद्दवेतव्वं ति मण्णसि।।[12]

तुम वही हो जिसे तुम मारने योग्य समझते हो, तुम वही हो जिसे तुम शासन करने योग्य समझते हो, तुम वही हो जिसे परिताप देने योग्य मानते हो, तुम वही हो जिसे तुम गुलाम बनाने योग्य मानते हो, इसी प्रकार तुम वही हो जिसे अशान्त करने योग्य समझते हो। इन वाक्यों में मनुष्य की संवेदनशीलता को गहरा किया गया है एवं हननीय, शासनीय, परितापनीय आदि के रूप में देखे जाने वाले प्राणियों को अपने समान समझने तथा उनके स्थान पर अपने को रख कर देखने की प्रेरणा की गई है।

आचारांग सूत्र में वनस्पति एवं मनुष्य में जो समानता निरूपित है, वह भगवान महावीर की वैज्ञानिकता, संवेदनशीलता एवं सूक्ष्मदृष्टि का परिचायक है। वहाँ पर निगदित है कि जिस प्रकार मनुष्य उत्पत्ति स्वभाव वाला, वृद्धि स्वभाव वाला एवं चेतनाशील है उसी प्रकार वनस्पति भी उत्पन्न होती है, बढ़ती है एवं चेतनाशील है।[13] जगदीशचन्द्र बसु के प्रयोगों के पश्चात् समस्त विश्व वनस्पति में चेतना स्वीकार करने लगा है, किन्तु प्रभु महावीर ने 2600 वर्ष पूर्व यह तथ्य उद्घाटित कर दिया था। तीर्थंकर महावीर ने यह भी कहा कि जिस प्रकार मनुष्य को छेदा जाय तो वह म्लान होता है उसी प्रकार वनस्पति भी छेदे जाने पर म्लान होती है। मनुष्य जैसे आहार करता है वैसे वनस्पति भी आहार करती है।

दोनों अनित्य, अशाश्वत, चयोपचय वाले विपरिणाम धर्मी हैं।[14]

सूत्रकतांग सूत्र में कहा गया है- **से जहा नामए मम अस्सायं दंडेण वा अट्ठीण वा मुट्ठीण वा, लेलूण वा कवालेण वा, आउडिज्जमाणस्स वा, हम्ममाणस्स वा तज्जिज्जमाणस्स वा ताडिज्जमाणस्स वा परिताविज्जमाणस्स वा किलामिज्जमाणस्स वा उद्दविज्जमाणस्स वा जाव लोमुक्खणणमातमवि हिंसाकरं दुक्खं भयं पडिसंवेदेमि, इच्चेवं जाण सव्वे पाणा जाव सत्ता दंडेण वा जाव कवालेण वा आउडिज्जमाणा वा हम्ममाणा वा तज्जिज्जमाणा वा ताडिज्जमाणा वा परियाविज्जमाणा वा किलामिज्जमाणा वा उद्दविज्जमाणा वा जाव लोमुक्खणणमातवि हिंसाकरं दुक्खं भयं पडिसंवेदेंति। एवं णच्चा सव्वे पाणा जाव सव्वे सत्ता ण हंतव्वा, ण अज्जावेयव्वा, ण परिघेतव्वा, ण परितावेयव्वा, ण उद्दवेयव्वा।**[15]

अर्थात् जिस प्रकार कोई मुझे दण्ड से, हड्डी से, मुष्टि से, पत्थर से या ठीकरी से मारे, तर्जना दे, ताडना दे, परिताप दे, खिन्नता उत्पन्न करे, अशान्त करे यावत् रोम उखाड़े तो मुझे कितनी असाता, हिंसाकारी दुःख एवं भय का अनुभव होता है। इसी प्रकार सभी प्राण, भूत, जीव एवं सत्त्व को डण्डे से यावत् कपाल से चोट मारे यावत् रोम उखाड़े (उन्हें किसी भी प्रकार की यन्त्रणा दे) तो उन्हें भी कितने दुःख एवं भय का अनुभव होता होगा। ऐसा जानकर सभी प्राण यावत् सत्त्व न हन्तव्य हैं, न शासितव्य हैं, न दास बनाये जाने योग्य हैं, न परितापनीय हैं और न ही अशान्त बनाने योग्य हैं।

सूत्रकृतांग का यह संदेश सभी प्राणियों में आत्मवद्भाव की स्थापना करता है। जिन कारणों से मुझे स्वयं दुःख का अनुभव होता है, वैसे कारण मुझे दूसरे प्राणियों के लिए भी उपस्थित नहीं करना चाहिए।

3. हिंसा कर्म-बंधन का हेतु है-

जैन आगमों के अनुसार हिंसा से पाप कर्मों का आस्रव एवं फलतः बंध होता है। दशवैकालिक सूत्र में कहा गया है-

अजयं चरमाणो उ, पाणभूयाइं हिंसइ।
बंधइ पावयं कम्मं, तं से होइ कडुयं फलं।।[16]

अयतना (अविवेक, प्रमत्तता) से कार्य करने वाला प्राणियों की हिंसा करता है और परिमाण स्वरूप कटुक फल देने वाले पाप कर्मों का बंध करता है। तत्त्वार्थ सूत्र में मिथ्यात्व, अविरति, प्रमाद, कषाय एवं योग को बंध का हेतु कहा गया है। हिंसा का समावेश स्थूल रूप से अविरति में होता है। सूक्ष्म रूप से उस समय अशुभ योग, प्रमाद एवं कषाय भी रहते

हैं। कर्म-बंधन का हेतु होने से हिंसा त्याज्य है। अहिंसा से संवर, निर्जरा एवं मोक्ष की प्राप्ति संभव है। क्योंकि अहिंसा धर्म है, व्रत है, समिति एवं गुप्ति है। अहिंसा किस प्रकार कर्मबंध का कारण नहीं है, इसके लिए कहा गया है-

जयं चरे जयं चिट्ठे, जयमासे जयं सए।
जयं भुंजंतो भासंतो, पाव कम्मं न बंधइ।।[17]

यतनापूर्वक यदि चलने, ठहरने, बैठने, सोने, भोजन करने, बोलने आदि की प्रवृत्ति की जाती है तो वह पापकर्म के बंधन का कारण नहीं होती। आगे कहा गया है-

सव्वभूयप्पभूयस्स सम्मं भूयाइं पासओ।
पिहियासवस्स दंतस्स, पावं कम्मं न बंधइ।।[18]

जो सब जीवों को अपने समान समझकर उनके साथ व्यवहार करता है वह आस्रव का निरोध करता हुआ पापकर्म का बंध नहीं करता।

4. हिंसा से हिंसा की शुद्धि नहीं होती-

भगवान महावीर ने बदले की भावना से किए जाने वाले कार्य का निषेध किया है। वे कहते हैं कि रुधिर से सने हुए वस्त्र को यदि रुधिर से ही घोया जाय तो वह स्वच्छ नहीं हो सकता-

रुहिकयस्स वत्थस्स रुहिरेणं चेव पक्खालिज्जमाणस्स णत्थि सोही।।[19]

इसी प्रकार हिंसा का उपचार हिंसा नहीं है। अहिंसा से ही हिंसा पर काबू पाया जा सकता है। उदाहरणार्थ क्षमा के द्वारा हिंसक को शान्त बनाया जा सकता है। क्षमा से आह्लाद भाव उत्पन्न होता है, मैत्रीभाव का स्थापन होता है।[20] आचारांग सूत्र में कहा गया है हिंसा तो एक से बढ़कर एक होती है, किन्तु अहिंसा सबसे बढ़कर है।- **अत्थि सत्थं परेण परं णत्थि असत्थं परेण परं।**[21]

5. हिंसा अहित एवं अबोधि का हेतु है-

हिंसा किसी भी प्रकार की क्यों न हो, वह अहित एवं अज्ञान का ही निमित्त बनती है। आचारांग सूत्र में कहा गया है- **इमस्स चेव जीवियस्स परिवंदण-माणण-पूयणाए जातिमरण-मोयणाए दुक्खपडिघातहेउं से सयमेव पुढविसत्थं सभारंभति, अण्णेहि वा पुढविसत्थं समारंभावेति, अण्णे वा पुढविसत्थं समारभंते समणुजाणति। तं से अहिताए, तं से अबोधीए।**[22]

कोई मनुष्य इसी जीवन के लिए प्रशंसा, आदर तथा पूजा की प्राप्ति हेतु, जन्म-मरण एवं मोक्ष के लिए तथा दुःख का प्रतिघात करने हेतु पृथ्वीकायिक, अप्कायिक,

तेजस्कायिक, वनस्पतिकायिक, त्रसकायिक एवं वायुकायिक जीवों की स्वयं हिंसा करता है, दूसरों से हिंसा कराता है तथा इनकी हिंसा करने वाले का अनुमोदन करता है। यह उसके अहित एवं अबोधि के लिए है। यहाँ पर भगवान महावीर का संदेश है कि किसी उत्तम प्रयोजन के लिए की गई हिंसा भी अज्ञान एवं अहित का ही कारण बनती है।

यहाँ पर यह प्रश्न उपस्थित होता है कि कभी-कभी जीवन में हमें हिंसा में भी हित दिखाई पड़ता है। बहुत सी धर्म क्रियाएँ भी हिंसायुक्त होती हैं तथा कभी हमें दो हिंसाओं में से एक हिंसा का चुनाव करना पड़ता है। ऐसे अवसर पर जैन दार्शनिकों ने बड़ी हिंसा की अपेक्षा छोटी हिंसा या अल्प हिंसा को स्वीकार करने का सुझाव दिया है। बहु-आरम्भ अथवा बहु-हिंसा को जहाँ नरकायु के बन्ध का कारण माना गया है वहाँ अल्पारम्भ या अल्पहिंसा को मनुष्यायु का हेतु प्रतिपादित किया गया है।[23] धर्मक्रियाओं में होने वाली हिंसा को जैनों ने हिंसा की ही श्रेणी में रखा है, धर्म की श्रेणी में नहीं, जैसाकि आचारांग सूत्र के उपर्युक्त कथन से स्पष्ट है। किन्तु धर्मक्रिया करते समय भावों की शुभता या विशुद्धता के कारण प्रायः भावहिंसा नहीं होती है। भावहिंसा ही बंधन का मुख्य कारण बनती है, द्रव्य हिंसा नहीं।[24] भावों की विशुद्धि होने पर ही जीव अरिहन्त प्रज्ञप्त धर्म की आराधना के लिए उद्यत होता है।[25]

6. अहिंसा में सबका कल्याण निहित है-

प्रश्नव्याकरण सूत्र में कहा गया है- *अहिंसा तस-थावर-सव्वभूयखेमंकरी*[26] त्रस एवं स्थावर सभी प्राणियों का कल्याण अहिंसा में निहित है। जो सबका हित करने वाली है, वह अवश्य उपादेय है। हिंसा सर्वहितकारिणी नहीं हो सकती। वह किसी भी स्थिति में विश्व कल्याण का साधन नहीं बन सकती। इस तथ्य को आधुनिक विचारक एवं कल्याणकार्यों में संलग्न संस्थाएँ भी स्वीकार करती हैं।

7. मैत्रीभाव के लिए अहिंसा आवश्यक है-

सूत्रकृतांगसूत्र में स्पष्ट कथन है कि हिंसा करने, हिंसा कराने एवं हिंसा का अनुमोदन करने से वैर बढ़ता है-

सयं तिवायए पाणे, अदुवऽन्नेहि घायए।
हणंतं वाणुजाणाइ, वेरं वड्ढइ अप्पणो।।[27]

अतः मैत्रीभाव की स्थापना के लिए अहिंसा आवश्यक है। भय एवं वैर से उपरत होकर मनुष्य को चाहिए कि वह प्राणियों के प्राणों का हनन न करें- **न हणे पाणिणो पाणे, भयवेराओ उवरए।**[28]

8. सभी जीव पहले ही दुःख से पीड़ित हैं–

संसारी जीव पहले से ही दुःखाक्रान्त हैं, इसलिए हिंसा के द्वारा उन्हें और अधिक दुःखी नहीं किया जाना चाहिए– **सव्वे अक्कंतदुक्खा य, अओ सव्वे अहिंसिआ।** अथवा दुःख सबको अकान्त अर्थात् अप्रिय है, इसलिए भी उनकी हिंसा नहीं की जानी चाहिए। हिंसा से असाता उत्पन्न होती है जो अशान्ति, महद्भय एवं दुःख रूप होती है– **सव्वेसिं पाणाणं, सव्वेसिं भूताणं, सव्वेसिं जीवाणं, सव्वेसिं सत्ताणं असायं अपरिनिव्वाणं महब्भयं दुक्खं त्ति बेमि।**[29]

9. भयभीतों के लिए अहिंसा शरणभूत है–

प्रश्नव्याकरणसूत्र में अहिंसा के संदर्भ में प्रतिपादन करते हुए कहा गया है– **एसा सा भगवई अहिंसा जा सा भीयाणं विव सरणं, पक्खीणं विव गमणं, तिसियाणं विव सलिलं, खुहियाणं विव असणं, समुद्दमज्झे य पोयवहणं, चउप्पयाणं व आसमपयं, दुहट्ठियाणं व ओसहिबलं।**[30] यह भगवती अहिंसा भयभीतों के लिए शरण है। यह पक्षियों के लिए आकाश के समान, तृषितों के लिए सलिल के समान, बुभुक्षितों के लिए भोजन की तरह, समुद्र के मध्य जहाज की भाँति, चतुष्पदों के लिए आश्रमस्थल के समान तथा रोग के दुःख से ग्रस्तों के लिए औषधिबल के समान है।

10. हिंसा दुःखजनक है–

आचारांग सूत्र में प्रतिपादित है कि यह दुःख आरम्भजन्य है– **आरम्भजं दुक्खमिणं ति णच्चा। एवमाहु समत्तदंसिणो।**[31] जो अपनी साता या सुख के लिए अन्य प्राणियों की हिंसा करता है वह कुशील धर्मवाला होता है– **अहाहु से लोगे कुसीलधम्मे भूताइं से हिंसति आतसाते**[32]। हिंसा की दुःखरूपता को आचारांग सूत्र में इस प्रकार भी अभिव्यक्त किया गया है– **सोच्चा भगवतो अणगाराणं इहमेगेसिं णातं भवति– एस खलु गंथे, एस खलु मोहे, एस खलु मारे, एस खलु निरए।**[33] यह हिंसा का कार्य बंधन में पटकने वाला, मूर्च्छा उत्पन्न करने वाला, अनिष्ट में धकेलने वाला एवं नरक में ले जाने वाला है।

कभी हिंसा का कार्य सप्रयोजन होता है, तो कभी निष्प्रयोजन– **अट्ठा हणंति अणट्ठा हणंति।**[34] यदि निरर्थक या निष्प्रयोजन हिंसा का पूर्ण त्याग करते हुए सप्रयोजन हिंसा को भी यतना, विवेक या समिति के माध्यम से न्यून किया जाए तो समस्त मानवजाति एवं सम्पूर्ण प्राणिजगत् को शान्ति, सुख, समृद्धि एवं आनंद का अनुभव हो सकता है। आचार्य समन्तभद्र ने कहा भी है– **अहिंसा भूतानां जगति विदितं ब्रह्म परमम्।**[35] जगत

में अहिंसा समस्त प्राणियों के लिए परम ब्रह्म है। समस्त जगत् के जीवों के प्रति वात्सल्यभाव से पूरित तीर्थंकरों ने इसीलिए अहिंसा का उपदेश दिया है- **एसा सा भगवई अहिंसा जा सा अपरिमिय-णाणदंसणधरेहिं सील-गुण-विणयतवसंजम-णायगेहिं तित्थक-रेहिं सव्वजगजीववच्छलेहिं तिलोयमहिएहिं जिणवरेहिं सुट्ठु दिट्ठा।**[36]

11. करुणा जीव का स्वभाव है-

हिंसा का निषेध ही अहिंसा नहीं है, अपितु अहिंसा का सकारात्मक पक्ष भी है, जो करुणा अनुकम्पा, दया, मैत्री आदि के रूप में अभिव्यक्त होता है। अन्य जीवों के प्रति आत्मवद्भाव के साथ उनके दुःख-दर्द को दूर करने की भावना भी अहिंसा का ही विस्तार है। एक-दूसरे जीव का निरवद्य एवं हितावह उपग्रह करना जीव के स्वाभाविक लक्षण में सम्मिलित है- **परस्परोपग्रहो जीवानाम्।**[37] षट्खण्डागम की धवला टीका में करुणा को जीव का स्वभाव निरूपित किया गया है-**करुणाए जीव-सहावस्स कम्मजणिदत-विरोहादो।**[38]

करुणा के साथ अनुकम्पा पर भी बल दिया गया है। अनुकम्पा को सम्यग्दर्शन का एक लक्षण स्वीकार किया गया है।[39] इसी प्रकार धर्म उसे कहा गया है जहाँ दया है।[40] भगवान ने सब जीवों की रक्षा एवं दया के लिए प्रवचन फरमाया था।[41] जैनागमों में सब जीवों के प्रति मैत्री का संदेश मिलता है।[42] इस प्रकार अहिंसा के सकारात्मक पक्ष की प्रस्तुति के साथ अहिंसा को आगमों में स्थापित करने का प्रयत्न किया गया है।[43]

इस प्रकार आगमों में विभिन्न स्थलों पर भिन्न-भिन्न प्रकार से अहिंसा के पालन एवं हिंसा के त्याग की प्रेरणा की गई है। यह अहिंसा व्यक्तिगत स्तर पर भी कल्याणकारिणी है तो समाज एवं राष्ट्र के स्तर पर मंगलविधात्री है। पर्यावरण प्रदूषण, भ्रष्टाचार, आतंकवाद जैसी आधुनिक विश्व की समस्याओं का समाधान भी अहिंसा के माध्यम से संभव है। पर्यावरण का प्रदूषण हिंसा-जन्य है। पेड़-पक्षियों की हिंसा आदि से पर्यावरण-प्रदूषण बढ़ता रहता है। भ्रष्टाचार की समस्या भी तभी उत्पन्न होती है जब मन में प्रदूषण का भाव हो। दूसरों को एवं अपने को होने वाली पीड़ा का यदि पहले से ही बोध हो जाए तो भ्रष्टाचरण की ओर मानव प्रवृत्त ही न हो। आचरण की पूर्ण शुद्धता एवं नैतिकता अहिंसा के होने पर ही संभव है।

संदर्भ-

1. दशवैकालिक, सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जयपुर-2005, 1.1

2. (अ) सूत्रकृतांग, आगम प्रकाशन समिति, ब्यावर, द्वितीय संस्करण, 1991, 2.1.679, पृष्ठ-499

(ब) आचारांगसूत्र, आगम प्रकाशन समिति, ब्यावर, द्वितीय संस्करण, 1989, 1.4.2, सूत्र-138, पृष्ठ-126

3. सूत्रकृतांग, 2.1.680, पृष्ठ-500
4. सूत्रकृतांग, 1.1.4.10, पृष्ठ-98
5. प्रश्नव्याकरण, आगम प्रकाशन समिति, ब्यावर, 1983, 1.1, पृष्ठ-23
6. आचारांग सूत्र, 1.1.7, 62, पृष्ठ-36, 1989
7. सूत्रकृतांग, 1.9.9, पृष्ठ-361
8. प्रमत्तयोगात् प्राणव्यपरोपणं हिंसा।-तत्वार्थसूत्र, पार्श्वनाथ विद्यापीठ, वाराणसी, 1985, 7.8
9. पुरुषार्थसिद्ध्युपाय, श्री परमश्रुत प्रभावक मण्डल, श्रीमद् राजचन्द्र आश्रम, अगास, 1966, 44
10. आचारांग सूत्र, 1.2.3, सूत्र 78 एवं 85, पृष्ठ-51 एवं 57
11. दशवैकालिक, सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जयपुर, चतुर्थ संस्करण, 2005, 6.11, पृष्ठ-180
12. आचारांग सूत्र, 1.5.5, सूत्र 170, पृष्ठ-186
13. आचारांगसूत्र, 1.1.5, सूत्र-45, पृष्ठ-26
14. इमं पि छिण्णं मिलाति एयं पि छिण्णं मिलाति, इमं पि आहारगं एयं पि आहारगं, इमं पि अणितियं एयं पि अणितियं, इमं पि असासयं एयं पि असासयं, इमं पि चयोवचइयं एवं पि चयोवचइयं, इमं पि विपरिणामधम्मयं एवं पि विपरिणामधम्मयं।- आचारांग सूत्र, 1.1.5, सूत्र-45, पृष्ठ-26-27
15. सूत्रकृतांग, 2.1.679, पृष्ठ-499
16. दशवैकालिक, 4.1, पृष्ठ-76
17. दशवैकालिक, 4.8, पृष्ठ-79
18. दशवैकालिक, 4.9, पृष्ठ-80
19. ज्ञाताधर्मकथा, 1.5, शैलक अध्ययन, पृष्ठ-171, आगम प्रकाशन समिति, ब्यावर, द्वितीय संस्करण, 1989
20. खमावणयाए णं पल्हायणभावं जणयइ। पल्हायणभावभुवगए य सव्व-पाण-भूय-जीव-सत्तेसु मित्तीभावमुप्पाएइ।- उत्तराध्ययनसूत्र, 29-18, सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जयपुर, तृतीय भाग-1989
21. आचारांग सूत्र, 1.3.4, पृष्ठ-113
22. आचारांग सूत्र, 1.1.2.13, पृष्ठ-9
23. (अ) बह्वारम्भपरिग्रहत्वं च नारकस्यायुषः। -तत्त्वार्थसूत्र, 6.16- पार्श्वनाथ विद्यापीठ, वाराणसी, 1985

(ब) अल्पारम्भपरिग्रहत्वं स्वभावमार्दवार्जवं च मानुषस्य। -तत्त्वार्थसूत्र, 6.18, पार्श्वनाथ विद्यापीठ, वाराणसी, 1985

24. ओघनिर्युक्ति, 747-749, निर्युक्तिसंग्रह, श्री हर्षपुष्पामृत जैन ग्रन्थमाला, जामनगर, 1989
25. भावविसोहीए वट्टमाणे जीवे अरहंत- पन्नत्तस्स आराहणयाए अब्बुट्ठेइ। उत्तराध्ययन सूत्र, 29.51, सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जयपुर, तृतीय भाग, 1989
26. प्रश्नव्याकरण, 2.1.108, पृष्ठ-165
27. सूत्रकृतांग, 1.1.1.3, पृष्ठ-7
28. उत्तराध्ययन सूत्र, 6.7, पृष्ठ-208
29. आचारांगसूत्र, 1.4.2, सूत्र-139, पृष्ठ-126, आगम प्रकाशन समिति, ब्यावर, द्वितीय संस्करण, 1989
30. प्रश्नव्याकरण सूत्र, 2.1.108, पृष्ठ-165
31. आचारांग सूत्र, 1.4.3.140, पृष्ठ-132
32. सूत्रकृतांग, 1.7.5, पृष्ठ-333
33. आचारांग सूत्र, 1.1.2.14, पृष्ठ-9
34. प्रश्नव्याकरण, 1.1.18, पृष्ठ-23
35. स्वयम्भूस्तोत्र, 21.4, स्वयम्भूस्तोत्र तत्त्वप्रदीपिका, श्री गणेश वर्णी दिगम्बर जैन संस्थान, वाराणसी, 1993
36. प्रश्नव्याकरण, 2.1.109, पृष्ठ-167
37. तत्त्वार्थ सूत्र, 5.21, पार्श्वनाथ विद्यापीठ, वाराणसी, 1985
38. धवला पुस्तक 13, पृष्ठ-362, जैन संस्कृति संरक्षक संघ, शोलापुर
39. (अ) तदेवं प्रशमसंवेगनिर्वेदानुकम्पास्तिक्याभिव्यक्तिलक्षणं तत्वार्थश्रद्धानं सम्यग्दर्शनम्। - सभाष्य तत्वार्थाधिगम सूत्र 1.2, श्रीमद् राजचन्द्र आश्रम, अगास
(ब) प्रशमसंवेगानुकम्पास्तिक्याभिव्यक्तिलक्षणं सम्यक्त्वम्।-धवला, 1.1.4, शोलापुर
40. (अ) धम्मो दयाविसुद्धो- बोधपाहुड, 25, अष्टपाहुड, श्री सेठी दिगम्बर जैन ग्रंथमाला, मुम्बई
(ब) धम्मो दयापहाणो।- कार्तिकेयानुप्रेक्षा, 97, पृष्ठ-47, श्रीमद् राजचन्द्र आश्रम, अगास, 1990
41. सव्वजगजीवरक्खणदयट्ठयाए पावयणं भगवया सुकहियं।- प्रश्नव्याकरण, 2.1.112
42. मित्तिं भूएसु कप्पए।- उत्तराध्ययन सूत्र, 6.2, 1998
43. अहिंसा के सकारात्मक पक्ष की प्रस्तुति के लिए द्रष्टव्य पुस्तक- "सकारात्मक अहिंसा : शास्त्रीय और चारित्रिक आधार"- कन्हैयालाल लोढ़ा, प्राकृत भारती अकादमी, जयपुर, 2004

-3 के 24-25, कुड़ी भगतासनी हाउसिंग बोर्ड, जोधपुर-342005 (राज.)

तत्त्व-जिज्ञासा

संयम जीवन की जीवन्तता

आचार्यश्री जयघोषसूरीश्वरजी

प्रश्न– संयम जीवन को जीवन्त बनाए रखने का सम्यक् एवं स्थिर उपाय क्या है? जीवन्त अवस्था किसे कहेंगे?

उत्तर– संयम जीवन को जीवन्त रखने के मुख्य तीन उपाय हैं-

1. गुरु के प्रति पूर्ण रूप से समर्पित होना एवं गुरु से कुछ भी नहीं छिपाना।
2. प्रत्येक साधु पर पूर्ण आदरभाव रखना एवं सदैव उनके सहायक बनना।
3. इन दोनों बातों को गौण बनाए बिना, जीवन की अन्तिम साँस तक अभ्यास-स्वाध्याय-योग को प्रमुखता प्रदान करना। अन्य कार्यों को प्रासंगिक या अवसरोचित समझना।

इनमें पहली बात से अर्थात् गुरु के प्रति समर्पण से प्रेमभक्ति भाव वृद्धिगत रहता है एवं गुरु भी हम पर अपना दृढ़ वात्सल्य रखते हैं। इससे कभी भी गुरु के साथ विवाद नहीं होता है।

दूसरी बात से सहवर्ती अन्य साधुओं आदि के साथ प्रेम-वात्सल्य भाव बना रहता है, बढ़ता है और इससे विवाद भी उत्पन्न नहीं होते।

तीसरी बात के अनुसार स्वाध्यायलीनता के कारण एक ऐसी स्वस्थता चित्त में उत्पन्न हो जाती है जिससे बाह्य प्रतिकूल संयोगों में भी असमाधि नहीं होती एवं अन्यों के संग कम एवं उचित व्यवहार रहने से, विशालता विकसित होती है तथा वाद-विवाद के प्रसंग प्रायः नहीं होते। सामान्यतया साधु-जीवन में बाह्य विक्षेप तीन प्रकारों से आते हैं-

1. गुरु से मन न मिलने से।
2. सहवर्ती साधुओं के साथ प्रेम भाव न रहने के कारण। प्रतिकूल परिस्थितियों या प्रतिकूल व्यक्तियों के साथ पाला पड़ने से, एवं
3. अभ्यास-स्वाध्याय में पूर्णतया लीन न रहने से।

यदि उपर्युक्त तीन बातों को ठीक से कर लिया हो तो प्रायः ये बाह्य विक्षेप नहीं आते हैं। अन्दर चित्त में बेचैनी, दुर्विकल्प आदि के लिए भी ये बाह्य विक्षेप ही प्रमुख रूप से कारण बनते हैं। वे भी, इन बातों को ध्यान में रखने से विलीन हो जाते हैं।

फिर भी, प्रसंगवश या मोहनीय के उदय से चित्त यदि विक्षिप्त बन जाता है तो गुरु भगवन्तों की वात्सल्य भरी समझदारी पूर्ण सलाह एवं साधुभगवन्तों की प्रेरणा से तथा

स्वाध्याय से उत्पन्न हुई परिणति- विचारणा से वे विक्षेप टिक नहीं पाते हैं। सहनशीलता भी बढ़ती है। अतः संयम की जीवन्त अवस्था अर्थात् 'गुरु के प्रति समर्पण भावपूर्वक तथा साधुओं के प्रति सहायक भावपूर्वक ज्ञान को प्रधान भाव बनाकर उल्लासपूर्वक संयम योगों में - क्रियाओं में मग्न होना चाहिए।' गुरु-समर्पण भाव एवं साधु सहायक भाव हमारे सम्यक्त्व को दृढ़ करते हैं और संसार के सम्बन्धों के प्रति हमारे ममत्व या आकर्षण को घटाते हैं। स्वाध्याय योग से जीवन में विवेक प्रकट होता है, बढ़ता है।

अतः इन तीनों के आधार पर संयम-जीवन प्राणवन्त, जीवन्त बनता है। अतएव इन तीनों अंगों के प्रति सतत, उपयोगपूर्वक व्यवहार करें।

यही तीनों संयम जीवन को जीवन्त रखने के सम्यक् और स्थिर उपाय हैं। इन तीनों के अभाव में तप-त्याग आदि अन्य उपाय आभास रूप बनकर रह जाते हैं। वे विश्वस्त नहीं बनते। सम्यक्त्व भी नहीं टिक पाता है। अतः साधक को उपर्युक्त तीनों के प्रति प्रयत्नशील बने रहना चाहिए।

प्रश्न- संयम जीवन का हार्द-मर्म-रहस्य क्या हो सकता है?

उत्तर- संयम जीवन का हार्द शुद्ध आज्ञायोग है। इसके लिए सम्भव चातुर्य- होशियारी वाली बुद्धि जरूरी है। इस बात को समझने के लिए उपदेशपद और उपदेशरहस्य ग्रन्थ देखें। उपदेशरहस्य का अनुवाद भी प्रकाशित हो चुका है। यथार्थ में ये दोनों ग्रन्थ शुद्ध आज्ञायोग समझने के लिए अनिवार्य हैं। ऐसे शुद्ध आज्ञायोग युक्त संयम जीवन की अनुभूति दीक्षा के प्रथम दिन से ही अनुभव की जा सकती है। बालक भी इसकी अनुभूति कर सकता है। गुरु या आचार्य, जिनकी निश्रा में स्वयं हों, उनके प्रति वंचना के भाव के बिना, हार्दिक समर्पण भाव के साथ, उनके कहे अनुसार व्यवहार की वृत्ति ही संयम-जीवन का रहस्य है। शास्त्राभ्यास होने के बाद भी गुरु भगवंत- निश्रादाता की उपस्थिति में, उपर्युक्त व्यवहार ही होना चाहिए। उनसे वियोग हो जाए बाद में शास्त्र- आज्ञानुसार, द्रव्य आदि के सापेक्ष भाव को नज़र में रखकर औचित्यपूर्वक व्यवहार ही संयम जीवन का सार है। विधिपूर्वक उल्लासमयी क्रिया से युक्त होकर जैनागम के स्मरण-चिन्तन-परिशीलन से ही संयम जीवन की सच्ची अनुभूति होती है। क्रियापूर्वक ज्ञान से या ज्ञानपूर्वक की गई क्रिया से ही सच्ची अनुभूति होती है। मात्र क्रिया करते रहने से और ज्ञान की उपेक्षा करने से अथवा ज्ञानाभ्यास में डूबे रहकर एवं क्रिया के प्रति लापरवाही दिखाकर सच्चे संयम जीवन का स्वाद कभी भी पाया नहीं जा सकता है।

इस प्रकार से गुरु की आज्ञा के साथ, संयम को संभालते हुए, शास्त्राभ्यास में प्रयत्न करने वाले को चारित्र का संवेदन होता है। यहाँ संयम जीवन की रक्षा हेतु सम्भावित दोषों से बचने का प्रयत्न और यतनाशील होना बहुत जरूरी है।

शोधालेख

चतुर्विध संघ और प्रजातान्त्रिक मूल्य

डॉ. श्वेता जैन

चतुर्विध संघ की स्थापना तीर्थंकर द्वारा की जाती है। इसी श्रमणीय परम्परा का निर्वहन 24 वें तीर्थंकर भगवान् महावीर ने मध्यम पावा के महासेन वन में वैशाख शुक्ला एकादशी को श्रुतधर्म और चारित्रधर्म की शिक्षा देकर साधु-साध्वी, श्रावक एवं श्राविका रूप चतुर्विध संघ की स्थापना कर किया। श्रुतधर्म और चारित्र धर्म की देशना के पीछे रहे प्रयोजन को बतलाते हुए प्रश्नव्याकरण सूत्र में कहा है- **''सव्वजगजीवरक्खण-दयट्ठयाए पावयणं भगवया सुकहियं''**[1] अर्थात् जगत् के समस्त प्राणियों की रक्षा और दया के लिए ही भगवान् की धर्मदेशना प्रस्फुटित हुई थी। यह चतुर्विध संघ की स्थापना का मूल सूत्र रहा है। सर्वहितकारी यह सूत्र प्रजातन्त्र की आधारशिला है।

महावीर के समय में समाज वर्ण-व्यवस्था में पूर्णतः जकड़ा हुआ था। शूद्रों के साथ बहुत अभद्र व्यवहार किया जाता था। दास प्रथा इतनी व्यापक तथा दयनीय थी कि मनुष्य मनुष्य का क्रीत दास बना हुआ था, एक व्यक्ति दूसरे के अधीन था, स्वामी का सेवक पर सम्पूर्ण अधिकार था। दास, दासी, नारी सभी का उसी प्रकार परिग्रह किया जाता था जैसे वस्तुओं, पदार्थों और पशुओं का परिग्रह किया जाता है। उस युग में जातीय भेदभाव की खाई बहुत चौड़ी थी। सामाजिक और आर्थिक वैषम्य के कारण चतुर्दिक् अशान्ति और कलह का वातावरण था। यह देखकर महान् क्रान्तिद्रष्टा महावीर ने जन्म के आधार पर मानी गई वर्ण व्यवस्था का घोर विरोध किया और कहा-

कम्मुणा बम्भणो होइ, कम्मुणा होइ खत्तिओ।
वइस्सो कम्मुणा होइ, सुद्दो हवइ कम्मुणा।।[2]

अर्थात् कर्म के आधार पर कोई ब्राह्मण, कोई क्षत्रिय, कोई वैश्य और कोई शूद्र होता है।

महावीर ने निम्न जाति के लोगों को अपने संघ में दीक्षित कर उनको सामाजिक महत्त्व प्रदान किया। उत्तराध्ययन में हरिकेशबल नामक चाण्डाल के गुण सम्पन्न मुनि होने का उल्लेख है-

सोवागकुलसंभूओ गुणुत्तरधरो मुणी।
हरिएसबलो नाम आसि भिक्खू जिइन्दिओ।।[3]

इस प्रकार व्यक्ति की स्वतन्त्रता और सभी के प्रति समानता का व्यवहार चतुर्विध संघ-तन्त्र में दृष्टिगोचर होता है। स्वतन्त्रता और समानता के ये दोनों नियम प्रजातान्त्रिक मूल्यों की स्थापना करते हैं।

संघ में किसी को दीक्षित करने से पूर्व चतुर्विध संघ की अनुमति का विधान है। यह नियम प्रजातान्त्रिक मूल्यों को चतुर्विध संघ में अनुप्राणित करता है। मेघकुमार के प्रव्रज्या ग्रहण करने के संकल्प को सुनकर भगवान् का यह कथन-**"अहासुहं देवाणुप्पिया! मा पडिबंधं करेह"**[4] हे देवानुप्रिय! जिससे तुझे सुख उपजे वह कर, विलम्ब न कर। यह कथन व्यक्ति के स्वतन्त्र निर्णय को, अनाग्रहता को प्रकट करता है। किसी आग्रह से ग्रसित न होना प्रजातन्त्र का महत्त्वपूर्ण पहलू है।

प्रजातान्त्रिक मूल्य स्वतन्त्रता, वैचारिक उदारता, समानता, सहिष्णुता, समता, सापेक्षता और दूसरों को निकट से समझने की मनोवृत्ति के विकास पर अवलम्बित है। महावीर के उपदेशों में ये सभी मूल्य अवस्थित हैं। अहिंसा का सिद्धान्त प्राणिजगत् की स्वतन्त्रता का परिचायक है- **"अहिंसा निउणा दिट्ठा सव्वभूएसु संजमो"** अर्थात् प्राणिमात्र के प्रति जो संयम है, वही पूर्ण अहिंसा है। जब तक जीवन में असंयम रहेगा तब तक हिंसा व परतन्त्रता रहेगी। संयम से पराङ्मुख रहना जीवन की स्वतन्त्रता-सुख-शान्ति से विमुख होना है।

प्रजातन्त्र में अपने मत को, मान्यता को जितना महत्त्व देते हैं उतना ही दूसरों के मत को, मान्यता को महत्त्व देने की आवश्यकता होती है। यदि इसके विपरीत आचरण करेंगे तो प्रजातन्त्र का गला घुट जाएगा- उसकी हत्या हो जायेगी। यहाँ सभी को एक ही मंच पर खड़े होकर अपने विचार प्रकट करने की स्वतन्त्रता है। यह अनेकान्तवाद को स्वीकार करने पर ही संभव हो सकता है। इस सम्बन्ध में उपाध्याय यशोविजय की ये पंक्तियाँ महत्त्वपूर्ण हैं- "सच्चा अनेकान्तवादी किसी दर्शन से द्वेष नहीं करता, वह सम्पूर्ण दृष्टिकोण को उसी प्रकार वात्सल्य दृष्टि से देखता है जैसे कोई पिता अपने पुत्रों को। माध्यस्थ भाव ही शास्त्रों का गूढ रहस्य है, यही धर्मवाद है।"[5] जब विचारों में इस प्रकार माध्यस्थ भाव रहेगा या वैचारिक उदारता रहेगी तो हम दूसरों के विचारों और मतों को सहिष्णुता से सुनने में समर्थ होंगे।

प्रजातन्त्र में सामाजिक ऐक्य को प्राथमिकता दी जाती है, मानव जाति में ऐक्य की प्रतिष्ठापना प्रजातन्त्र है। महावीर ने जब यह कहा कि जिसे तू मारना चाहता है, वह तू ही है,[6] तो वह समत्व का ही उच्चादर्श प्रस्तुत करता है। इसमें आत्मा के एकत्व पर ही बल दिया गया है। महावीर ने अपने समवसरण में किसी भी सम्प्रदाय या वर्ग के प्रवेश पर कोई

प्रतिबन्ध नहीं लगाया था। उनका धर्म मानव जाति का धर्म है, किसी सम्प्रदाय या जाति विशेष का धर्म नहीं। वह आत्मा की पवित्र गंगा है, जिसमें सब साथ मिलकर निमज्जन कर सकते हैं- वह सभी के पाप-कलुष को धोने वाला निर्मल जल है। महावीर सम्प्रदायातीत हैं और प्रजातन्त्र भी सम्प्रदायातीत है।

चतुर्विध संघ के परिप्रेक्ष्य में प्रजा से तात्पर्य जगत् के सभी जीवों से है और 'तन्त्र' से अभिप्राय है ऐसे नियम, जिनमें सभी जीवों के हित का चिन्तन हो। प्रजातन्त्र का यह स्वरूप श्रमणचर्या और श्रावकचर्या दोनों में परिलक्षित होता है। श्रमण धर्म में पंच महाव्रत का पालन, पाँच समिति-तीन गुप्ति, दस प्रकार के यति धर्म, बारह प्रकार के तप, दस प्रकार की समाचारी, बाईस परीषह एवं षडावश्यक सम्मिलित हैं तथा श्रावकधर्म में अणुव्रतों का पालन, सप्त कुव्यसन त्याग, 35 मार्गानुसारी गुण, षडावश्यक, पन्द्रह कर्मादान का त्याग आदि निहित हैं। चतुर्विध संघ द्वारा इन नियमों की अनुपालना से स्वतः ही जीवों का हित होता है। इस प्रकार सर्वहित में निहित प्रजातन्त्र की चतुर्विध संघ में सिद्धि होती है।

संदर्भ-

1. प्रश्नव्याकरण सूत्र, 2.1.7
2. उत्तराध्ययन, 25.33
3. उत्तराध्ययन, 12.1
4. ज्ञाताधर्मकथा, 1.115
5. द्रष्टव्य- भगवान् महावीर की प्रजातान्त्रिक दृष्टिः- लेखकः डॉ. निजामुद्दीन, तुलसी प्रज्ञा (जनवरी-मार्च 1977), जैन विश्व भारती, लाडनूँ, पृ. 62
6. आचारांग, 1.5.5

-अतिथि व्याख्याता, संस्कृत विभाग, जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय, जोधपुर (राज.)

परमेष्ठी वंदना

मधुरव्याख्यानी श्री गौतममुनिजी म.सा.

देव अरिहन्त शरण उत्तम दिव्य जिनकी देशना,
हे वीतरागी सिद्ध प्रभु तुझसे मिलूँ यह प्रार्थना।
आचार्य संघ के सारथी उवज्झाय मुझको ज्ञान दो,
निर्ग्रंथ गुरुओं से विनय, निज की मुझे पहचान दो।।
वन्दना परमेष्ठी को करता हूँ, अन्तर्भाव से,
बल बुद्धि दो ऐसी प्रभो! बचता रहूँ दुर्भाव से।
'गौतम' सी हो श्रद्धा घनी, गुरु भक्ति मेरा प्राण हो,
बढ़ता रहूँ निज लक्ष्य पे, आगम वचन प्रमाण हो।।

-संकलन : श्री पारसमल गिडिया, जोधपुर (राज.)

शोधालेख

जैन-बौद्ध परम्परा में आध्यात्मिक विकास की अवस्थाएँ

डॉ. दीपा जैन

आत्मिक शक्तियों के अपकर्ष और उत्कर्ष के श्रेणीक्रम की जो स्थितियां या कसौटी परक आधार हैं उन्हें जैन दर्शन में गुणस्थान कहा जाता है। गुणस्थान जीव की आध्यात्मिक विकास यात्रा के सोपानों की स्थिति का एक विश्लेषण है

'गुणस्थान' शब्द का सीधा सम्बन्ध प्रायः जैन दर्शन से माना जाता है, किन्तु भारत के प्राय: सभी प्रमुख दर्शनों में आध्यात्मिक विकास की बात अपने-अपने तरीके से की गई है। बौद्ध धर्म का विकास जैन आध्यात्मिक परम्परा के समानान्तर रहा है। इसमें कितनी समानता देखने को मिलती है और कितनी विविधता- यह जानना तर्कसंगत लगता है। इससे गुणस्थान की अवधारणा की सार्वभौमिक स्वीकार्यता पुष्ट होती है।

जैन दर्शन परम्परा में 14 गुणस्थान-

1. **मिथ्यात्व गुणस्थान-** इस स्थिति में जीव यथार्थ बोध से वंचित रहता है तथा मिथ्यात्व व सम्यक्त्व के मध्य भेद नहीं कर पाता। सत्य-असत्य को न पहचानते हुए वह दिग्भ्रमित व्यक्ति की तरह लक्ष्य से दूर भटकता रहता है। पर पदार्थों में सुख की खोज व आनन्दानुभूति करता है। अज्ञानता के चलते वह आन्तरिक सुख अर्थात् परमानन्द का बोध व विचार नहीं कर पाता है। विवेकशून्यता का प्रभाव उसके आचरण में छा जाता है। इस गुणस्थान में अवस्थित आत्माएं दो प्रकार की मानी गई हैं- (अ) भव्य आत्मा (आ) अभव्य आत्मा।
2. **सास्वादन गुणस्थान-** द्वितीय क्रम में स्थित यह गुणस्थान विकास क्रम का परिणाम न होकर पतनोन्मुख अवस्था का प्रतिनिधित्व करता है। अर्थात् जब आत्मा चतुर्थ गुणस्थान से पतित होकर तृतीय व द्वितीय गुणस्थानों से गुजरती है, तो यह एक मध्यावस्था है जिसमें जीव को न तो सम्यग्दृष्टि कहा जा सकता है और न ही मिथ्यादृष्टि। ऐसी दशा में जीव सम्यक्त्व से च्युत तो हो चुका है, किन्तु अभी मिथ्यात्व को प्राप्त नहीं हुआ है। यह मध्यावधि काल क्षणिक (छः आवलिका) होता है, जैसे वृक्ष से टूटकर फल का जमीन तक पहुँचने का मध्यकाल।
3. **मिश्र या सम्यक्मिथ्यादृष्टि गुणस्थान-** यह गुणस्थान भी जीव के चतुर्थ व 11वें

गुणस्थान से पतनोन्मुख हो जाने पर पश्चात्वर्ती प्रथम सोपान है। यहाँ यदि उसका झुकाव वासनात्मक पक्ष की ओर होता है तो वह जीव पतित होकर अंततः प्रथम मिथ्यादृष्टि गुणस्थान में पहुँचता है तथा इसके विपरीत यदि निर्णयात्मक रुझान नैतिक आचरण या सम्यक्त्व व्यवहार के अवबोधन की ओर दृढ़ होता है तो वह चतुर्थ गुणस्थान में चला जाता है। अन्तर्मुहूर्त के इस वैचारिक संघर्ष में यदि पाशविक शक्तियाँ जीव पर हावी हो जाती हैं तो वह मिथ्यादृष्टि हो जाता है। इस अवस्था में न जीव मरता है, न संयम और न देश संयम को प्राप्त होता है, न ही उसमें जीव के मारणान्तिक समुद्घात होता है।

4. **अविरत सम्यग्दृष्टि गुणस्थान–** वास्तव में यह जीव की आध्यात्मिक विकास यात्रा का प्रथम चरण है, जिसमें आत्मा को सत्–असत् एवं आध्यात्मिक आचरण का बोध होता है। इस गुणस्थान में जीव अच्छे–बुरे का ज्ञान होते हुए भी बुरे से पृथक् नहीं रह पाता है जैसा कि महाभारत के वर्णन में देखने को मिलता है। इस अवस्था में जीव दर्शनमोहनीय का क्षय, क्षयोपशम या उपशम कर लेता है, किन्तु चारित्रमोहनीय का क्षय शेष हो तो इसे सम्यग्दृष्टि जीव कहा जाता है।

5. **देशविरत सम्यग्दृष्टि गुणस्थान–** आध्यात्मिक विकास यात्रा का यह पाँचवा गुणस्थान आध्यात्मिक आचरण अवस्था की प्रथम सीढ़ी है। देशविरत गुणस्थान में साधक यथाशक्ति सम्यक् कर्तव्य पथ पर चलना आरम्भ कर देता है। देशविरत का आशय है– सांसारिक वस्तुओं के उपभोग में मर्यादाओं का पालन, विवेकपूर्ण तरीके से आवश्यकतानुरूप व मितव्ययतापूर्वक साधन–संसाधनों का ममत्व रहित उपयोग करते हुए साधना में रत रहना। यदि साधक प्रमाद के वशीभूत नहीं होता है तो आगे के गुणस्थानों में बढ़ जाता है।

6. **प्रमत्तसंयत या सर्वविरति सम्यग्दृष्टि गुणस्थान–** सर्वविरति गुणस्थान में जीव हिंसादि अनैतिक आचरण का पूर्णरूप से त्याग करके सम्यक्त्व के मार्ग पर दृढ़ता से बढ़ना आरम्भ करता है, उसमें कषायादि परिणामों के बाह्य प्रकटीकरण में न्यूनता आ जाती है।

7. **अप्रमत्तसंयत गुणस्थान–** इस गुणस्थान में वे सजग साधक आते हैं जो देह में रहते हुए भी देहातीत भाव से युक्त होते हैं। इस गुणस्थान में साधक का निवास अतिअल्प होता है अर्थात् कोई भी साधक 48 मिनट से अधिक इस स्थिति में नहीं रह पाता, क्योंकि दैहिक उपाधियां उसे विचलित कर देती हैं। यदि देहातीत भाव की अवधि इससे अधिक हो जाती है तो वह आध्यात्मिक विकास की अग्रिम श्रेणियों में चला

जाता है।

8. **अपूर्वकरण गुणस्थान–** इस अवस्था में पहुँचकर आत्मा कर्मावरण के हल्के हो जाने से विशिष्ट आध्यात्मिक आनन्द की अनुभूति करता है। ऐसी स्थिति पूर्व में न हुई, इसलिए इसे अपूर्व कहा जाता है। विकसित आत्मशक्ति के कारण उसके नवीन कर्मों का बन्ध भी अल्प मात्रा में ही होता है। इस अवस्था में साधक आत्मविश्वास से इतना भर जाता है कि वह मोक्ष को अपने अधिकार क्षेत्र की वस्तु समझने लगता है।

9. **अनिवृत्तिकरण (बादर सम्पराय) गुणस्थान–** साम्पराय=चारित्र मोहनीय कषाय, बादर=स्थूल। मोह के सूक्ष्म स्वरूप की उपस्थिति के चलते इसे बादर साम्पराय गुणस्थान कहा जाता है। बादर (स्थूल) कषायों का क्षय या उपशम इस गुणस्थान का शाब्दिक अर्थ है। इसका काल एक अन्तर्मुहूर्त का है। जब जीव केवल (9 में से 6 नोकषाय भाव–हास्य, रति, अरति, भय, शोक व जुगुप्सा को छोड़कर) बीजरूप (संज्वलन) लोभ को छोड़कर शेष समस्त काषायिक भाव विनष्ट कर देता है या उपशम कर लेता है तब उसे यह अवस्था प्राप्त होती है।

10. **सूक्ष्म सम्पराय गुणस्थान–** इस गुणस्थान में शेष रह जाता है मात्र सूक्ष्म लोभ। लोभ का सूक्ष्म अंश शेष रहने के कारण ही इसका नाम सूक्ष्म सम्पराय है।

11. **उपशान्त मोह गुणस्थान–** संज्वलन लोभ के उपशम से जीव इस गुणस्थान में पहुँचता है। उपशम श्रेणी का जीव मोह का उपशमन करके 11वें गुणस्थान में आरूढ होता है और वीतरागमय आत्म स्वरूप का अनुभव करता है, किन्तु मोहनीय कर्म एक अन्तर्मुहूर्त समय पर्यन्त से अधिक उपशान्त नहीं रहता और आत्मा को नीचे के गुणस्थान में उतार देता है। इस गुणस्थान की स्थिति एक अन्तर्मुहूर्त काल की है। यदि जीवात्मा इस गुणस्थान में रहते हुए आयुष्य पूर्ण कर लेता है तो वह सम्यग्दर्शनयुक्त अनुत्तर विमान में उत्पन्न होता है। इसके विपरीत आयुष्य शेष होने पर उसी क्रम में पतन को प्राप्त होता है जिस क्रम में आरोहण किया था (मिथ्यात्व गुणस्थान तक)।

12. **क्षीणमोह गुणस्थान–** जो साधक क्षय विधि के द्वारा सूक्ष्म लोभ को भी नष्ट कर देते हैं, वे 10वें गुणस्थान से 11वें में न जाकर सीधे 12वें गुणस्थान में पहुँचते हैं, वहाँ से पतन नहीं होता। इस श्रेणी का साधक 28 कर्म प्रकृतियों का क्षय कर चुका होता है इसलिए इस गुणस्थान को क्षीणमोह गुणस्थान कहा जाता है। यह नैतिक व चारित्रिक विकास की पूर्ण अवस्था है, जहाँ नैतिक–अनैतिकता के मध्य संघर्ष समाप्त हो जाता है। आध्यात्मिक पूर्णता की यह अवस्था यथाख्यात चारित्र है।

13. **सयोगि केवली गुणस्थान–** इस गुणस्थान में साधक साधक नहीं रहता, क्योंकि उसके लिए साधना हेतु अब कुछ शेष नहीं रह जाता है। आत्म पुरुषार्थ से वह चार घाती कर्मों- ज्ञानावरण, दर्शनावरण, मोहनीय व अन्तराय का तो क्षय कर चुका है और अब उसके चार अघाती कर्मों-आयु, नाम, गोत्र व अन्तराय का क्षय देह के परित्याग होने तक शेष रहता है।

14. **अयोगि केवली गुणस्थान–** इस गुणस्थान में रहने की कालावधि अति अल्प है। पाँच ह्रस्व स्वरों अ, इ, उ, ऋ,लृ के उच्चारण जितने समय तक यह गुणस्थान रहता है। इस अवस्था में जीव के समस्त कायिक योगों का निरोध हो जाता है। इसकें बाद की स्थिति को विचारकों ने शिवपद, मोक्ष एवं निर्वाण कहा है।

बौद्ध दर्शन में आध्यात्मिक विकास के सोपान

"मुक्ति के लिए दूसरा आश्रय मत ढूंढो। किसी की कृपा पर निर्भर रहे बिना अप्रमत्त होकर मुक्ति हेतु प्रयत्नशील रहो, पवित्र से पवित्र जीवन बिताओ तथा नियमित रूप से ध्यान व समाधि करो"- भगवान् बुद्ध के इन उपदेशों को स्वीकार करने वाला यह बौद्ध दर्शन हीनयान और महायान सम्प्रदाय में विभाजित है। दोनों का लक्ष्य व साधनाक्रम आपस में नितान्त भिन्न है। हीनयान का आदर्श है- अर्हत् और महायान का आदर्श है बोधिसत्त्व। अर्हत् वह साधक है जो व्यक्तिगत निर्वाण के लिए सदा उद्योगशील रहता है, जबकि बोधिसत्त्व का लक्ष्य व्यक्तिगत स्वार्थ की जगह समूचे प्राणियों के परमार्थ का होता है। इसलिए वे स्व निर्वाण से संतुष्ट न होकर अधिकतम लोगों को निर्वाण का अनुभव कराना चाहते हैं। हीनयान में निर्वाण को दुःखनिरोध रूप व महायान में आनन्दरूप माना जाता है।

हीनयान में आध्यात्मिक विकास– बौद्ध धर्म में भी संसारी जीवों की दो श्रेणियां हैं- 1.पृथग्जन- जो मिथ्यादृष्टि जीव की तरह हैं तथा 2. आर्य- जो सम्यग्दृष्टि सहित हैं। पृथग्जन की श्रेणी को पुनः दो भागों में बाँटा गया है, यथा- (अ) अंध पृथग्जन भूमि- जो मिथ्यात्व या अज्ञान की द्योतक है तथा (ब) कल्याण पृथग्जनभूमि- जिसे मज्झिम निकाय में धर्मानुसारी या श्रद्धानुसारी भूमि कहा है। इस भूमि का साधक निर्वाण भूमि की ओर अभिमुख तो होता है, किन्तु उसे प्राप्त नहीं कर पाता । हीनयान सम्प्रदाय मानता है कि आर्य या सम्यक्त्व पर आरूढ़ होकर निर्वाण सिद्धि की प्राप्ति पथ पर निम्न चार भूमियों से होकर गुजरना होता है, यथा- स्रोतापन्न भूमि, सकृदागामी भूमि, अनागामी भूमि व अर्हत् भूमि। इनके लक्षणों का विस्तृत विवरण इस प्रकार है-

(अ) स्रोतापन्न भूमि– स्रोतापन्न का शाब्दिक अर्थ है- निर्वाण के स्रोत में आपन्न (पतित)। साधना या कल्याण मार्ग पर बढ़ने वाला यह साधक निम्न संयोजन या बंध का

क्षय करता है- (अ) सत्काय दृष्टि- देह में ममत्व, शरीर को आत्मा मानना (स्वकाये दृष्टिः -चन्द्र कीर्ति) (ब) संदेहात्मकता तथा (स) शीलव्रत परामर्श- व्रत-उपवास में आसक्ति या मात्र कर्म-काण्ड में रुचि। इन मिथ्या क्रियाओं की समाप्ति पर साधक इस भूमि से पतित नहीं होता और इस भूमि में रहते हुए चार अंगों से सम्पन्न हो जाता है- (1) बुद्धानुस्मृति- बुद्ध में निर्मल श्रद्धा से युक्त, (2) धर्मानुस्मृति- धर्म में निर्मल श्रद्धा से युक्त, (3) संघानुस्मृति- संघ में निर्मल श्रद्धा से युक्त तथा (4) शील- समाधि से युक्त हो जाता है। इनके चलते साधक के आचार-विचार दोनों शुद्धता को प्राप्त होते हैं। वह अधिकतम सात जन्मों में मोक्ष प्राप्त कर लेता है।

जैन दर्शन में वर्णित चतुर्थ सम्यग्दृष्टि से लेकर सातवें अप्रमत्त संयत गुणस्थान तक की तुलना स्रोतापन्न भूमि से की जा सकती है। वासना की विमुखता, शुद्ध-सम्यक् विचार, नैतिक आचार, तीव्रतम क्रोधादि कषायों का क्षय, उपशम या क्षय आदि घटकों की कसौटी पर इन दोनों के मध्य समानता दिखती है। स्रोतापन्न अवस्था में कामधातु (वासनाएँ) तो समाप्त हो जाती हैं, लेकिन रूप धातु (आस्रव अर्थात्, राग-द्वेष व मोह) शेष रहतीं हैं।

(ब) सकृदागामी भूमि- अनागामी भूमि में जाने से पूर्व साधक आस्रव-क्षय अर्थात् कामराग (वासना) तथा द्वेष का क्षय करता है। आस्रव निरोध ही साधक को सकृदागामी भूमि पर स्थापित करता है।

जैन दर्शन के अनुसार यदि साधक इन गुणस्थानों में मृत्यु को प्राप्त होता है तो तीसरे जन्म में निर्वाण को प्राप्त कर लेता है जबकि बौद्ध दर्शन के अनुसार सकृदागामी भूमि के साधना काल में मृत्यु को प्राप्त होने पर साधक एक ही जन्म धारण करता है। यदि वह अगली अवस्था अनागामी या क्षीणमोह को प्राप्त होता है तो इसी भव में निर्वाण प्राप्त करता है, इसे लेकर दोनों में मतैक्य दिखता है।

(स) अनागामी भूमि- बौद्ध विचारधारा के अनुसार इस भूमि को प्राप्त साधक यदि भावी आध्यात्मिक विकास का प्रयास नहीं करता है, तो मृत्यु होने पर ब्रह्म लोक में जन्म लेकर सीधा निर्वाण को प्राप्त होता है। जबकि आगे बढ़ने वाला साधक शेष पाँच उड्ढभागीय संयोजन-रूप-राग, अरूप राग, मान, औद्धत्य और अविद्या का नाश कर अंतिम अर्हदवस्था में प्रवेश की योग्यता हासिल कर लेता है।

सामान्य रूप से आठवें से बारहवें गुणस्थान तक की अवस्थाएं इसमें आ जाती हैं।

(द) अर्हदवस्था- दसों बन्धनों को तोड़कर एक भिक्षु कृतकाय (उसके लिए कुछ भी करने को शेष नहीं रहता तथापि संघ सेवा हेतु वह क्रियाशील रहता है) हो जाता है। यह जीवन्मुक्ति एवं निर्वाण की अवस्था है, इसकी तुलना सयोग केवली गुणस्थान से की जा

सकती है।

महायान में आध्यात्मिक विकास– महायान सम्प्रदाय में दस भूमियों का वर्णन है जो मूलत: क्रमिक आध्यात्मिक विकास की आवधारणा पर आधारित है। महायान सम्प्रदाय के अलग-अलग सूत्रों में नामों की विभिन्नता देखने को मिलती है। यथा- दशभूमिशास्त्र के अनुसार- (1) प्रमुदिता (2) विमला (3) प्रभाकरी (4) अर्चिष्मति (5) सुदुर्जया (6) आभिमुखी (7) दूरंगमा (8) अचला (9) साधुमति और (10) धर्ममेघा।

महायान के संक्रमण काल में लिखे गये महावस्तु नामक ग्रन्थ के अनुसार- (1) दुरोहा (2) बद्धमान (3) पुष्प मंडिता (4) रुचिता (5)चित्त विस्तार (6) रूपमती (7) दुर्जया (8) जन्मनिदेश (9) यौवराज और (10) आभिषेक।

असंग महायान सूत्रालंकार में प्रथम भूमि का नाम अधिमुक्तिचर्या भूमि कहा गया है, किन्तु अंतिम बुद्धभूमि या धर्ममेघा नहीं बताई गई है। लंकावतार में धर्ममेघा और बुद्ध (तथागत) भूमि को अलग-अलग बताया गया है।

उपर्युक्त वर्णित भूमियों को संकलित करके आध्यात्मिक विकास क्रम की दृष्टि से निम्नानुसार स्पष्ट किया जा सकता है-

1. **अधिमुक्तचर्या भूमि**– प्रथम भूमि की तुलना जैन दर्शन के चतुर्थ गुणस्थान से की जा सकती है। इस भूमि का साधक पुद्गल नैरात्म्य का ज्ञान करता है, वैसे ही जैसे सम्यग्दृष्टि जीव में भेदज्ञान होता है।
2. **प्रमुदिता**– यह शील विशुद्धि की प्राथमिक अवस्था है, जिसे बोधिचित्त प्रस्थान भी कहा जाता है। जैन परम्परा में इसकी तुलना पाँचवें और छठे गुणस्थान से की जा सकती है, जिसमें चारित्र विशुद्धि हेतु संयम पालना होता है। साधक को बोध रहता है कि उसे नियत कर्मों का फल भोगना ही है, अत: शुद्ध चित्त व शील (चर्या) को संतुलित बनाये रखने का पुरुषार्थ यहाँ होता है।
3. **विमला**– यहाँ साधक (बोधिसत्त्व) अनैतिक आचरण से पूर्णतया मुक्त हो जाता है। दु:खशीलता के सम्पूर्ण नष्ट होने से परम शक्ति अर्थात् विमलमति का प्राकट्य विमलावस्था है। इसकी तुलना अप्रमत्तसंयत नामक सातवें गुणस्थान से की जा सकती है।
4. **प्रभाकरी**– इस अवस्था में साधक समाधिशक्ति से अपने अलौकिक ज्ञान का प्रकाश लोकहितार्थ संसार में फैलाता है। इसमें भी सातवें गुणस्थान के समकक्ष विशिष्टताओं का समावेश दृष्टिगत होता है।

5. **अर्चिष्मती**– इस भूमि में क्लेशावरण व ज्ञेयावरण (द्वेष-राग) का दाह होता है इसलिए इसकी तुलना अपूर्वकरण नामक आठवें गुणस्थान से की जा सकती है। इस भूमि में साधक वीर्य पारमिता का अभ्यास करता है।
6. **सुदुर्जया**– इस भूमि का साधक ध्यान पारमिता का अभ्यास करता है। जैन दर्शन में इसकी तुलना आठवें से ग्यारहवें गुणस्थान के साथ की जा सकती है। यह अत्यन्त दुष्कर कार्य है।
7. **अभिमुखी**– इस भूमि में प्रज्ञा का उदय होने से साधक निर्वाणोन्मुख हो जाता है उसके लिए संसार व निर्वाण में भेद नहीं रहता। पूर्णता की इस स्थिति की तुलना सूक्ष्म-साम्पराय नामक 10 वें गुणस्थान से की जा सकती है।
8. **दूरंगमा**– यह साधक की निर्वाण प्राप्ति की योग्यता को दर्शाती है। यह अवस्था साधक के मन से संकल्प-विकल्प व पक्षवादिता को दूर कर निर्मल शून्यता से साक्षात्कार कराती है, जो साधना की पूर्णता का द्योतक है। इसकी तुलना 12वें गुणस्थान से की जा सकती है।
9. **अचला**– संकल्प शून्य, विषयरहित, समाधियुक्त साधक की यह अचला अवस्था है। यहाँ चित्त की चंचलता समाप्त हो चुकी होती है । इसकी तुलना सयोगी केवली नामक 13वें गुणस्थान से की जा सकती है।
10. **साधुमती**– यहाँ बोधिसत्त्व में समस्त प्राणियों के प्रति निर्मल भाव, विश्लेषणात्मक अनुभव करने वाली बुद्धि की प्रधानता रहती है। यह अवस्था कमोबेश 13 वें गुणस्थान से तुलनीय है।
11. **धर्ममेघा**– मेघ का अर्थ यहाँ आकाश है। इसमें समाधि धर्माकाश को प्राप्त कर लेती है। सयोगी केवली की भाँति जिन समवसरण जैसी स्थिति बौद्ध दर्शन की धर्ममेघा अवस्था में दृष्टिगत होती है।

उपसंहार

जैन तथा बौद्ध दोनों ही दर्शनों में आध्यात्मिक विकास प्रमुख है तथा इनका अंतिम लक्ष्य भी निर्वाण है। दोनों का ही यह मानना है कि आत्मा के इस नैतिक विकास के आयामों में विशुद्धता का प्रमाण बढ़ता जाता है। बौद्ध दर्शन कारणवादी है। इस मान्यता के अनुसार कारण के बिना कोई घटना घटित नहीं हो सकती। इस दर्शन में कर्मवाद, क्षणिकवाद, आत्मा की अनित्यता, ईश्वर की सत्ता में अविश्वास तथा निर्वाण का आदर्शवाद आदि सिद्धान्तों का प्रभाव (प्रतीत्य समुत्पाद का नियम) स्पष्ट देखा जा सकता

है। आचार्य हरिभद्र ने महायान के बोधिसत्त्व पद की तुलना सम्यग्दृष्टि अवस्था से की है। बोधिसत्त्व का अर्थ है- ज्ञान प्राप्ति का इच्छुक। जहाँ जैन परम्परा (दिगम्बर और श्वेताम्बर) में गुणस्थान की चौदह भूमियां बताई गईं हैं, वहाँ बौद्ध परम्परा में मतवैभिन्य है।

संदर्भ-

1. बा. ब्र. मूलशंकर देसाई (वी.नि.सं.2482 वि.स.2013)- **गुणस्थान**, चाकसू का चौक, जयपुर राजस्थान।
2. आचार्य श्री रत्नशेखर सूरीश्वरजी म.सा. (2003) **चौदह गुणस्थान**, दिव्य संदेश प्रकाशन ट्रस्ट, मुम्बई।
3. डॉ. सागरमल जैन (1996)-**गुणस्थान सिद्धान्त**- एक विश्लेषण, पार्श्वनाथपीठ, वाराणसी।
4. एस. चाँद मोहम्मद एवं डॉ. इकबाल फातिमा- **भारतीय संस्कृति की विरासत**, बुक इन्क्लेव. जयपुर (भारत)
5. आचार्य नरेन्द्र देव- **बोधिपंजिका**, उद्धृत् बौद्ध दर्शन

द्वारा- डॉ. लोकेश जैन, फैकल्टी- सी. एस. आर.एम.,गुजरात विद्यापीठ, ग्रामीण परिसर-राँधेजा-382620 जिला-गांधीनगर (गुजरात)

हीरा गुरुवर के चरणों में

श्री योगेश बाबू जैन

(तर्ज:- दुनियां में देव अनेकों हैं....।)

हीरा गुरुवर के चरणों में, मैं नित उठ शीष झुकाता हूँ,
मेरे मन की कलि खिल जाती है, जब दर्श तुम्हारा पाता हूँ।।

तेरे चरणों में हो वास मेरा, नित भक्ति करूँ दिन-रात हीरा,
मेरी नैय्या पार लगा देना, आशीष का वर्षण चाहता हूँ।।

मेरा कोई नहीं है तेरे बिना, गुरु तेरा ही इक सहारा है,
जब से जोड़ी है प्रीत प्रभु, बस तेरा ही ध्यान लगाता हूँ।।

तेरी महिमा को जिसने जाना, गुरु ब्रह्मा से बढ़कर माना,
तुम जीओ हजारों साल गुरुवर, यही भव्य भावना भाता हूँ।।

तू देवाधिदेव कहाता है, भक्तों के लिए सुखदाता है,
'योगेश' तुम्हारे चरणों में, नित उठ शीष झुकाता है।।

-1/603, हाउसिंग बोर्ड, सवाईमाधोपुर (राज.)

धारावाहिक

लगन की वेला (4)

आचार्य श्री उमेशमुनि जी 'अणु'

श्रद्धालुजनों की भक्ति

सूर्य अस्ताचल की ओर जा रहा था। धूप पीली पड़ गयी थी। फिर भी सूर्य बहुत तेजस्वी था। पर कई जन अपना कार्य समेटने लग गये थे तो कई रात्रि में विस्तार पाने वाले कार्य करने के लिये उद्यत हो रहे थे। कुशस्थलपुर के उपासकजन आचार्यश्री के नगर में पदार्पण से बड़े प्रसन्न थे। कई उपासक भोजन-पान से निवृत्त हो चुके थे और आचार्यश्री के चरणों में सायंकालीन उपासना के लिये जाने की तैयारी कर रहे थे। यह देखकर पौत्र पूछने लगे- ''दादाजी! आप कहाँ पधार रहे हैं? हम भी साथ में आयेंगे।''

''बेटा! मैं तो उपाश्रय में जा रहा हूँ। वहाँ सामायिक करूँगा।''

''आज महाराज सा. आये हैं। वहीं पधारोगे आप?''

''हाँ, बेटा!'' -पितामह उसे टालने के लिये बोले- ''वहाँ से मैं देर से आऊँगा। तब तक कुछ रात बीत जायेगी।''

''हम भी महाराज सा. के दर्शन करेंगे। माँ कहती थी- महाराज सा. हमारे गुरु हैं। वे बड़े अच्छे हैं। उनके दर्शन से दुःख दूर होते हैं। पाप कटते हैं। दादाजी पाप क्या होते हैं?''

पितामह विचार में पड़ गये। वे छोटे बच्चे को कैसे समझायें कि पाप क्या होते हैं? परन्तु उत्तर दिये बिना छुटकारा नहीं था। उन्होंने अपने पोते से पूछा- ''बेटा! तुमने गंदा वस्त्र देखा है न।'' ''हाँ, देखा है।''

''वह गंदा किससे होता है?'' ''दादाजी! मैल से।''

''बेटा! जिससे वस्त्र गंदा होता है उसे मैल कहते हैं, वैसे ही जिससे अपनी आत्मा गंदी होती है, उसे पाप कहते हैं।'' यह कहकर पितामह जाने को उद्यत हुए। तब पौत्र बोला- ''दादाजी! मैं भी साथ में आऊँगा। मैं भी सामायिक करूँगा। हमारे भी पाप दूर होंगे।''

''मैं वहाँ से रात में आऊँगा।''

''दादाजी! अब मुझे अँधेरे से डर नहीं लगता। नींद आयेगी तो मैं घर आ जाऊँगा। स्थानक तो मैं आऊँगा ही।''

पुत्र पिता से कह रहे थे-''पिताजी! आप स्थानक जा रहे हैं? हम भी आयेंगे। महाराज साहब के दर्शन करेंगे। कथा सुनेंगे।''

"बेटा! अभी महाराज साहब कथा नहीं कहेंगे। प्रतिक्रमण करेंगे।"

"आप क्या करोगे वहाँ।" हम भी सामायिक करेंगे। प्रतिक्रमण करेंगे या सुनेंगे।" "जो आप करो, वह हमें भी करा देना।"

कोई पितामह अपने पौत्रों से और काका अपने भतीजों से कह रहे थे-"चलो, सामायिक करना। प्रतिक्रमण तुमने याद किया है। अभी अच्छा समय आया है। जहाँ तक आचार्य महाराज विराजमान रहें, वहाँ तक प्रतिक्रमण करोगे तो प्रतिक्रमण पक्का भी हो जायेगा और विधि भी सीख जाओगे।"

कई लड़के कहते- "आपने ठीक कहा। हमारा ऐसा ही विचार है।"

इस प्रकार संध्या तक कई लोग उपाश्रय में पहुँच गये थे। वृद्ध और प्रौढ़ तो थे ही। परन्तु कई युवक और बालक भी सामायिक करके बैठे थे।

कोई माला गिन रहा था। कोई पाठ की आवृत्ति कर रहा था तो कोई परस्पर चर्चा कर रहे थे। उत्साह का अनूठा वातावरण था।

सूर्यास्त का समय हुआ। आचार्यश्री ने और फिर उनके शिष्यों ने दैवसिक प्रतिक्रमण की आज्ञा ली। मुनियों का प्रथम आवश्यक पूर्ण हुआ। इसके बाद श्रावकों ने प्रतिक्रमण की आज्ञा ली। धर्मक्रिया लगभग सवा मुहूर्त में पूर्ण हुई। बाद में भजनों का रंग जमा। फिर धर्म-चर्चा हुई। कइयों ने अपनी शंकाओं का समाधान पाया। बच्चों को कथा भी सुनने को मिली। इस प्रकार एक प्रहर रात आनन्द से बीत गयी और लोग अपने घर गये।

दूसरे दिन आधे-पौन प्रहर रात शेष रहते ही श्रावकों का धर्म-आराधना के लिये आगमन प्रारम्भ हो गया।

आचार्यश्री के कुशस्थलपुर में निवास से जनसमुदाय में धर्म-भावना की प्रतिदिन वृद्धि होती जा रही थी। लोगों में आध्यात्मिक चेतना उभर रही थी और जो उपाश्रय में न आ पाते थे, उन्हें भी वातावरण से ऐसा लगता था कि आध्यात्मिकता का एक अखण्ड अजस्र निर्झर प्रवाहित हो रहा है, जिसकी मंद-मंद शीतल बयार उन तक भी पहुँच रही है और वह क्षण भर के लिये उन्हें भी एक अलौकिक शान्ति प्रदान कर जाती है।

कई बच्चे आचार्यश्री के चरणों में पहुँच जाते थे। वे उनके दर्शन करके बड़े पुलकित होते थे। वे भोले शिशु उन्हें घुटने टिकाकर और मस्तक झुकाकर नमस्कार करते थे तथा "गुलुदेव!"-यों कहकर, उनके सामने हाथ जोड़कर, खड़े हो जाते। तब पूज्यवर भी उन्हें नमस्कार महामंत्र का उच्चारण करवाते थे। बच्चे खुश हो जाते थे और "गुरु महाराज हमाले हैं"- यों कहते हुए मानों वे हर्ष से नाच उठते थे।

अरुण नगरश्रेष्ठी का लघु पुत्र था। वह सुन्दर और सुकुमार था। उसकी आयु लगभग दस वर्ष की थी। उसकी माता का नाम सिद्धिदेवी और भाभी का नाम प्रभावती था। दोनों ही प्रवचन में जाती थीं। नगरश्रेष्ठी तो दिन में प्रायः तीन बार आचार्यप्रवर की सेवा में पहुँच जाया करते थे। उसके तीनों बड़े भाई और बहिन भी संतों के दर्शन करने जाते थे। परन्तु बड़े घर बड़ी पोल। अरुण को 'ये सब कहाँ जाते हैं' -यह पता ही नहीं लगा और किसी ने अरुण से इस विषय में कुछ कहा भी नहीं। एक दिन उसके मित्र से उसने पूछा- "तुम रात को कहाँ जाते हो?" उसके मित्र ने कहा-"तुम्हें नहीं मालूम? गुरु महाराज आये हैं न! हम साँझ को वहाँ सामायिक करने जाते हैं। तुम क्यों नहीं आते?"

"मुझे किसी ने भी नहीं बताया।"

"तुम्हारे पिताजी ने नहीं कहा? तुम्हारी माताजी ने भी नहीं कहा?"

"कह रहा हूँ न, किसी ने नहीं कहा।"

"वाह! लोग जा रहे हैं। बच्चे जा रहे हैं। बूढ़े जा रहे हैं, स्त्रियाँ जा रही हैं और तुम्हें पता नहीं लगा। क्या सो रहे थे? हमें तो पहले ही दिन पता लग गया था। हम तो गुरु भगवान को लेने भी गये थे।"

यह बात सुनकर, अरुण को बहुत खराब लगा। उसका बाल-हृदय दुःखी हो गया। मानो वह ठगा गया हो। वह घर आया। उसका मुख उदास था। भोजन करने बैठा पर एक भी कौर नहीं खा सका। थाल पर से यों ही उठ गया। भाभी ने उसकी ओर देखा तो वह बोल उठी-"लालजी! क्या हुआ? क्या आज तबीयत खराब है?"

उसने मुँह छिपाते हुए कहा- "ऊँह! हमसे मत बोलो।"

सदा प्रसन्न रहने वाले देवर की आज यह अवस्था देखकर, भाभी को आश्चर्य हुआ। जो रोग में भी खिन्न नहीं होता है, वह आज इतना उदास क्यों है? उसने अपनी सास सिद्धिदेवी से कहा-"अम्ब! आज छोटे भैयासा को न जाने क्या हुआ? उन्होंने एक कौर भी भोजन नहीं किया। थाल पर से यों ही उठ गये।"

सिद्धिदेवी अरुण के समीप गयी। उसके मुख की उदासी देखकर उसे बड़ा आश्चर्य हुआ। वात्सल्य से उसका हाथ पकड़कर माँ बोली- "अरुण! बेटा क्या हुआ आज? छह महीने के बीमार हो ऐसे लग रहे हो? आज भोजन भी नहीं किया।"

उसने माँ का हाथ झटकार दिया और पीठ फेरकर बोला- "ऊँह! मुझे नहीं सुनना आपकी बात।" सिद्धिदेवी को उसके ऐसे व्यवहार से आश्चर्य हुआ। अरुण कभी भी किसी की अवहेलना नहीं करता है। आज यह ऐसा क्यों कर रहा है? माता चिन्तित हो गयी। वह

बोली- "कुछ बोल तो सही! क्या हुआ है तुझे?" उसने उसके मस्तक पर हाथ फेरा। परन्तु यह दोनों हाथों से अपना मुँह ढँककर खड़ा रहा, बोला कुछ नहीं।

बहिन कल्याणी भी वहाँ आ गयी। वह उसे दोनों हाथों से मुँह ढँके हुए देखकर हँस पड़ी-"तुमने कोई खराब काम किया है, जो मुँह छिपा रहे हो?"

उसने हाथ मुँह से हटा लिये और तेजी से बोला- "हाँ, आपने खराब काम करवाया है?" इस बात से कल्याणी को आश्चर्य हुआ। उसने उसके कुछ समीप आकर पूछा- "क्या कहा? मैंने तुझसे खराब काम करवाया? कब करवाया?"

वह कुछ रोष से बोला-"हाँ आपने, अम्ब ने, तात ने, हाँ आप सबने।"

"हम सबने?" कल्याणी अपने छोटे भाई से बहुत ही प्रेम करती थी। उसे उसकी बात समझ में नहीं आयी। सरलता और श्रद्धा की प्रतिमा-सा अरुण आज इतना वक्र हो गया और उन पर दोषारोपण कर रहा है। वह विस्मय से रहस्य जाने के लिये बोली-"कैसी बात कर रहे हो? हम सबने खराब काम करवाया? सुनूँ भी तो, कौन-सा खराब काम करवाया? - हमें तो पता भी नहीं है।"

"मुझे भी मालूम नहीं था।"

"तुम्हें मालूम नहीं था? फिर भी खराब काम करते रहे। कैसी पहेली है?"

माता भी उनकी बात आश्चर्य से सुन रही थी। वह भी कुछ समझी नहीं। वह बोली- "हमने खराब काम करवाया? तुम क्यों करते रहे?"

"कहा न, मुझे मालूम नहीं था। आज ही पता लगा। वह भी मेरे सखा ने कहा, तब।"

कल्याणी ने पूछा-"पर वह कौन-सा काम?"

अरुण का मन उन्हें परेशान करने का हो गया। वह रोते स्वर में बोला- "आप...आप ही सोचें।" उसने फिर दोनों हाथ से मुँह ढँक लिया और रुदन का अभिनय करने लगा। उसके रुदन की आवाज सुनकर घर के और भी लोग वहाँ आ पहुँचे। सब पूछने लगे-"क्या हुआ? क्या हुआ?"

माता बोली-"इतनी देर हो गयी, पूछते-पूछते। कुछ बताता नहीं, यों ही परेशान कर रहा है?"

भाभी ने देवर का पक्ष लिया-"अम्ब! छोटे भैयासाहब किसी को कभी परेशान नहीं करते। कुछ न कुछ हमसे गलती हुई है। तभी ये इतना कर रहे हैं।" "बहू! मुझे तो कुछ याद नहीं आता।"

"माँ! मुझे तो इसकी रुदन नकली लगती है।"- कल्याणी अरुण के बिल्कुल पास

चली गयी और मुँह पर से उसके हाथों को अलग हटाकर बोली- "लो देखो, कहाँ हैं आँखों में आँसू?"

"अरे! बहुत दिनों में रोया। रोने में आँसू भी आने चाहिये- यह तो मैं भूल ही गया।" -भोला बनकर अरुण बोला। उसकी बात सुनकर सभी हँस पड़े।

"कब से सीख-ली-यह शैतानी? क्या दूसरों को परेशान करने में आनन्द आता है?" हँसते हुए कल्याणी बोली।

"कौन परेशान कर रहा है? मुझे दुःख है सो रो रहा हूँ।"

"क्या दुःख है, तुम्हें? आँसू का तो कहीं पता ही नहीं है?"

"आँसू आये तभी रुदन होता है क्या? हृदय रोता है तो आँसू आते हैं क्या? हमारा हृदय रो रहा है?" -प्रौढ़ वयवाले के समान गम्भीर होकर अरुण बोल रहा था।

उस समय भोजन करने हेतु श्रेष्ठी सागरचन्द्र ने भी वहाँ प्रवेश किया। तब कल्याणी उसे पूछ रही थी- "क्यों रो रहा है, श्रीमान् का हृदय? यही तो हम पूछ रहे हैं।"

सागरचन्द्र ने वहाँ सबको एकत्रित देखकर पूछा- "यहाँ इकट्ठे क्यों हुए हो? अरुण क्या कह रहा है?"

"पिताजी आज अरुण ने भोजन नहीं किया। पूछने पर रोने का नाटक किया।"- कल्याणी ने बात स्पष्ट करते हुए कहा- "इतनी देर पूछने पर यही बात हाथ लगी कि हम सबने इससे बुरा काम करवाया है, इसलिए इसका हृदय रो रहा है।"

"क्यों, अरुण! यह सब क्या है?" सागरचन्द्र ने पूछा।

"तात!"- अरुण अब भेद खोलता है- "आचार्य महाराज यहाँ पधारे। आप सब जाते हैं। मुझे पता ही नहीं चला। इसी का मुझे दुःख है?"

कल्याणी और सिद्धिदेवी दोनों एक साथ बोल पड़ी- "तो इसमें हमारा क्या अपराध? हमने तुम्हें रोका क्या?"

"मुझे किसी ने कहा नहीं। मुझे पता ही न लगा। भगिनी प्रत्येक वस्तु में मेरा हिस्सा निकालती है। कोई भी बात होती है तो बताती है। क्या यह बात बताने जैसी नहीं थी?"

कल्याणी इस अभियोग से कुछ लज्जित-सी हो गयी। फिर भी वह बोल उठी- "कोई अपने में ही खोया रहे तो हम क्या करे? जो आँखें रहते हुए भी देखे नहीं और कान रहते हुए भी सुने नहीं को कोई क्या करे?"

सागरचन्द्र ने समाधान करते हुए कहा- "एक अपेक्षा से अरुण की बात सही है। अनजाने ही सही, हमसे उपेक्षा तो हुई ही है। हमें घर के प्रत्येक सदस्य को भले कार्य के

लिये- धर्म कार्य के लिये प्रेरणा देना चाहिये। यह हमारा कर्तव्य है। पश्चात् वह उसे करे या न करे, उसकी इच्छा।'' फिर श्रेष्ठी ने अरुण से कहा- ''वत्स! चलो भोजन कर लो। आज सायंकाल मेरे साथ प्रतिक्रमण के लिये चलना।'' यह बात सुनकर अरुण प्रसन्न हो गया।

सब अपने-अपने कार्य में लग गये। पिता-पुत्र दोनों भोजन से निवृत्त हुए। उपाश्रय जाते समय सागरचन्द्र ने पुत्र को बुलाकर अपने साथ लिया। वे उपाश्रय पहुँचे।

अरुण ने आचार्यश्री के दर्शन किये। वह हर्ष-विभोर हो गया। उसे पहली ही दृष्टि में आचार्यश्री भा गये। वह मुग्ध मन से आचार्यदेव की ओर देख रहा था। इतने में उसके मित्र भी आ गये। वह अपने मित्रों के साथ हो गया। उसने सामायिक की। उसे सामायिक के पाठ याद नहीं थे। मात्र नमस्कार महामंत्र ही याद था और कुछ गुरु-वन्दना का पाठ भी। उसे मित्रों ने सामायिक की विधि करवायी। वह आज पहली बार सामायिक कर रहा था। वह शान्त था, प्रसन्न था। उसने प्रतिक्रमण को श्रद्धापूर्वक सुना। उसे समझ में तो कम आया, परन्तु सब क्रियाएँ अच्छी लगीं।

प्रतिक्रमण के बाद चतुर्विंशति तीर्थंकर भगवन्तों की स्तवना की गयी। उसे तीर्थंकर भगवान के नाम याद करने का मन हुआ।

जब वह पिता के साथ लौटा, तो उसने कहा-''गुरुदेव अच्छे हैं, परन्तु वे हमसे बोलेंगे कि नहीं?''

''क्यों नहीं बोलेंगे? अवश्य बोलेंगे। वे वात्सल्य मूर्ति हैं।''

''मैं रोज आया करूँगा, तात!''

''बहुत अच्छा।''

(क्रमशः)

कुंडलिया छंद

जिनवाणी का पान

श्रीमती मीमा चौधरी

मधुमक्खी के 'पर' करें, गुन-गुन गुन-गुन शोर।
पीने को जब रस मिले, मचे ना कोई शोर।।
मचे ना कोई शोर, जो मन आनंद समाए।
शान्ति का वो अनुभव, अनूठा सुख उपजाए।।
प्यासा, प्याला भर रहा, कर जिनवाणी का पान।
एक अचंभा होय रहा, कि डूबन से मिले ज्ञान।।

-14, वरदान अपार्टमेंट, 64, आई.पी.एक्सटेंशन, दिल्ली-110092

नारी-स्तम्भ

आनन्द का अखण्ड स्रोत- मौन

श्रीमती अंशु संजय सुराणा

ब्रह्म मुहूर्त का समय, शांत वातावरण, प्रकृति का वह नीरव मौन कितनी मौलिकता लिए हुए प्रतीत होता है। एकाग्रचित्त होने पर एक चिंतन चलने लगता है। हाँ! यह मौन ही तो शाश्वत सत्य है। यह मौन तो जन्म से ही जुड़ा है, जीवन आरम्भ से ही इसका प्रारम्भ हो जाता है। जब बालक इस धरा पर जन्म लेता है तब सबसे पहले मात्र देखता है, बोलता नहीं। मौन जन्म से प्राप्त अवस्था है, मृत्यु के उपरान्त देह भी मौन हो जाती है और जन्म-मरण के इस चक्र से मुक्ति प्राप्त कर चुके सिद्ध भगवान भी तो मौन ही हैं। अर्थात् मौन हमारी अपनी अवस्था है। पैदा हुए बच्चे का मौन निर्दोष मौन है। मात्र कुछ क्षण के लिए ही सही एक बार बच्चों की तरह मौन हो जाएँ और मौन होकर मात्र देखना प्रारम्भ करें, फिर अनुभव करें कि क्या होता है?

सामान्यतया हम यही जानते और समझते हैं कि मौन का तात्पर्य है भाषा वर्गणा के पुद्गलों पर नियंत्रण, परस्पर वार्ता का निषेध। परन्तु वस्तुस्थिति इससे भिन्न है। मौन धारण करने से बाह्य जगत् से चर्चा रुक जाती है, पर अन्तःकरण में आत्मा और परमात्मा की वार्ता चालू हो जाती है। कहा भी जाता है कि मौन प्रार्थनाएँ परमात्मा तक शीघ्र पहुँचती हैं, क्योंकि वे शब्दों के भार से मुक्त होती हैं। मौन तो वह बिन्दु है जहाँ से संसार का नहीं, अपितु सच्चे आत्मस्वरूप का दर्शन होता है। मौन एक अहसास है, जिसे शब्दों में समाहित करना संभव नहीं, क्योंकि-

मौन उद्गम है समाधि की निष्पत्ति का
मौन प्रेरणा है जीवन पथ पर प्रगति का
मौन प्रयास है कषायों से मुक्ति का
मौन अहसास है आत्मशांति की अनुभूति का
मौन आमंत्रण है, पर से स्व में प्रवृत्ति का
मौन अनुभव है संसार से निवृत्ति का
मौन समाधान है कलह से विरक्ति का
मौन साधना है परमात्मा से अनुरक्ति की
मौन मार्ग है जीव की सुगति का

वाक् शक्ति से मनःशक्ति विशेष प्रबल होती है। इसलिए मानसिक स्मरण में अधिक तीव्र शक्ति होती है। यदि भक्ति की बात करें तो भक्ति भी भाषा में नहीं, भाव में जीवित होती है। इतना अवश्य है कि विचार शक्ति के साथ जो अनुपम शक्ति होती है वह है बोलने की शक्ति- भाषाशक्ति। लेकिन इस शक्ति का भी सदुपयोग करना हमारे ही हाथ की बात है, क्योंकि बोलना अगर चाँदी है तो मौन रहना सोना है।

मौन का वास्तविक अर्थ है- मन का मौन। मात्र वचन से मौन होने के कारण व्यक्ति लिख-लिखकर उत्तर देते रहते हैं। लिखकर देने में सारी इन्द्रियाँ काम करती हैं, लिखने में तनाव भी रहता है, चिड़चिड़ापन एवं जल्दी भी रहती है। सामने वाला पूरी बात समझ भी नहीं पाता, फिर क्रोध आने लगता है कि यह समझता क्यों नहीं? हाथ, होठ, आँखों और शरीर को तरह-तरह से नचाकर समझाते हैं। क्या यह मौन है? क्या इससे शांति की प्राप्ति होती है? ध्यान की साधना भलीभाँति हो पाती है? जहाँ न तर्क, न विवाद न आक्षेप, न खंडन है वह सच्चा मौन है। स्लेट पर लिखे जा रहे हैं, कागज काले किए जा रहे हैं, आँखों से इशारा किए जा रहे हैं, दोनों हाथों को नचा रहे हैं, ऊँ-ऊँ, हूँ-हूँ किए जा रहे हैं, यह मौन नहीं है। मौन में शरीर भी शांत, इन्द्रियाँ भी शांत, बुद्धि भी शांत, प्राण भी शांत, आनन्द में बैठे हैं, मस्ती में मग्न हैं, चारों ओर शांति व तृप्ति फैल रही है। किसी दूसरे लोक की यात्रा हो रही है। कुछ लोग मौन की तख्ती लटका देते हैं कमरे के बाहर और अंदर, फिर या तो वे निद्रा के अधीन होते हैं या अपनों से गुफ्तगू करते हैं। यह मौन की मज़ाक उड़ाना है, स्वयं के द्वारा स्वयं को धोखा देना है। मौन में मात्र बाहर से अलग होना ही नहीं, अंदर से जुड़ना भी आवश्यक है। प्रभु वीर ने आगम में अनेक स्थानों पर मौन का महत्त्व प्रतिपादित किया है। जैसे ''मुणी मोणं समादाय'' (आचारांग सूत्र, अध्ययन-2, उद्देश्क 6)। ''एयं मोणं समणुवासिज्जासि'' (आचारांग सूत्र, अध्ययन-2, उद्देशक 4)। ''मोणं चरिस्सामि समिच्च धम्मं'' (उत्तराध्ययन सूत्र, अध्ययन-15, गाथा-1)। ''मोणेण मुणी होई'' आदि अनेक स्थलों पर मौन रहने का साधक को संकेत किया गया है।

मौन शब्द के दो अर्थ प्रतिभासित हुए- एक तो पूर्ण मौन, एक अल्प भाषण। व्यर्थ मत बोलो, निरर्थक मत बोलो। बोलने में तीन बातों का उपयोग हो- 1. सोचकर बोलो, 2. समझकर बोलो, 3. विचारपूर्वक बोलो। चुपचाप हो जाना ही मौन नहीं है, उपयुक्त अवसर पर मौन होना और बोलना दोनों में समयज्ञता चाहिए। ''समय पर सहना, मौके पर कहना'' आना चाहिए। मानव के पास भाषा शक्ति है। उसका उपयोग उसे विवेकपूर्वक करना चाहिए। अधिक, अनर्गल, अपशब्द, अनर्थकारी नहीं बोलना चाहिए। वर्तमान युग में गोली से जितने युद्ध नहीं होते बोली से उतने होते हैं। पहले हुए युद्धों के मूल में भी बोली ही

रही है। इसलिए कम बोलें, काम का बोलें। कहते हैं- ''ज्ञानी ज्यादा नहीं बोलता, अज्ञानी कम नहीं बोलता।'' मौन, वचन-गुप्ति, भाषा-समिति आदि एक ही हैं। एक विचारक ने कहा- ''जहाँ शब्दरूपी पत्ते अधिक होते हैं वहाँ ज्ञान रूपी फल दिखाई नहीं देता है।'' सभी महान् आत्माओं के जीवन का प्रारम्भ काल मौन में निमग्न रहता है। मौन से वचन शक्ति का प्रादुर्भाव होता है। दीक्षा ग्रहण करते ही प्रभु को प्रकट होता है मनःपर्यव ज्ञान। जिसके द्वारा वे जान सकते हैं सभी जीवों के मनोगत भावों को। किन्तु प्रभु उस समय हो जाते हैं- मौन। शुरु होती है आत्म स्वभाव में लीन होने की साधना। जहाँ न होते हैं कोई संकल्प-विकल्प। मात्र होती है रमणता। जैसे नौ मास माँ के गर्भ में विकसित होकर बालक का जन्म होता है वैसे ही चार ज्ञानधारक प्रभु के मौन रूपी गर्भ में विकसित होकर केवलज्ञान पश्चात् जिन वचनों का जन्म होता है।

मौन एक भाषा भी है, जैसे आँसू भी एक भाषा है। वह पीड़ा व्यक्त करती है तो प्रेम के उत्कृष्ट आरोहण में भी वही होती है जहाँ पर भक्त आँसू की भाषा से परमात्मा से बात करता है। हृदयस्पर्शी एवं हृदयस्थ करने योग्य चिंतन व विचारों का संकलन करने वाली श्रेष्ठ कृति ''सुप्रभात'' में भी गुरुदेव आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी महाराज द्वारा प्रतिपादित अनमोल विचार संकलित है- ''मुँह का मौन होना मौन नहीं, सच्चा मौन तो मन का मौन होना है।'' ''तन का संयम रोग से और वाणी का संयम कलह से बचाता है।'' उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्र जी महाराज भी फरमाते हैं- ''जिनका जीवन बोलता है उनको बोलने की उतनी जरूरत भी नहीं है।'' सत्य तो यह है कि प्रयत्न तो बोलने के लिए करना पड़ता है, क्योंकि यह तो आत्मा की स्वाभाविक अवस्था है।

कषायों को कम करने, उन पर नियंत्रण करने की अमोघ औषधि है 'मौन'। कलह-क्लेशों पर विराम लगाकर सद्भाव का प्रकाश फैलाने वाला सूर्य है मौन, आत्मा को परमात्मा के निकट लेकर आने वाला चुम्बक है मौन, बाह्य जगत् के संबंध हटाकर, अन्तर्जगत् के कण-कण में आध्यात्मिकता की ऊर्जा पैदा करने वाला है मौन। मौन पर चर्चा करना बेकार है, मौन पर लिखना व्यर्थ है, मौन तो अहसास करने वाला भाव है।

जीवन तीन महत्त्वपूर्ण सूत्रों पर चलता है- अर्जन, सर्जन, विसर्जन। अर्जन में रीति, सर्जन में नीति और विसर्जन में प्रीति धारण करने वाला मानव सही अर्थों में मानव कहलाने का अधिकारी होता है। भाषा समिति का अर्जन है बोलना, बोलने का सर्जन है मिष्टभाषिता और विसर्जन है मौन व्रत की आराधना। विसर्जन मुक्ति की ओर ले जाने वाला हमराही है। अर्जन जीवन का आरम्भ है, सर्जन जीवन का विकास और विसर्जन है जीवन का चरम-परम अखिल स्वरूप, लेकिन अखिल भी ऐसा जो ज्योत में ज्योत

एकाकार होकर सदा खिलखिलाता रहता है, तो परमात्मा के उस निराकार स्वरूप का दर्शन करने के लिए, आत्मा और परमात्मा के मध्य होने वाली वार्ता श्रवण करने के लिए मौन हो जाइये, खो जाइये अन्तःकरण के अन्तःस्थल में और अनुभूति में डूब जाइये, अनुभव कीजिए मात्र आनन्द ही आनन्द का।

''अन्तर्मन में झाँकने का प्रयास, है मौन का अभ्यास,
तनाव फिर नहीं आते पास, अपूर्व शांति का होता है आभास।
आत्मा के चिदानन्द स्वरूप का, फिर जग उठता है विश्वास,
मोक्ष मंजिल जरूर मिलेगी, ऐसी दृढ़ हो जाती है आस।।''

-एस-149, महावीर नगर, टोंक रोड़, जयपुर (राज.)

लघु कविताएँ

डॉ. रमेश 'मयंक'

शुभत्व

शुभत्व
परोपकार-सेवा आचरण में है
विचार-व्यवहार- सत्य के प्रण में है
सद्कर्मों में लिप्त
प्रत्येक तपोनिष्ठ साधक के
वंदन, अनुगमन, अन्तःकरण में है।

सत्य

सत्य-
सद्विचारों-सत्यवचनों द्वारा
अन्तःकरण की शुद्धि होने पर
स्वतः प्रकट होता है,
तब-
मिथ्या भाषण से बचते हुए
व्यवहार-विचार-आचरण में
कहीं नहीं कपट होता है।

असत्य की बाढ़

असत्य के मूर्तरूप में
अज्ञान-मोह-पाप है
विषाद-विकार-ताप है
असत्य की जब बाढ़ आती है
तो केवल-
सत्य की रक्षा, विश्वास और
प्रकाश की रश्मियाँ ही रोक पाती हैं।

उपलब्धि

सत्य की उपलब्धि के लिए
जीवन का
अनन्त कर्म प्रवाह है
मुक्ति-साधना-साक्षात्कार
इसके गवाह हैं।

-बी-8, मीरा नगर, चित्तौड़गढ़-312001 (राज.)

युवा-स्तम्भ

शाकाहारी जैन समाज पर उठते सवाल

डॉ. दिलीप धींग

शाकाहार और शाकाहार-प्रचार के बारे में जब चर्चा की जाती है तो कितने ही लोग यह बोल देते हैं कि आजकल तो जैनी या परम्परागत शाकाहारी भी 'खाने-पीने' लग गये हैं। यहाँ पर 'खाने-पीने' का अर्थ मांसाहार और मदिरापान से है। ''जैनी भी सब खाते-पीते हैं'', यह कहकर वे शाकाहारियों को चुप तथा शाकाहार-अभियान को हतोत्साहित करना चाहते हैं। जैनी के साथ ही वैश्य, ब्राह्मण, वैष्णव, विश्नोई तथा अन्य परम्परागत शाकाहारियों के बारे में भी ऐसा ही कहकर अनेक लोग मांसाहार करने को 'उचित' ठहराने का विफल प्रयास करते हैं। उनका यह आरोप/कथन प्रथम चरण में ही अस्वीकार्य तथा खारिज करने योग्य है। इसके ठोस तथा तथ्यपूर्ण कारण हैं। समझने की दृष्टि से यहाँ जैन समाज को केन्द्र में रखकर चर्चा की जा रही है।

जैन समाज की शाकाहारिता (शाकाहारी जीवनशैली) का सुदृढ़ धार्मिक, सामाजिक, सांस्कृतिक और पारम्परिक आधार है। जैन समाज में मांसाहार व मद्यपान जैसी बुराइयाँ सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक, पारम्परिक तथा अन्य किसी भी रूप में मान्य नहीं हैं। इसी वजह से कहीं कोई जैन कुल में जन्मा व्यक्ति यदि मर्यादा का उल्लंघन करता है तो प्रायः वह छुप कर करता है और यदि उसके मांसाहार जैसे व्यसन का पता चल जाता है तो वह चर्चा और आलोचना का विषय बन जाता है। यह जैन समाज की जागरूकता का परिचायक है। इस जागरूकता के तीन कारण हैं- 1. जैन जीवनशैली का सुदृढ़ आचार-पक्ष, 2. शाकाहार की स्वीकार्यता के बारे में सम्पूर्ण जैन समाज में निर्भ्रान्त व सर्वसम्मत अवधारणा, तथा 3. जैन समाज में सन्तों के उपदेश और मार्गदर्शन। इस जागरूकता के परिणामस्वरूप अनेक भटकते कदम फिर से सन्मार्ग पर आ जाते हैं। अन्य शाकाहारी समुदायों में प्रायः ऐसी जागरूकता नहीं देखी जाती है।

जैन समाज में आहार के मामले में गलती करने वालों की संख्या नगण्य होती है, लेकिन उनके बारे में बढ़ा-चढ़ाकर कहा जाता है। किसी सफेद दीवार पर एक धब्बा भी यदि काला होता है तो वह सबकी नज़रों में खटकता है। ऐसा ही जैन समाज के साथ होता है। अपने माता-पिता और परम्परा की अवज्ञा करने वाले कुछ मनचले युवक यदि कहीं गलती करते हैं तो ऐसा नहीं कहा जाना चाहिये कि ''आजकल तो जैनी भी सब खाते-पीते

हैं'' या ''बहुत सारे जैनी खराब हो गये हैं।'' एक गलत खान-पान करने वाले 'जैन व्यक्ति' तथा परम्परागत मांसाहार करने वाले व्यक्ति के आचरण के बुनियादी फर्क को समझा जाना चाहिये। इसमें पहले व्यक्ति के आचरण का धार्मिक, सामाजिक या किसी भी स्तर पर समर्थन नहीं है, जबकि दूसरे व्यक्ति के लिए कोई रोक-टोक नहीं है।

समय के साथ समाज में अनेक परिवर्तन हुए हैं। लेकिन जब बात आहार की आती है तो सारा जैन समाज शाकाहार के पक्ष में निर्विवाद रूप से तथा गौरवपूर्ण तरीके से एकमत है। इसके विपरीत दूसरे कुछ समाजों में मांसाहार का सामाजिक और धार्मिक स्तर पर निषेध नहीं है। कुछ समुदायों में गोमांस (बीफ) को तथा कुछ समुदायों में सुअर-मांस (पोर्क) को ही वर्ज्य माना जाता है। उन समुदायों में अन्य प्रकार के मांसाहार करने पर सामाजिक या धार्मिक रूप से कोई रोक-टोक नहीं है। दुःखद बात है कि कुछ समाजों में धार्मिक रस्म के रूप में भी निर्दोष पशु-पक्षियों का वध करके उनके मांस को उत्सवपूर्वक खाया और खिलाया जाता है। कुछ समाजों में आहार को लेकर कोई सुदृढ़ एवं सुविचारित आचार-संहिता नहीं है। यदि कोई शाकाहारी है तो अच्छी बात है और शाकाहारी नहीं है तो भी कोई बुरी बात नहीं है, ऐसा माना जाता है।

परम्परागत मांसाहारी समुदायों में शाकाहारी और मांसाहारी व्यक्तियों का अनुपात देखें तो शुद्ध शाकाहारियों की संख्या कम ही मिलेगी। जबकि शाकाहारी समुदायों में आहार-मर्यादा का उल्लंघन करने वालों की संख्या तो नगण्य ही मिलेगी। उस नगण्य संख्या में भी बालक, युवा और वृद्ध स्त्री-पुरुषों में से भटकने वाले प्रायः युवक ही होते हैं।

पुरुष और महिला के उम्र के तीन पड़ावों के आधार पर छह श्रेणियाँ बनती हैं- 1. बालक, 2. बालिकाएँ, 3. युवक, 4. युवतियाँ, 5. वृद्ध, 6. वृद्धाएँ। इन छह श्रेणियों में से क्रमांक तीन पर स्थित युवकों के बारे में ही आहार के मामले में भटकने की शिकायतें सर्वाधिक मिलती हैं। स्त्री-पुरुषों की आयु के आधार पर आबादी के सांख्यिकीय आँकड़ों में नहीं जाते हुए मोटे तौर पर निष्कर्ष निकलता है कि 83.33 प्रतिशत आबादी इस प्रकार की मर्यादाओं को भंग नहीं करती है। इसे यूँ भी कह सकते हैं कि मर्यादा-भंग की शिकायत 16.67 प्रतिशत की आबादी में से अधिकांशतः आती है। जैन समाज के बारे में चर्चा करें तो इस युवक आबादी का अनुमानतः 0.25 प्रतिशत भी गलत खान-पान नहीं करता होगा। यह प्रतिशत सम्पूर्ण आबादी में से तो अत्यन्त कम या नगण्य हो जाता है।

किसी भी वर्ग या समाज के स्थापित नियमों में वैयक्तिक स्तर पर मामूली विचलन स्वाभाविक है। अस्वाभाविक या चिन्ताजनक स्थिति तब होती है, जब विचलन बढ़ जाता है तथा विचलन को सामुदायिक मान्यता या स्वीकृति मिलने लग जाती है। जैन समाज में

शाकाहारिता के बारे में पूर्ण सजगता और प्रतिबद्धता है। जैन समाज में कभी भी तथा किसी भी स्तर पर मांसाहार को सही नहीं ठहराया गया है। ऐसी स्थिति में यह कहना तो सरासर गलत और नितान्त तथ्यहीन है कि- "बहुत सारे जैनी बिगड़ गये हैं।" इस प्रकार की तथ्यहीन बातें शाकाहार-प्रचार को हतोत्साहित करने के लिए कुछ लोग बोल देते हैं। इन सब तथ्यों के बीच जैन समाज में मांसाहार और मद्यपान जैसी बुराइयों को कभी भी धार्मिक और सामाजिक मान्यता, संरक्षण एवं समर्थन नहीं मिला है। जबकि दूसरे अनेक समाजों में ऐसा नहीं है।

यह शुभ संकेत है कि शाकाहार की सार्वभौमिक उपादेयता को स्वीकार करते हुए अनेक परम्परागत मांसाहारी व्यक्ति और कुटुम्ब भी शाकाहारी हो गये तथा हो रहे हैं। लेकिन गौरतलब यह है कि जिन समुदायों से वे जुड़े हैं, वहाँ प्रायः मांसाहार के विरुद्ध कोई धार्मिक, सामाजिक या पारम्परिक प्रतिबंध नहीं होता है। फलतः उनके सामाजिक आचार और व्यवहार में मिलीजुली व्यवस्थाएँ चलती रहती हैं। यह अच्छी बात है कि उस मिश्रित व्यवहार में भी अनेक व्यक्ति अपनी शाकाहार की प्रतिज्ञा निष्ठा से निभाते हैं।

समय की मांग है कि मांसाहार को वर्ज्य नहीं मानने वाले व्यक्तियों और समुदायों में शाकाहारियों की संख्या बढ़े तथा उन समुदायों में शाकाहार को धार्मिक और सामाजिक मान्यता मिले। परम्परागत मांसाहारी परिवार या समुदाय का कोई व्यक्ति यदि पूर्ण शाकाहारी हो जाता है तो यह चर्चा और प्रशंसा का विषय बनता है। यह प्रशंसात्मक चर्चा शाकाहारी और मांसाहारी, दोनों समुदायों तथा उनके लोगों के बीच होती है। शाकाहार की अच्छाई और उपादेयता के पक्ष में यह बहुत बड़ा उल्लेखनीय तथ्य है। जब व्यक्तिगत परिवर्तन अच्छा माना जाता है तो सामुदायिक परिवर्तन निःसन्देह बहुत ही अच्छा माना जाना चाहिये। निश्चित ही वैसा करने के लिए प्रयास किये जाने चाहिये। यदि वैसे परिवर्तन के लिए सम्बन्धित समुदाय के ही विचारवान और संकल्पवान व्यक्ति आगे आते हैं तो बहुत बड़ा कार्य हो सकता है।

कुछ समुदायों में यह चर्चा होती है कि शाकाहारी और व्यसन-मुक्त होने की वजह से जैन समाज एक सम्पन्न, समर्थ और शान्तिप्रिय समाज है। अतः उसे भी शाकाहार और नशा-मुक्ति की सद्राह पर चलना चाहिये। अच्छी बातों के सन्दर्भ में ऐसी चर्चाएँ यदि मूर्त्त रूप लेती हैं तो यह सामाजिक सद्भाव, समृद्धि, सह-अस्तित्व, पर्यावरण-संरक्षण आदि अनेक दृष्टियों से अनुमोदनीय है। इतिहास साक्षी है कि सन्तों एवं समाज-सुधारकों की प्रेरणा तथा सामाजिक जागरण के फलस्वरूप देश में अनेक जातियों, उपजातियों और समुदायों ने सामूहिक रूप से शाकाहार और व्यसन-मुक्ति के संकल्प ग्रहण किये हैं। ऐसा

करने वाले समुदायों ने उल्लेखनीय उन्नति की है।

वस्तुतः शाकाहार मानवमात्र के लिए निरापद और स्वाभाविक आहार है। शाकाहारिता किसी वर्ग, समुदाय या धर्म से जुड़ी अवधारणा नहीं है, अपितु यह मानवमात्र के लिए हितकारी जीवनशैली है। इस जीवनशैली से प्रकृति, संस्कृति और प्राणिमात्र के हित जुड़े हुए हैं। अतः शाकाहार-आन्दोलन एक श्रेष्ठ व प्रशस्त मानवीय आन्दोलन है। इसे जन-आन्दोलन बनाया जाना चाहिये। कुछ लोगों के भटक जाने या असहमत होने से अच्छे आन्दोलन या अभियान को हतोत्साहित करना सकारात्मक दृष्टि का परिचायक नहीं है।

-निदेशक : अंतरराष्ट्रीय प्राकृत अध्ययन व शोध केन्द्र,
18, रामानुजा अय्यर स्ट्रीट, साहुकारपेट, चेन्नई-600001

चिन्तन

मैं किस संप्रदाय के भक्तों से मिलूँ....

कवि श्री प्रकाश नागौरी

एक रात सपने में किसी परछाई ने मुझसे कहा- मैं महावीर हूँ। नतमस्तक होकर मैंने कहा- "आज्ञा दीजिए भगवन्!" तो वे पीछे हटते हुए बोले- "पहले तुम यह बताओ, तुम कौन से मार्गी हो?"

मैंने कहा- "मेरा संबंध किसी भी पंथ से नहीं है, मैं तो मात्र मोक्षमार्गी हूँ। मुझे नहीं पता यह मार्ग राष्ट्रीयकृत है या नहीं, किन्तु इतना अवश्य जानता हूँ कि इस मार्ग में अंधविश्वासों की संकरी गलियाँ, आडम्बर की पगडंडिया और दिखावे के चौराहों का पूर्णतया अभाव है।"

किन्तु भगवन्! ये सब आप मुझसे क्यों पूछ रहे हो?

गंभीर मुद्रा में महावीर बोले- 'मुझे डर है, मैं भी तुम्हारे 'बापू' की तरह सरकारी किताबों में न रह जाऊँ, लोगों ने मुझे भी बांट दिया है। मुझे स्वयं पता नहीं चलता, मैं किस संप्रदाय के भक्तों से जाकर मिलूँ।'

तो उठ बिखराव के सिलसिले को बंद कर, वक्त बेसब्री से तेरा इंतजार कर रहा है, बिखरे हुए जैन समाज को एकता की कड़ियों में बांधकर एक नये अध्याय की शुरुआत कर और कह दे- 'सिर्फ अयोध्या के सूर्यवंश में जन्म लेने से ही कोई राम नहीं होता, उसके लिए तो 14 वर्ष का वनवास करना पड़ेगा और उड़द के बाकुले लिए चंदनबाला आज भी खड़ी है, मगर उसका उद्धार करने के लिये तुम्हें महावीर सा उपवास करना पड़ेगा।

-'हिना' 61, न्यू अहिंसापुरी, फतहपुरा, उदयपुर-313001 (राज.)

कविता

सृजन करें ऐसे सुमन

श्री देवेन्द्रनाथ मोदी

सृजन करें ऐसे सुमन
जिनकी मनमोहक सुवास हो।
दुर्गन्धमय संसार में
जिनकी जरूरत खास हो।

सृजन करें ऐसे सुवचन
जो सबको स्वीकार हों।
शब्द सारे मौन हों
जो सृष्टि का श्रृंगार हों।

सृजन करें ऐसी शिक्षा
जो विश्व-तम को हर सके।
कल्मष सारे दूर कर
जो ज्योति नित नई भर सके।

सृजन करें छंद ऐसे,
प्रेरणाएँ जो भर सकें।
संगीत से जो शून्य हैं
उनको संगीतमय बना सकें।

सृजन करें ऐसी सुगति
जिसका न कोई विराम हो।
चलते चलें, चलते चलें
चलना ही जीवन धाम हो।

सृजन से विकास का यह
चक्र नित चलता रहे।
दूर कर कठिनाइयाँ
उत्साहित जीवन गतिमान रहे।

-"हुकम", 5 -ए /1, सुभाषनगर, पालरोड़, जोधपुर-342008 (राज.)

स्वास्थ्य-विज्ञान

स्वास्थ्य का मूलाधार : अन्तःस्रावी ग्रन्थियाँ

डॉ. चंचलमल चोरडिया

अन्तःस्रावी ग्रन्थियों की क्षमता

जैसे वृक्ष का आधार उसकी जड़ें एवं मकान का आधार उसकी नींव होती है, ठीक उसी प्रकार जीवन के सफल संचालन में हमारी अन्त:स्रावी ग्रन्थियों का योगदान होता है। जड़ एवं नींव बाह्य रूप से न दिखने के बावजूद वृक्ष के विकास एवं मकान की सुरक्षा हेतु आवश्यक होती हैं, ठीक उसी प्रकार प्रत्यक्ष रूप से न दिखने के बावजूद हमारे शारीरिक, मानसिक, आध्यात्मिक गतिविधियों के संचालन में अन्त:स्रावी ग्रन्थियों की महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है।

हम क्या हैं और क्यों हैं? हमारे स्वभाव, प्रवृत्तियों, क्रियाओं एवं प्रतिक्रियाओं का संचालन और नियन्त्रण कौन और कैसे करता है? हमारे शरीर का नियन्त्रित एवं समयबद्ध विकास ही क्यों होता है? निश्चित अवधि के पश्चात् अंगों के विकास एवं वृद्धि में क्यों स्थिरता आ जाती है? कुछ व्यक्ति क्रोधी, क्रूर, हिंसक, अशान्त, चिड़चिड़े, हताश, भयभीत, असंवेदनशील, निराशावादी होते हैं तो बहुत से व्यक्ति स्वभाव से शान्त, प्रसन्न, हंसमुख, आशावादी, संवेदनशील, करुणाशील, निडर, निर्भय, आत्म-विश्वासी क्यों होते हैं?एक ही अध्यापक से शिक्षा प्राप्त करने वाले छात्रों में कोई मन्दबुद्धि वाला तो कोई प्रखर पंडित, विद्वान्, ज्ञानी कैसे बन जाते हैं? एक ही परिस्थिति में कार्य करने वाले सभी व्यक्तियों में नेतृत्व की क्षमता एकसी क्यों नहीं होती है? कोई साधारण खुराक खाने के बावजूद मोटा एवं तगड़ा होता है तो बहुत से व्यक्ति खाने-पीने में पूर्ण विवेक रखने तथा अच्छी खुराक लेने के बावजूद अपेक्षाकृत दुबले-पतले ही क्यों रह जाते हैं? कभी-कभी कुछ व्यक्ति बहुत बोने तो चन्द व्यक्ति अत्यधिक लम्बे क्यों हो जाते हैं? ऐसे सैकड़ों प्रश्नों का समाधान आधुनिक स्वास्थ्य विज्ञान में अन्त:स्रावी ग्रन्थियों की कार्य प्रणाली एवं क्षमता को जानने से हो जाता है।

प्रभावशाली चिकित्सा की मूलभूत आवश्यकता

ग्रन्थियों के बराबर कार्य न करने से 75 प्रतिशत से अधिक रोगों के पनपने की सम्भावना रहती है। ग्रन्थियों को सुव्यवस्थित एवं संतुलित किये बिना लाख प्रयास करने के बावजूद हम पूर्णतया रोग मुक्त नहीं हो सकते। अत: जो चिकित्सा पद्धतियाँ ग्रन्थियों को सरल

ढंग से ठीक करने की क्षमता रखती हैं, वे ही व्यक्ति को शारीरिक, मानसिक एवं आध्यात्मिक रूप से स्वस्थ रख सकती हैं। फिर वह चाहे ध्यान, स्वाध्याय, एक्यूप्रेशर या अन्य विधि ही क्यों न हो? जिन चिकित्सा पद्धतियों में अन्त:स्रावी ग्रन्थियों का सरल एवं प्रभावशाली उपचार न हो, वे अधिकांश रोगों के मूल कारणों को दूर करने में सक्षम नहीं होतीं, अत: वे पूर्ण अथवा प्रभावशाली एवं मौलिक चिकित्सा पद्धतियाँ कैसे मानी जा सकती हैं?

अन्त:स्रावी ग्रन्थियों को प्रभावित करने वाले तथ्य

हमारा प्रत्येक विचार, चिन्तन, मनन, क्रिया, प्रतिक्रिया हमारी ग्रन्थियों को प्रभावित करती है। ग्रन्थियाँ हमारे स्वास्थ्य की निर्माता होती हैं। इनमें सक्रियता, संतुलन, सहयोग और समन्वय स्वस्थता का सूचक होता है तथा इसके विपरीत निष्क्रियता, असंतुलन, असहयोग बीमारी का द्योतक होता है। "तनाव, चिन्ता, भय, निराशा, आवेग, क्रोध, अहम्, माया, लोभ आदि पाशविक वृत्तियों से ग्रन्थियाँ खराब हो जाती हैं।" इसीलिये हमारे ऋषि मनीषियों ने कषाय और तनावमुक्त, संयमित, विवेकपूर्ण, सद्चिन्तन युक्त जीवन जीने की प्रेरणा दी। क्षण मात्र की भी असजगता रखने तथा प्रमाद न करने का परामर्श दिया। हमारे अधिकांश रीति-रिवाजों, परम्पराओं, त्यौहारों एवं अनुष्ठानों के पीछे भी प्रतिकूल परिस्थितियों में उत्पन्न दु:ख को भुलाकर प्रसन्नता पूर्वक जीवन जीने का उद्देश्य रहा हुआ है, जिससे हमारी ग्रन्थियाँ खराब न हों और हम रोग-मुक्त जीवन जी सकें। परन्तु आज हम आधुनिकता के नाम पर उनके महत्त्व को भुलाकर अपनी अनेक हितकारी परम्पराओं को छोड़ते जा रहे हैं। फलत: तनाव और चिंताएँ बढ़ रही हैं और हमारी ग्रन्थियाँ प्राय: पूर्ण स्वस्थ नहीं रहती हैं।

ग्रन्थियाँ मस्तिष्क की कार्य प्रणाली, चिन्तन, संकल्प, संवेदनाओं आदि शारीरिक एवं मानसिक क्रियाओं तथा प्रतिक्रियाओं के संचालन में सहयोग करती हैं। हमें अपना सुख-दु:ख, भला-बुरा, सही-गलत का विवेक जगाने की क्षमता प्रदान करती हैं। ये हमारे जीवन की गतिविधियों, ऊर्जा, स्थिरता, व्यक्तित्व, हलन-चलन, विकास, व्यवस्था का नियन्त्रण करती हैं। एण्टीबायोटिक एवं अनावश्यक दवाइयों के अत्यधिक सेवन से प्राय: ग्रन्थियाँ निष्क्रिय हो जाती हैं, जिससे शरीर की रोग प्रतिकारात्मक शक्ति घटने लगती है।

अन्त:स्रावी ग्रन्थियों की कार्य प्रणाली

जिस प्रकार मधुमक्खी फलों का रस संचय कर उसमें अपना थूक मिलाकर मधु बनाती है, ठीक उसी प्रकार ग्रन्थियाँ भी शरीर में से आवश्यक तत्त्व ग्रहण कर उसमें अपना रस मिलाकर रासायनिक कारखानों की भांति शक्तिशाली हारमोन का निर्माण करती हैं। प्रत्येक ग्रन्थि आवश्यकतानुसार एक या उससे अधिक हारमोन बनाती है, जिनकी तरंगें

नाड़ी संस्थान के माध्यम से आकाशवाणी की भांति प्रसारित हो, शरीर के प्रत्येक भाग में शीघ्र पहुँचने की क्षमता रखती है। ये हारमोन हमारे शरीर में प्रतिक्षण निष्क्रिय होने वाली मृत प्राय: कोशिकाओं को पुनर्जीवित कर क्रियाशील बनाने का कार्य करते हैं, जिससे सभी शारीरिक क्रियाएँ व्यवस्थित रूप से चलती रहती हैं। सभी ग्रन्थियाँ केन्द्रीय मंत्री-मण्डल की भांति सामूहिक जिम्मेदारी से कार्य करती हैं। किसी एक ग्रन्थि के खराब अथवा निष्क्रिय होने का प्रभाव अन्य ग्रन्थियों के कार्यों पर भी पड़ता है।

एक्यूप्रेशर पद्धति द्वारा इन ग्रन्थियों के हथेली एवं पगथली में स्थित संवेदन बिन्दुओं पर उचित दबाव देकर इनकी कार्य प्रणाली को सरलता पूर्वक व्यवस्थित/नियन्त्रित किया जा सकता है। जिससे हमारी जीवन पद्धति में आवश्यक परिवर्तन लाया जा सकता है, मानवीय गुणों का विकास किया जा सकता है, बुरी आदतों एवं पाशविक वृत्तियों से छुटकारा पाया जा सकता है।

प्रमुख अन्त:स्रावी ग्रन्थियाँ– हमारे शरीर में 8 प्रमुख अन्त:स्रावी ग्रन्थियाँ होती हैं–

1. पीयूष, 2. पीनियल, 3. थॉयराइड, 4. पेराथॉयराइड,
5. थायमस, 6. एड्रीनल, 7. पेंक्रियाज, 8. प्रजनन।

1. पीयूष ग्रन्थि (Pituitary Gland)

इस ग्रन्थि का आकार मटर के दाने से भी छोटा होता है। सिर में मस्तिष्क के नीचे स्थित यह सभी ग्रन्थियों में प्रमुख ग्रन्थि होती है। अत: इसे मास्टर ग्लॅण्ड अथवा संचालक ग्रन्थि भी कहते हैं। इसका स्राव अन्य ग्रन्थियों को उत्तेजित करता है ताकि वे अपना-अपना निर्धारित कार्य बराबर कर सकें।

यह ग्रन्थि व्यक्ति को तनावमुक्त, प्रसन्न, उत्साहित, समभावी, पैनी दृष्टि वाला बनाने के साथ पारस्परिक प्रेम सम्बन्ध बनाये रखने में बहुत महत्त्वपूर्ण होती है। यह शरीर के आन्तरिक हलन-चलन, स्फूर्ति, हृदय की धड़कन, संवेदनशील नाड़ियों का संचालन, शरीर के तापक्रम एवं शक्कर की मात्रा को नियन्त्रित करती है। शरीर के विकास में इसका महत्त्वपूर्ण योगदान होता है। यदि बाल्यावस्था में यह ग्रन्थि अधिक सक्रिय हो जाती है तो बालक अपेक्षाकृत अधिक लम्बा हो जाता है, परन्तु यदि यह ग्रन्थि शिथिल हो तो व्यक्ति बोना रह जाता है। सिर के बालों एवं हड्डियों के विकास को यह संतुलित रखती है।

इसका मानसिक प्रतिभा, रक्त के दबाव, प्रजनन अंगों के विकास पर गहरा प्रभाव पड़ता है। स्त्रियों में प्रसूति के समय गर्भाशय में लचीलापन आना तथा स्तनों में दूध का नियन्त्रण इसी ग्रन्थि द्वारा होता है। यदि यह ग्रन्थि बराबर कार्य न करे तो कमजोरी, अधिक प्यास लगना, अधिक पेशाब आना, बालों का झड़ना, समय के पूर्व सफेद होना, गंजापन,

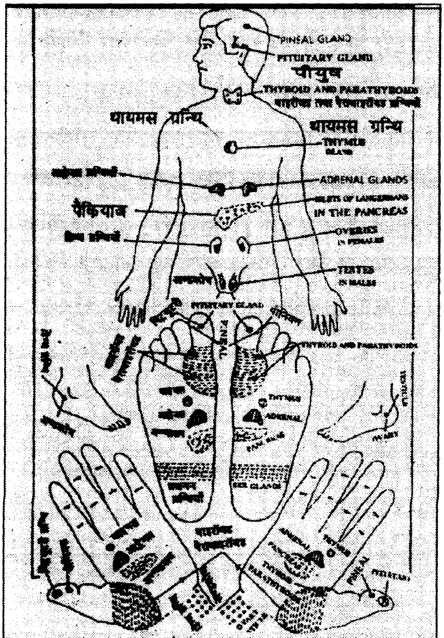

शरीर में अन्तःस्रावी ग्रंथियों की स्थिति एवं संबंधित प्रतिवेदन केन्द्र

मानसिक विकास का अवरुद्ध होना, स्मरण शक्ति बराबर न होना आदि रोग हो सकते हैं।

यह ग्रन्थि हमारी जीवन पद्धति, प्रवृत्तियों को नियन्त्रित करती है। नकारात्मक सोच वालों, झूठ बोलने वालों, शरारती लोगों, घमण्डी, क्रोधी, दुराचारी, पागल व्यक्तियों में यह ग्रन्थि बराबर कार्य नहीं करती है। अधिकांश आत्महत्याओं का कारण इस ग्रन्थि का असंतुलन होता है। इसमें सूजन आ जाने से हृदय की धड़कन बढ़ जाती है, आंखें बाहर आने लगती हैं एवं शरीर कमजोर होने लगता है। इसके अधिक सक्रिय होने पर व्यक्ति वाचाल, अस्थिर, बात-बात में स्वभाव (मूड) बदलने वाला, अत्यधिक संवेदनशील हो जाता है एवं उसकी त्वचा गर्म रहने लगती है। ज्ञान मुद्रा इस ग्रन्थि के बराबर कार्य करने में सहयोग करती है।

पीनियल ग्रन्थि (Peneal Gland)

यह ग्रन्थि मस्तिष्क के पीछे स्थित होती है जिसका आकार राई के दाने से भी छोटा होता है। यह ग्रन्थि प्रधान सचिव की भांति शरीर की प्रशासनिक व्यवस्था एवं गतिविधियों के संचालन में सहयोग करती है। सभी ग्रन्थियों एवं अवयवों के अनुपात को आवश्यकतानुसार संतुलित रखना, उनका विकास करना एवं उनसे आवश्यक कार्य करवाना, इसके अधीन होता है। संकट से बचने के लिये आवश्यक निर्देश देना एवं शीघ्र क्रियान्वित कराना इसका मुख्य कार्य होता है। यह निर्णयात्मक क्षमता का प्रतिनिधित्व करती है। यदि यह ग्रन्थि बराबर कार्य न करे तो व्यक्ति की निर्णयात्मक क्षमता कम हो जाती है जिससे वह समय पर सही निर्णय नहीं ले पाता।

यह ग्रन्थि शरीर में पोटेशियम, सोडियम एवं पानी के प्रमाण को भी संतुलित रखती है। अतः यदि यह ग्रन्थि बराबर कार्य न करे तो शरीर गुब्बारे की भांति फूल सकता है एवं गुर्दे खराब हो सकते हैं।

थॉयराइड ग्रन्थि (Thyoroid Gland)

गहरे लाल रंग की ग्रन्थि कंठ के नीचे गले की जड़ में दो भागों में विभक्त होती है। इसका पाचन क्रिया से सीधा सम्बन्ध होता है तथा यह भोजन को रक्त, मांस, मज्जा, हड्डियाँ एवं वीर्य में बदलने में सहयोग करती है। यह ग्रन्थि शरीर के मोटापे और वजन का नियन्त्रण रखती है। इसका प्रजनन अंगों से भी सीधा सम्बन्ध होता है। कामेच्छा को गति देने एवं प्रजनन अंगों को स्वच्छ रखने तथा महिलाओं के एम.सी.(महावारी) को नियन्त्रित रखने के कार्य में इस ग्रन्थि की महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है। ऑक्सीजन के उपयोग तथा कार्बनडाईऑक्साईड के निष्कासन का नियन्त्रण भी यह ग्रन्थि करती है। शरीर के सभी अंगों में शक्ति उत्पन्न करने के लिए आवश्यक स्राव भेजना, श्वसन का संचालन, शरीर में केल्सियम, आयोडीन तथा कोलोस्ट्रोल के निर्माण पर नियन्यण में सहयोग करती है। यह हड्डियों के विकास, घाव भरने एवं रक्त के प्रवाह को नियन्त्रित करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती है। मधुर, कर्कश, मोटी, धीमी आदि आवाज का नियन्त्रण, फुर्तीला अथवा आलसी, क्रूर अथवा दयालु, अधीर या धैर्यवान, उत्सुक अथवा उदासीन आदि स्वभाव का नियन्त्रण, इससे सम्बन्धित होता है।

यह ग्रन्थि दाम्पत्य एवं पारिवारिक जीवन में विशेष महत्त्व रखती है। क्योंकि ऐसे पति-पत्नी जिनकी ये ग्रन्थियाँ एक दूसरे से विपरीत होती हैं, अर्थात् एक की सक्रिय एवं दूसरे की अपेक्षाकृत निष्क्रिय हो तो उनके स्वभाव में तालमेल बैठना कठिन होता है। इसके स्राव शरीर को बाह्य वातावरण के अनुकूल बनाने में सहयोग करते हैं। जब यह ग्रन्थि अपनी क्षमता से कम कार्य करती है तो व्यक्ति का चयापचय तंत्र **(Metabolism)** असंतुलित हो जाता है। परिणामस्वरूप उसका वजन बढ़ने लगता है। परन्तु जब यह ग्रन्थि अधिक सक्रिय हो जाती है तो व्यक्ति का वजन घटने लगता है।

थॉयराइड ग्रन्थि का कार्य स्पार्क जनरेटर अथवा स्टोरेज बैटरी के समान होता है। यदि हम शरीर रूपी हमारी बैटरी को जल्दी डिस्चार्ज कर देते हैं तो हमें थकावट अनुभव होने लगती है एवं वजन बढ़ने लगता है, परन्तु यदि उसको ओवरचार्ज करते हैं तो व्यक्ति हतोत्साहित, चिड़चिड़ा, कमजोर एवं दुबला होने लगता है।

थॉयराइड ग्रन्थि ज्यादा सक्रिय होने की अवस्था में शरीर का तापमान सामान्य से अधिक रहने लगता है, वजन घटना शुरू हो जाता है, गर्मी सहन करने की क्षमता कम हो जाती है, पसीना ज्यादा आने लगता है, व्यक्ति को ज्यादा बेचैनी एवं घबराहट होने लगती है जिससे साधारण सी छोटी-छोटी बातों पर भी व्यक्ति उत्तेजित होने लगता है, वह बहुत अधिक संवेदनशील, बात-बात में शीघ्र मूड बदलने वाला (जिसको आसानी से नियन्त्रित

न किया जा सके) हो जाता है।

बहुत से बच्चों में बचपन से ही ज्यादा चाकलेट/टॉफियाँ खाने अथवा अन्य पैतृक कारणों से थॉयराइड ग्रन्थि अशक्त हो जाती है जिसके परिणामस्वरूप उनकी रोग प्रतिरोधक क्षमता कमजोर हो जाती है और उनकी जननेन्द्रियाँ पूर्णतः विकसित नहीं हो पाती हैं।

पेराथॉयराइड ग्रन्थि (Parathyroid Gland)

यह गले में थॉयराइड ग्रन्थि के पीछे दोनों तरफ दो-दो अर्थात् कुल चार छोटी-छोटी ग्रन्थियाँ होती हैं। ये ग्रन्थियाँ शरीर की अपेक्षाकृत अधिक रक्तमय भाग होती हैं तथा रक्त के रासायनिक तत्त्वों को ठीक रखने में सहायक होती हैं।

इस ग्रन्थि के स्राव रक्त में केल्शियम एवं फास्फोरस के प्रमाण का संतुलन रखते हैं। शरीर में इनका संतुलन बिगड़ने से बांईटे (Cramps) आने लगते हैं। रक्त में केल्सियम का अनुपात काफी महत्त्वपूर्ण होता है। क्योंकि केल्सियम चोट के समय रक्त के बहाव को रोकने में अहं भूमिका निभाता है। साथ ही केल्सियम कोलस्ट्रोल को नियन्त्रित रखने, नाड़ियों तथा मांसपेशियों की गतिविधियों को संचालित करने हेतु आवश्यक होता है।

रक्त में केल्शियम की मात्रा अधिक होने से गुर्दो में केल्सियम जमने लगता है। जिससे गुर्दो में पथरी हो सकती है। जब केल्सियम मांसपेशियों के तन्तुओं पर जमा होने लगता है तो रियुमेटिज्म हो सकता है और यदि केल्सियम जोड़ों पर जमने लगता है तो आर्थाराइटिस हो सकता है। क्रोध से यह ग्रन्थि खराब हो जाती है और कभी-कभी अत्यधिक आवेग से पक्षाघात (लकवा) तक हो सकता है। शांति, धैर्य, स्थिरता, सहयोग देने की भावना आदि मानवीय गुण पेराथॉयराइड की स्वस्थता के प्रतीक होते हैं।

थॉयमस ग्रन्थि (Thymus Gland)

यह ग्रन्थि गर्दन के नीचे तथा हृदय के ऊपर स्थित होती है। इसको बच्चों की धायमाता भी कहते हैं, क्योंकि यह रोगों से बच्चों की रक्षा करती है। यह ग्रन्थि बालकों के शारीरिक विकास एवं जननेन्द्रियों के विकास पर नियन्त्रण रखती है। युवा अवस्था प्रारम्भ होने पर इसके पिंड धीरे-धीरे लुप्त होने लगते हैं अर्थात् यह ग्रन्थि अपना कार्य बन्द कर देती है। यदि किसी कारणवश यह ग्रन्थि वयस्क होने पर भी क्रियाशील रहे तो शरीर में जड़ता आ जाती है तथा थकावट जल्दी अनुभव होने लगती है। जब तक यह ग्रंथि सक्रिय रहती है प्रजनन अंग उत्तेजित नहीं होते। मन में कामवासना के विकार जागृत नहीं होते। ऐसा कहा जाता है कि वृद्धावस्था में यह ग्रन्थि पुनः सक्रिय हो जाती है। इसी कारण बच्चों और वृद्धों के स्वभाव में प्रायः काफी एक रूपता होती है।

एड्रीनल ग्रन्थि (Adrenal Gland)

ये ग्रन्थियाँ दोनों गुर्दों के ठीक ऊपर होती हैं। शरीर की संचार व्यवस्था, हलन-चलन, श्वसन, रक्त परिभ्रमण, पाचन, मांस पेशियों के संकुचन अथवा फैलाव, पानी अथवा अन्य अनावश्यक पदार्थों के निष्कासन आदि प्रमुख शारीरिक गतिविधियों में ये महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। इसका कार्य लड़ो या भाग जाओ अर्थात् शरीर की अवरोधक/प्रतिकारात्मक क्षमता विकसित करना होता है। उसके लिये आवश्यक सभी प्रकार की दवाओं का शरीर में निर्माण इस ग्रन्थि के स्राव बनाने में सहयोग करता है। यह व्यक्ति को साहसी, निर्भय, सहनशील, आशावादी बनाती है एवं आत्मविश्वास जागृत करती है। शरीर को सभी प्रकार की एलर्जी एवं रोगों से बचाती है। अत्यधिक भय अथवा साधारण से रोगों में दवाई लेने तथा बाल्यकाल में बच्चों के अनावश्यक रोग निरोधक टीके लगाने से, ये ग्रन्थियाँ प्राय: बराबर कार्य नहीं करतीं।

पेन्क्रियाज ग्रन्थि (Pancreas Gland)

यह पेट में स्थित 6' से 8' लम्बी ग्रन्थि होती है। इसका ऊपरी भाग पाचक रस बनाता है जो क्षारीय स्वभाव का होने से शरीर में अम्लीय तत्त्वों का नियन्त्रण रखता है। इसमें अनेक तत्त्व होते हैं जो कठोर भोजन को पतला बनाने में सहयोग करते हैं जिससे आंतें उनको ग्रहण कर सकें। जबकि नीचे वाला भाग इंसुलिन नामक रस बनाता है जो शरीर में ऊर्जा हेतु मुख्य तत्त्व होता है। यह ग्लुकोज को ग्रहण करने में सहायता करता है तथा शरीर में उसकी मात्रा को संतुलित एवं नियन्त्रित रखता है। जब तक इंसुलिन उचित मात्रा में बनता है तो यकृत भी अतिरिक्त ग्लूकोज को ग्लाईकोजिन में बदल कर अपने पास एकत्रित रख सकता है ताकि आवश्यकता पड़ने पर पुन: ग्लूकोज में बदल कर कोशिकाओं तक पहुँचा सके। दूसरी बात इंसुलिन की कमी के कारण शरीर ग्लूकोज को चर्बी के रूप में भी नहीं रख पाता। फलत: ग्लूकोज जिसे शरीर पूर्ण ग्रहण नहीं कर पाता मूत्र द्वारा बाहर चला जाता है एवं मधुमेह नामक रोग हो जाता है। व्यक्ति अन्दर ही अन्दर शक्तिहीन होने (दीमक लगी लकड़ी के समान) लगता है। आँखें एवं गुर्दे इसकी खराबी से जल्दी प्रभावित होते हैं। तनाव मधुमेह के रोग का मुख्य कारण होता है। खुराक का नियन्त्रण, पाचन सम्बन्धी नियमों का पालन, प्राणायाम, नियमित भ्रमण, स्वाध्याय, भक्ति, सद्‌चिन्तन, तनावमुक्त आचरण, कड़वे स्वादों का सेवन इस रोग के निवारण में प्रभावशाली भूमिका निभाते हैं। पेन्क्रियाज बहुत ही संवेदनशील ग्रंथि होती है एवं इसकी मामूली खराबी से शरीर की सारी रासायनिक क्रियाएँ प्रभावित होने लगती हैं।

यदि पेन्क्रियाज अधिक कार्य करे तो इंसुलिन आवश्यकता से ज्यादा बनने लगता है,

जिससे रक्त में ग्लूकोज की मात्रा कम होने लगती है। इस परिस्थिति में भूख ज्यादा लगती है, पसीना अधिक आता है, रक्तचाप घट जाता है, सिर दर्द होता है एवं कमजोरी का अनुभव होता है। रोगी कभी-कभी बहकी-बहकी बातें करने लगता है और यदि ग्लूकोज की मात्रा बहुत कम हो जाए तो अचानक बेहोशी की अवस्था में पहुँच मृत्यु तक हो जाती है। ऐसी परिस्थिति के लक्षण प्रकट होने पर रोगी को तुरन्त कुछ मीठा पिला देना चाहिए।

प्रजनन ग्रन्थियाँ (Sex Glands)

यह ग्रन्थियाँ कामेच्छा को नियन्त्रित कर विपरीत लिंग (सेक्स) में आर्कषण पैदा करती हैं। प्रजनन का कार्य अत्यधिक महत्त्वपूर्ण होने से अन्य ग्रंथियाँ भी इस कार्य में प्रमुख भूमिका निभाती हैं। पीनियल जहाँ कामेच्छा जागृत करती है, थॉयराइड उसे गति देती है तथा पीयूष ग्रंथि प्रजनन अंगों का विकास करती है, वहीं यह ग्रन्थि सारे प्रजनन तंत्र के कार्यों का संचालन करती है। प्रजनन ग्रंथियाँ एवं एड्रीनल ग्रंथियाँ एक दूसरे के हारमोन बनाने में आपस में सहयोग करती हैं, जिससे शरीर एलर्जी से बच सके। जिन महिलाओं का गर्भाशय शल्य चिकित्सा द्वारा निकाल दिया जाता है, रक्त में ओवरीज के हारमोन मिलना बंद हो जाते हैं, ऐसे रोगियों की एड्रीनल, पीयूष एवं थॉयराइड ग्रंथियों को सक्रिय करने से आवश्यक हारमोन की पूर्ति संभव हो सकती है। ऐसे रोगियों की प्राय: सभी ग्रंथियाँ शिथिल हो जाती हैं। अत: सभी ग्रंथियों के प्रतिवेदन बिन्दुओं पर नियमित दबाव देना चाहिये। ये ग्रन्थियाँ बराबर कार्य न करें तो जननेन्द्रिय-सम्बन्धी रोग हो जाते हैं। चेहरे का आकर्षण, तेज, व्यक्तित्व इसी ग्रंथि की क्षमता को दर्शाता है। यह ग्रंथि बालों को बढ़ाने, स्वर सुधारने, शरीर के तापक्रम तथा आकार को संतुलित रखने में सहयोग करती है।

लिम्फ ग्रन्थि

उपर्युक्त ग्रंथियों के अतिरिक्त एक लिम्फ ग्रंथि भी होती है जो यद्यपि अन्त:स्रावी ग्रन्थि नहीं होती है, फिर भी उसका कार्य काफी महत्त्वपूर्ण होता है। इसका कार्य शरीर में पीब को उत्पन्न होने से रोकना है। यह ग्रंथि शरीर की विकृति को दूर करने का महत्त्वपूर्ण कार्य करती है। जब शरीर में विकृति ज्यादा बढ़ जाती है तब इस ग्रन्थि को ज्यादा कार्य करना पड़ता है, जिससे यह कमजोर हो जाती है। कैंसर के बारे में भी यह ग्रंथि सर्वप्रथम चेतावनी देती है।

उपसंहार

जिस प्रकार किसी बड़े नेता से व्यक्तिगत मिलने हेतु लम्बी प्रक्रिया से गुजरना पड़ता है, परन्तु टेलीफोन द्वारा तुरन्त सीधा सम्पर्क हो जाता है। ठीक उसी प्रकार एक्यूप्रेशर चिकित्सा में अन्त:स्रावी ग्रन्थियों के हथेली और पगथली में स्थित प्रतिवेदन बिन्दुओं पर दबाव देकर

ग्रन्थियों के असंतुलन को सरलता पूर्वक दूर किया जा सकता है। एक्यूप्रेशर पद्धति द्वारा इन ग्रंथियों का जितना सरल, सहज, प्रभावशाली उपचार हो सकता है उतना अन्य चिकित्सा पद्धतियों में प्रायः सम्भव नहीं होता। आज जहाँ चारों ओर क्रूरता, हिंसा/आतंकवाद, क्रोध, स्वछन्दता, घमण्ड, माया, लोभ, घृणा, द्वेष, तनाव आदि दुष्प्रवृत्तियाँ बढ रही हैं। उन्हें संबंधित ग्रंथियों का उपचार कर आसानी से बदला जा सकता है।

स्वास्थ्य मंत्रालय से अपेक्षा है कि विज्ञापन तथा मनोरंजन के नाम पर संचार मंत्रालय द्वारा बेहिचक काम विकार बढ़ाने वाले जो दृश्य टी.वी. पर दिखाये जाते हैं, जिनसे उठने वाले आवेग, जनता की ग्रन्थियों को खराब कर रहे हैं, उन पर रोक लगाई जाए। इससे होने वाले दुष्प्रभावों का पता लगाया जाए। अनावश्यक रोग अवरोधक टीकों का प्रचार बन्द हो। डॉक्टरों एवं अस्पतालों के निरन्तर बढ़ने के बावजूद जनता का स्वास्थ्य निरन्तर क्यों गिरता जा रहा है, इसके कारणों का पता लगाया जाए। रोगियों की संख्या में तीव्र गति से वृद्धि क्यों हो रही है? आज हमारी प्रतिकारात्मक शक्ति क्यों कम हो रही है? सहनशक्ति क्यों क्षीण हो रही है? दवाइयों के कहीं दुष्प्रभाव तो नहीं पड़ रहे हैं? नये-नये रोग क्यों पनप रहे हैं? उन कारणों को दूर करने में अपने कर्त्तव्य एवं जिम्मेदारी का ईमानदारी पूर्वक पालन किया जाए। स्वस्थ रहने की भावना रखने वाले प्रत्येक व्यक्ति को तथा दूसरों को स्वस्थ रखने में जुड़े प्रत्येक चिकित्सक को पूर्वाग्रह छोड़ ग्रंथियों के इस सरल उपचार को अवश्य सीखना चाहिये। हमारे शरीर में 75 प्रतिशत से ज्यादा रोगों का मूल कारण इन ग्रंन्थियों में असन्तुलन होता है। जेलों में कैदियों के स्वभाव परिवर्तन हेतु ग्रंथियों का उपचार किया जाए। सभी अध्यापकों एवं अभिभावकों से विनम्र अनुरोध है कि बालकों के चारित्रिक विकास हेतु इन ग्रंथियों को स्वस्थ रखने के तरीकों की बालकों को जानकारी दें। जन साधारण जितना-जितना इन ग्रंथियों के प्रति सजग होगा, उतनी-उतनी उनकी प्रतिकारात्मक शक्ति बढ़ेगी। चारित्रिक गुणों का विकास होगा, तनाव घटेगा, विवेकशीलता बढ़ेगी, उसमें सद्चिन्तन की प्रवृत्ति बढ़ेगी, आशावादी दृष्टिकोण पैदा होगा, साहस बढ़ेगा और चिन्ताएँ मिटेंगी। व्यक्तित्व का विकास होने से प्रतिकूल परिस्थितियों में भी प्रसन्न एवं स्वस्थ रहा जा सकेगा।

-चोरडिया भवन, जालोरी गेट के बाहर, जोधपुर-342003 (राज.)

E-mail: cmchordia.jodhpur@gmail.com, Website: www.chordiahealthzone.in

स्वास्थ्य-आलेख प्रश्नोत्तर प्रतियोगिता

जिनवाणी के इस अंक में प्रकाशित 'स्वास्थ्य-विज्ञान' स्तम्भ के अन्तर्गत प्रकाशित उपर्युक्त आलेख पर कुछ प्रश्न दिए जा रहे हैं, आप इनका उत्तर **15 जुलाई 2014** तक श्री चंचलमल जी चोरडिया के उपर्युक्त पते पर अपने फोन नं., ई-मेल एवं पते सहित सीधे प्रेषित कर

सकते हैं। विलम्ब से प्राप्त उत्तरों को प्रतियोगिता में सम्मिलित नहीं किया जाएगा। इस प्रतियोगिता में किसी भी वय का व्यक्ति भाग ले सकता है। सर्वाधिक अंक प्राप्तकर्ताओं को प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय पुरस्कार के अन्तर्गत 1000/-, 750/- एवं 500/- की राशि प्रेषित की जाएगी।

प्रश्नः-

1. ग्रन्थियाँ कैसे कार्य करती हैं?
2. थायराइड ग्रन्थि के बराबर कार्य न करने से शरीर में क्या विपरीत स्थिति बन सकती है?
3. स्वास्थ्य मंत्रालय से आपकी क्या अपेक्षाएँ हैं?
4. अन्तस्रावी ग्रन्थियाँ क्यों ठीक से कार्य नहीं कर पाती हैं?
5. एक्यूप्रेशर द्वारा ग्रन्थियों का उपचार क्यों सरल एवं प्रभावशाली होता है?
6. पेन्क्रियाज के कार्य न करने से शरीर में क्या समस्याएँ उत्पन्न हो सकती हैं?
7. गर्भाशय की शल्य चिकित्सा के पश्चात् क्या सावधानियाँ रखनी चाहिए?

स्वास्थ्य-आलेख प्रश्नोत्तर प्रतियोगिता का परिणाम

जिनवाणी के अप्रेल-2014 के अंक में 'स्वास्थ्य-विज्ञान स्तम्भ' के अंतर्गत '**भोजन और स्वास्थ्य**' के प्रश्नों के उत्तर 65 प्रतियोगियों से प्राप्त हुए। सर्वाधिक अंक प्राप्त करने वाले प्रतियोगियों के नाम इस प्रकार हैं-

पुरस्कार एवं राशि-	**नाम**	
प्रथम पुरस्कार (1000/-रु.)	श्रीमती वंदना भड़गतिया-जयपुर	(70/70)
द्वितीय पुरस्कार (750/-रु.)	श्रीमती विद्या संघवी-बदनावर, धार(म.प्र.)	(67.5/70)
तृतीय पुरस्कार (500/-रु.)	श्रीमती रेखा जसवंत नंगावत-मैसूर	(67/70)

अन्य प्रतियोगी अपने अंक मालूम करना चाहें तो चंचलमल जी चोरड़िया-94141-34606 (मो.) से सम्पर्क कर सकते हैं। प्रतियोगी अपना नाम व पूरा पता उत्तरपुस्तिका एवं लिफाफे पर अवश्य लिखें। पता नहीं लिखे जाने पर उसे प्रतियोगिता में शामिल नहीं किया जाएगा।

स्वास्थ्य-स्तम्भ पर अभिमत

सुश्री मनीषा भण्डारी

मैंने आपका अप्रेल-2014 का लेख ''भोजन और स्वास्थ्य'' पढ़ा जो मुझे बेहद ही प्रभावशाली व सभी उम्र के लोगों के लिए उपयोगी व लाभप्रद लगा। आज के समय के खान-पान को देखें तो लोगों को इस प्रकार का मार्गदर्शन मिलना जरूरी है, जिससे व्यक्ति अपने खान-पान में सुधार करके होने वाली कितनी ही खतरनाक बीमारियों से बच सकता है। इन नियमों का जितना अधिक पालन किया जाए उतना हमारा भोजन सरस, सुपाच्य व स्वादिष्ट बन सकता है व हमें भोजन का पूरा-पूरा लाभ मिल सकता है। *-12, राज एन्कलेव, सेक्टर 21, चौ. हा. बोर्ड, जोधपुर*

बाल-स्तम्भ

चोटी की कीमत

डॉ. गिरिराजशरण अग्रवाल

बाल-स्तम्भ के अन्तर्गत प्रकाशित इस रचना को पढ़कर अन्त में दिए गए प्रश्नों के उत्तर 20 वर्ष की आयु तक के पाठक 15 जुलाई 2014 तक जिनवाणी संपादकीय कार्यालय, सामायिक-स्वाध्याय भवन, कुम्हार छात्रावास के सामने, प्लॉट नं. 2, नेहरु पार्क, जोधपुर-342003(राज.) के पते पर प्रेषित करें। उत्तर के साथ अपनी आयु तथा पूर्ण पते का भी उल्लेख करें। श्रेष्ठ उत्तरदाताओं को श्री महावीरचन्द जी बाफना, जोधपुर द्वारा अपनी धर्मपत्नी एवं श्रीमती अरुणा जी, श्री मनोजकुमार जी, श्री कमलेश कुमार जी बाफना की माताश्री स्व. श्रीमती मोहिनीदेवी जी बाफना की पुण्य-स्मृति में पुरस्कृत किया जा रहा है। पुरस्कारों की राशि इस प्रकार है- प्रथम पुरस्कार-500 रुपये, द्वितीय पुरस्कार-300 रुपये, तृतीय पुरस्कार- 200 रुपये तथा 150 रुपये के पाँच सान्त्वना पुरस्कार।

एक दिन बातों-बातों में राजा कृष्णदेव राय ने तेनालीराम से पूछा-'अच्छा यह बताओ कि किस प्रकार के लोग सबसे अधिक मूर्ख होते हैं और किस प्रकार के अधिक सयाने?'

तेनालीराम ने झट से उत्तर दिया-'महाराज, ब्राह्मण सबसे अधिक मूर्ख और व्यापारी सबसे अधिक सयाने होते हैं।'

'ऐसा कैसे हो सकता है, तेनालीराम? ब्राह्मण तो पढ़े-लिखे और विद्वान् होते हैं और व्यापारी कम पढ़े-लिखे।' राजा ने कहा।

'मैं यह बात साबित कर सकता हूँ।' तेनालीराम ने कहा।

'कैसे?' राजा ने पूछा।

'अभी जान जाएँगे आप। जरा, राजगुरु को बुलवाइए।'

राजगुरु को बुलवाया गया।

तेनालीराम ने कहा-"महाराज! अब मैं अपनी बात साबित करूँगा, लेकिन मेरी एक प्रार्थना है कि इस काम में आप दखल नहीं देंगे। आप यह वचन दें, तभी मैं अपना काम आरम्भ करूँगा।"

राजा ने तेनालीराम की बात मान ली।

तेनालीराम ने आदरपूर्वक राजगुरु से कहा- 'राजगुरुजी! महाराज को आपकी चोटी की आवश्यकता है। इसके बदले आपको मुँह-माँगा इनाम दिया जाएगा।'

राजगुरु को काटो तो खून नहीं। वर्षों से पाली गई प्यारी चोटी को कैसे कटवा दें? लेकिन राजा की आज्ञा थी। टाली भी कैसे जा सकती थी।

उसने कहा- 'तेनालीरामजी! मैंने बड़े जतन से अपनी इस चोटी को पाला है। मैं इसे कैसे दे सकता हूँ?'

'राजगुरुजी! आपने जीवन-भर महाराज का नमक खाया है। चोटी कोई ऐसी वस्तु तो है नहीं, जो फिर न आ सके। फिर महाराज मुँह-माँगा इनाम भी दे रहे हैं। चाहें तो आपसे सब कुछ छीन भी सकते हैं। लेकिन हमारे महाराज न्यायप्रिय हैं और ऐसा कुछ नहीं करना चाहते, जिससे आपको हानि हो।'

राजगुरु मन-ही-मन समझ गया कि यह तेनालीराम की चाल है।

तेनालीराम ने पूछा- 'राजगुरुजी! आपको चोटी के बदले क्या इनाम चाहिए?'

राजगुरु ने धीरे से कहा- 'पाँच स्वर्ण मुद्राएँ बहुत होंगी।'

पाँच स्वर्ण मुद्राएँ राजगुरु को दे दी गईं और नाई को बुलवाकर राजगुरु की चोटी कटवा दी गई।

अब तेनालीराम ने नगर के सबसे प्रसिद्ध व्यापारी को बुलवाया। उसकी भी बहुत बड़ी चोटी थी।

तेनालीराम ने व्यापारी से कहा- 'महाराज को तुम्हारी चोटी की आवश्यकता है।'

'सब कुछ महाराज का ही तो है, जब चाहें ले लें, लेकिन बस इतना ध्यान रखें कि मैं एक गरीब आदमी हूँ।' व्यापारी ने कहा।

'तुम्हें तुम्हारी चोटी का मुँह-माँगा दाम दिया जाएगा।' तेनालीराम ने कहा।

'सब आपकी कृपा है लेकिन....।' व्यापारी ने कहा।

'लेकिन-वेकिन क्या है? क्या कहना चाहते हो तुम?' तेनालीराम ने पूछा।

'जी बात यह है कि जब मैंने अपनी बेटी का विवाह किया था, तो अपनी इसी चोटी की लाज रखने के लिए मैंने पूरी पाँच हजार स्वर्ण मुद्राएँ खर्च की थीं। पिछले साल मेरे पिता की मौत हुई तब भी इसी के कारण पाँच हजार स्वर्ण मुद्राओं का खर्च हुआ और अपनी इसी प्यारी-दुलारी चोटी के कारण बाजार से कम-से-कम पाँच हजार स्वर्ण मुद्राओं का उधार मिल जाता है। बड़ी बेशकीमती चोटी है यह।' अपनी चोटी पर हाथ फेरते हुए व्यापारी ने कहा।

'इस तरह तुम्हारी चोटी का मूल्य पंद्रह हजार स्वर्ण मुद्राएँ हुआ। ठीक है, यह मूल्य तुम्हें दे दिया जाएगा।'

पंद्रह हजार स्वर्ण मुद्राएँ व्यापारी को दे दी गई।

व्यापारी चोटी मुँडवाने बैठा। जैसे ही नाई ने चोटी पर उस्तरा रखा, व्यापारी कड़क कर बोला- 'सँभलकर, नाई के बच्चे। जानता नहीं, अब यह महाराज कृष्णदेव राय की चोटी है।'

राजा ने सुना तो आगबबूला हो गया। इस व्यापारी की यह मजाल कि हमारा अपमान करे। उन्होंने कहा- 'धक्के मारकर निकाल दो इस सिरफिरे को।'

व्यापारी पंद्रह हजार स्वर्ण मुद्राओं की थैली को लेकर वहाँ से भाग निकला।

कुछ देर बाद तेनालीराम ने कहा- 'आपने देखा महाराज! राजगुरु ने तो पाँच स्वर्ण मुद्राएँ लेकर अपनी चोटी मुँडवा दी। व्यापारी पंद्रह हजार स्वर्ण मुद्राएँ भी ले गया और चोटी भी बचा ली। आप ही कहिए, ब्राह्मण सयाना हुआ कि व्यापारी?'

राजा ने कहा- 'सचमुच तुम्हारी बात ठीक निकली।'

-'तेनालीराम की सूझबूझ' पुस्तक से साभार

प्रश्न:-

1. राजा कृष्णदेवराय और तेनालीराम की तरह ही कौनसे राजा और मंत्री की कथाएँ प्रसिद्ध हैं?
2. मूर्ख और सयाना किसे कहते हैं?
3. "मैंने अपनी चोटी की लाज के लिए बेटी के विवाह में पाँच हजार स्वर्ण मुद्राएँ खर्च की"- व्यापारी के इस कथन का क्या तात्पर्य है?
4. वाक्य में प्रयोग कीजिए- काटो तो खून नहीं।
5. बुद्धिमत्ता से युक्त कोई अन्य कथा, जो आपको बहुत पसन्द है, लिखें।

बाल-स्तम्भ [अप्रेल-2014] का परिणाम

जिनवाणी के अप्रेल-2014 के अंक में बाल-स्तम्भ के अंतर्गत 'प्रसन्नता का रहस्य' रचना के प्रश्नों के उत्तर 23 बालक-बालिकाओं से प्राप्त हुए। पूर्णांक 30 हैं।

पुरस्कार एवं राशि	नाम	अंक
प्रथम पुरस्कार-500/-	दक्ष कटारिया-वाशी, नवी मुम्बई	26.5
द्वितीय पुरस्कार-300/-	अर्पित जैन-जोधपुर	26
तृतीय पुरस्कार- 200/-	शिवांशु जैन-जोधपुर	25
सान्त्वना पुरस्कार- 150/-	श्रेयांस जारोली-सेंती, चित्तौड़गढ़	23
	भावेश जैन-भैंसोदा मंडी, मन्दसौर (म.प्र.)	22
	कुनाल जैन-जयपुर	21
	आरोही श्रेणिक छाजेड़-भुसावल (महा.)	21
	अमीषा कोठारी-अजमेर	21

कृति की 2 प्रतियाँ अपेक्षित हैं

नूतन साहित्य

डॉ. श्वेता जैन

जैन आगम परिचय- सम्पादक- श्री त्रिलोकचन्द जैन (पूर्व साधु), ***प्रकाशक***- श्री जैनागम नवनीत प्रकाशन समिति, राजकोट, ***प्राप्ति स्थान***- श्री त्रिलोकचन्द जैन, ओम सिद्धि मकान, 6-वैशालीनगर, रैया रोड, राजकोट-360007(गुजरात), मोबाइल-098982-39961, ***पृष्ठ***-272, ***मूल्य***-अध्ययन, सन्-2014

जैन आगमों की संख्या के सम्बन्ध में विशेष जानकारी देने वाली इस पुस्तक में स्थानकवासी परम्परा के 32 आगमों का संक्षिप्त परिचय दिया गया है। भगवान महावीर की शासन परम्परा के इतिहास के साथ 45 आगम, 84 आगम और नंदीसूत्रगत 73 आगमों की सूची दी गई है। अन्त में सात परिशिष्ट के अन्तर्गत "अंतिम समय की आराधना के जैन साहित्य", "भाषा विवेक", "जैनधर्म के सिद्धान्त एवं क्रियाओं की वैज्ञानिकता", "जैन प्राकृत साहित्य : एक सर्वेक्षण" आदि लेख सम्मिलित किए गए हैं। पुस्तक में विषयानुक्रमणिका का अभाव है। कुछ विवादास्पद विषय भी उठाए गए हैं, यथा- प्रकीर्णक के सम्बन्ध में, दिगम्बर की उत्पत्ति के सम्बन्ध में। अप्रमाणिक कथन भी दृष्टिगोचर होते हैं।

जैन एकता क्यों है जरूरी- समन्वयक- श्री सज्जनराज मेहता, ***प्रकाशक***-जैन युवा संगठन, बैंगलोर, 5 & 6, 3rd Floor, 134, Rajhans golden Mall, Nagarthpet, Bangalore-560002, ***पृष्ठ***-161+3, ***मूल्य***-उल्लेख नहीं, ***वर्ष***- सन् 2014

श्री सज्जनराज जी मेहता के महत् प्रयासों से जैन एकता विषयक एक सौ ग्यारह लेखकों के महत्त्वपूर्ण विचारों का संकलन सुन्दर पुस्तिका के रूप में उपलब्ध हुआ है। इसमें आचार्य चन्द्रयशसूरिजी, आचार्य धर्मधुरंधरसूरिजी, आचार्य महाश्रमण जी, आचार्य राजयशसूरिजी, आचार्य श्री डॉ. शिवमुनिजी, आचार्य श्री सुदर्शनलालजी, आचार्य श्री विजयराजजी, उपाध्याय श्री निजानंदसागरजी आदि संत-मुनिराजों, प्रबुद्ध समाज चिन्तकों का चिन्तन है। सभी मनीषी लेखक जैन एकता की आवश्यकता पर सहमत हैं। इस पुस्तक में जैन एकता का स्वरूप विविध आयामों में प्रस्तुत हुआ है। जैन एकता कैसे हो- इस सम्बन्ध में सुझाव भी चिन्तकों द्वारा दिये गए हैं। अब जरूरत है उनकी उपयोगिता का आकलन कर उन्हें क्रियान्वित करने की; अनेकता के आचार में एकता के विचारों को

नियोजित करने की; द्वेष और क्लेश के पर्वतों को तोड़कर स्वच्छ एकता के निर्झर को बहाने की। इस पुस्तक की कतिपय विशेष पंक्तियाँ इस प्रकार हैं-

1. समाज के सब घटकों में भिन्न-भिन्न विचारों और विभिन्न आस्थाओं के होते हुए भी आपसी प्रेम, एकता और भाईचारे का बना रहना एकता है।
2. United we stand, divided we fall; this adage has been with us since generations. As boundaries diffuse in this ever- shrinking world, unity becomes even more necessary. Only when we unite in spirit, can we truly cope with the challenges we face.
3. जैन शासन के विभिन्न सम्प्रदाय परस्पर विद्वेषभाव न रखें।
4. जैन शासन पर कोई आँच आने की संभावना हो तो उससे अपनी सुरक्षा करने के लिए सभी सम्प्रदाय एकजुट हो जाएँ।
5. यथासम्भव संवत्सरी और महावीर जयंती जैसे महापर्व एक दिन मनाने के लिए सब सहमत हों।
6. मतभेद होने के बावजूद भी जो सुखद और सबके हित में है, उसे एक रूप में सभी स्वीकार कर लें, वही एकता है।
7. एकता के लिए मानसिक, बौद्धिक, भावात्मक और वैचारिक समीपता का होना आवश्यक है। एकता का सबसे उत्तम उदाहरण है मानव शरीर। शरीर में अनेक घटक हैं, किन्तु सभी एक दूसरे का साथ देकर शरीर को जीवित रखते हैं।
8. एकता के लिए अनुकरणीय बातें-
   (1) अपने विचारों का प्रतिपादन किया जाए, न कि दूसरों पर थोपा जाए।
   (2) दूसरों के विचारों के प्रति सहिष्णुता रखी जाए।
   (3) अपने सम्प्रदाय को श्रेष्ठ एवं अन्य को निम्न मानने का प्रचार नहीं किया जाए।
   (4) सम्प्रदाय परिवर्तन को बुरा न माना जाए।
9. एकता चूल्हे में जलती हुई आग है, जीवन की वीणा पर बजता हुआ राग है। बिखराव बेचैनी है, कमजोरी है, दुर्भाग्य है, एकता शांति है, सुकून है, सौभाग्य है। बिखराव का रास्ता इतिहास में ले जाता है, एकता का रास्ता भविष्य बनाता है।
10. संगठन में ऐसा बल है कि वह कई व्यक्तियों को गलत दिशा में जाने से रोक सकता है। आज समाज में एकता का अभाव होने से सामाजिक नियन्त्रण समाप्त हो रहा है।
11. जैन एकता समाज को आध्यात्मिक, नैतिक एवं सामाजिक दृष्टि से ऊँचा उठाने के लिए जरूरी है।

जिनवाणी की श्रेष्ठ रचनाओं के पुरस्कार घोषित

जिनवाणी के जनवरी से दिसम्बर 2012 एवं जनवरी से दिसम्बर 2013 के अंकों में प्रकाशित विभिन्न लेखों/रचनाओं में से सर्वश्रेष्ठ रचनाओं का चयन दस सदस्य समिति के मूल्यांकन के आधार पर किया गया है। परिणाम इस प्रकार हैं–

(1) आध्यात्मिक/ नैतिक शिक्षा परक लेख/प्रासंगिक आलेख

1. सेवा और साधना के पर्याय उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्रजी म.सा.
   श्री नौरतन मेहता, जोधपुर (मई–2012) **5100/-**
2. सुप्त और जागृत : एक विवेचन (अगस्त-2013)
   डॉ. जवाहरलाल नाहटा, बरपेटा रोड, असम **5100/-**

(2) शोधालेख/ वैज्ञानिक लेख/संगोष्ठी लेख

1. Corruption : Is it a Social Compulsion or A way out? (फरवरी-2012)
   Dr. S.P. Gupta, Jodhpur **5100/-**
2. (1) आगमों में उल्लिखित प्रमुख श्रावकों की जीवन शैली (मार्च-2013)
   श्री प्रकाशचन्द जैन, जलगांव **2550/-**
   (2) समतावादी समाज-संरचना में जैन श्रावक-व्रतों की भूमिका
   डॉ. जिनेन्द्र जैन, उदयपुर (अप्रेल–2013) **2550/-**

(3) आगमिक/तात्त्विक/चिन्तन परक/जीवन शैली से सम्बद्ध लेख

1. अपरिग्रह : नैतिक आचरण की समग्रता (अगस्त-2012)
   डॉ. शिवनारायण जोशी, जोधपुर **5100/-**
2. क्या जैन समाज ध्यान देगा? (अगस्त-2013)
   डॉ. रश्मिभाई झवेरी, मुम्बई **5100/-**

(4) अंग्रेजी भाषा की रचनाएँ

1. Message of Tattvarth Sutra (सितम्बर-2012)
   Sh. C.L. Jain, Jodhpur **5100/-**
2. The Right of All Life forms in Acārāṅga Bhāṣyam (जनवरी-2013)
   Dr. Samani Shashi Prajñā, Ladnun **5100/-**

(5) युवा स्तम्भ-

1. श्रावकाचार में विद्यमान विकृतियाँ (जुलाई-2012)
   श्री पारसमल चण्डालिया, ब्यावर **5100/-**
2. क्रोध एक कमजोरी है (जनवरी-2013)
   श्रीमती बीना जैन, अलीगढ़ (उत्तरप्रदेश) **5100/-**

(6) नारी स्तम्भ-

1. परिवार की धुरी है नारी (नवम्बर-2012)
   श्री नवरतनमल रांका, जयपुर 5100/-
2. पारिवारिक जीवन की सफलता के सूत्र (दिसम्बर-2013)
   प्रो. सुमेरचन्द जैन, बीकानेर 5100/-

(7) बाल स्तम्भ-

1. जीओ और जीने दो (मार्च-2012)
   श्री धर्मचन्द लोढ़ा, देवली 5100/-
2. किशोर मन की जिज्ञासाएँ (अप्रेल-2013)
   श्री मनोहरलाल जैन, धार 5100/-

(8) श्रेष्ठ कविता-

1. प्रभु आपसे करें प्रार्थना(सितम्बर-2012)
   श्री मोहन कोठारी 'विनर' दुर्ग (छत्तीसगढ़) 3100/-
2. राग तजो, संताप मिटेगा(जुलाई-2013)
   श्री मनोज कुमार जैन 'निर्लिप्त', अलीगढ़ (उत्तरप्रदेश) 3100/-

(9) संवाद स्तम्भ/प्रेरक प्रसंग/विचार

1. Some Pearls for Life (फरवरी-2012)
   Miss Minakshi Jain, Nagaur (Raj.) 3100/-
2. Elders : A need of our Family (मार्च-2013)
   Miss Sneha Sukhlecha, Nagaur (Raj.) 3100/-
3. संवाद (2) (मई-2013)
   आभा जैन, भवानी मण्डी 2100/-

(10) विशेषांक आलेख (आगमादर्श आचार्य श्री हीरा, नवम्बर-2013)

1. आचार्य श्री का सांसारिक परिवार एवं कुछ अमिट स्मृतियाँ
   वीरभ्राता श्री प्रेमचन्द गाँधी, दिल्ली 2550/-
2. आचार्य हीरा की आगमनिष्ठा
   श्री सौभाग्यमल जैन, अलीगढ़ (टोंक, राजस्थान) 2550/-

उपर्युक्त पुरस्कारों का वितरण यथावसर किसी समारोह में किया जाएगा। पुरस्कार राशि अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के कार्याध्यक्ष माननीय श्री पी. शिखरमल जी सुराणा के सौजन्य से प्रदान की जाएगी। पुरस्कार हेतु संत-सतीवृन्द की रचनाओं एवं संकलित रचनाओं को सम्मिलित नहीं किया गया है।

-विनयचन्द डागा, मन्त्री, सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जयपुर (राज.)

जिनवाणी पर अभिमत

अप्रेल 2014 की जिनवाणी 17 अप्रेल को मिली। श्रेष्ठता और मौलिकता के आधार पर आप रचनाओं का चयन करते हैं, इसलिए हर अंक विशेष अंक बन जाता है। परिवार स्तंभ के अन्तर्गत प्रकाशित श्री युगराज जैन का लेख जब मैंने 'युग प्रवाह' में पढ़ा था तो मेरे मन में आया था कि यह जिनवाणी के परिवार स्तंभ में प्रकाशित होने योग्य है। यह संयोग है कि आपके-मेरे मन के तार मिल गये। युगराज जी के लिखने का तेवर निराला है। उन्होंने एक संवेदनशील विषय को साहस और साफगोई से प्रस्तुत किया है।

इस अंक में परम पूज्य आचार्यप्रवर श्री हस्तीमल जी महाराज का प्रवचन 'क्रूरता का यह नग्न ताण्डव क्यों?' मानव के क्रूर कृत्यों का बेबाक चित्रण करता है। इंसान शिक्षा और विज्ञान में चाहे कितना ही आगे बढ़ गया हो, लेकिन उसकी करुणा और संवेदनशीलता घटी है। वह मूक प्राणियों की चीखों और पीड़ाओं को सुनकर भी अनसुना कर देता है। कितने ही लोग अब भी धर्म के नाम पर निरीह/निर्दोष पशु-पक्षियों की बलियाँ और कुर्बानियाँ करते हैं। मुझे मेरी पुरानी कविता की पंक्तियाँ याद आती हैं-

बकरे रुदन करते बकरियाँ मातम धुन गाती हैं।
जब देवी माँ के सामने बेटे की बलि हो जाती है।
धरम के मरम को जानो हे भ्रमित इंसानों!
अल्ला गोश्त नहीं चाहता, न माँ ही खाती है।

धर्म के नाम पर बेजुबां जानवरों की हत्या रोकने के लिए देश में वातावरण बनाया जाना चाहिये। अभी देश में चुनावी समर में सबने अपनी-अपनी बात कही और मांगें रखीं, लेकिन मूक प्राणियों के पक्ष में शायद ही कहीं कोई आवाज उठी हो। इन उपकारी प्राणियों की रक्षा-सुरक्षा के लिए देश की लोकसभा, राज्यसभा तथा राज्यों की विधानसभाओं में सार्थक चर्चा होनी चाहिये। अदालतों को भी बढ़ती हिंसा पर अंकुश लगाने से सम्बन्धित निर्णय प्रदान करने चाहिये। इन सबके साथ ही 'जनता की अदालत' सबसे बड़ी होती है। आज भ्रष्टाचार-मुक्ति की तरह शाकाहार और अहिंसा को जन-आन्दोलन बनाने की जरूरत है। सन्त और साहित्यकार इस 'जन-न्यायालय', लोक तथा लोकतन्त्र को अहिंसा, शाकाहार और सदाचार से अनुप्राणित करने में अपनी विशेष भूमिका निर्वहन करें। अन्य क्षेत्रों के महानुभाव और निकाय भी अपने-अपने स्तर पर अहिंसा और शाकाहार के लिए कुछ न कुछ सकारात्मक सेवा कार्य अवश्य करें। अहिंसा और शाकाहार में आस्था रखने वाले जितने भी व्यक्ति, संगठन और समुदाय हैं, वे सब अहिंसा के नाम पर मिलजुलकर कार्य करें। इससे अहिंसा की शक्ति तो बढ़ेगी ही, समाज में खुशहाली भी बढ़ेगी और धरती का पर्यावरण भी समृद्ध होगा। अहिंसा वर्तमान समय की सबसे बड़ी जरूरत है, और मांग भी। *-डॉ. दिलीप धींग, चेन्नई*

समाचार-विविधा

संवत् 2071 के चातुर्मासों की घोषणा

आगममर्मज्ञ, जिनशासन गौरव, परमपूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. ने अक्षय तृतीया 2 मई 2014 को विदुषी महासती श्री सुशीलाकंवरजी म.सा. का चातुर्मास चौथ का बरवाड़ा तथा व्याख्यात्री महासती श्री सरलेशप्रभाजी म.सा. का देई एवं 01 जून 2014 को व्याख्यात्री महासती श्री तेजकंवर जी म.सा. आदि ठाणा का चातुर्मास सरस्वती नगर, जोधपुर तथा व्याख्यात्री महासती श्री विमलेशप्रभा जी म.सा. आदि ठाणा का सोजत रोड़ घोषित किया है। साधु मर्यादा में रखने योग्य आगारों के साथ विक्रम संवत् 2071 के अब तक घोषित चातुर्मास इस प्रकार हैं-

1. **रामपुरा बाजार, कोटा-** परमश्रद्धेय आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा. आदि ठाणा
2. **शक्तिनगर, जोधपुर-** उपाध्यायप्रवर पं. रत्न श्री मानचन्द्र जी म.सा. आदि ठाणा
3. **लाल भवन, जयपुर-** तत्त्वचिन्तक श्री प्रमोदमुनिजी म.सा. आदि ठाणा
4. **शक्तिनगर, जोधपुर-** साध्वीप्रमुखा महासती श्री मैनासुन्दरी जी म.सा.आदि ठाणा
5. **सरस्वतीनगर, जोधपुर-** व्याख्यात्री महासती श्री तेजकंवर जी म.सा. आदि ठाणा
6. **चौथ का बरवाड़ा (सवाईमाधोपुर)-** विदुषी महासती श्री सुशीलाकंवरजी म.सा. आदि ठाणा
7. **महावीर नगर,जयपुर-** विदुषी महासती श्री सौभाग्यवती जी म.सा. आदि ठाणा
8. **आदर्शनगर, अजमेर-** व्याख्यात्री महासती श्री मनोहरकंवर जी म.सा.आदि ठाणा
9. **मालवीयनगर, जयपुर-** व्याख्यात्री महासती श्री सोहनकंवर जी म.सा. आदि ठाणा की पहले दो माह हेतु स्वीकृति। शेष दो माह बारह गणगौर का रास्ता। महासती श्री विमलावती जी म.सा. आदि ठाणा पूरे चार माह बारह गणगौर स्थानक विराजेंगे।
10. **देई (बूंदी)-** व्याख्यात्री महासती श्री सरलेशप्रभा जी म.सा. आदि ठाणा
11. **शाहीबाग, अहमदाबाद-** व्याख्यात्री महासती श्री इन्दुबाला जी म.सा.आदि ठाणा
12. **शूले-बैंगलोर (कर्नाटक)-** व्याख्यात्री महासती श्री ज्ञानलताजी म.सा. आदि ठाणा
13. **हैदराबाद-** व्याख्यात्री महासती श्री चारित्रलता जी म.सा. आदि ठाणा
14. **सतारा (महाराष्ट्र)-** व्याख्यात्री महासती श्री निःशल्यवती जी म.सा. आदि ठाणा

15. **आनन्दपुरी, कानपुर**– व्याख्यात्री महासती श्री मुक्तिप्रभा जी म.सा. आदि ठाणा

16. **सोजतरोड**– सेवाभावी महासती श्री विमलेशप्रभाजी म.सा. आदि ठाणा

17. **शास्त्रीनगर, भीलवाड़ा**– व्याख्यात्री महासती श्री रुचिता जी म.सा. आदि ठाणा

आचार्यप्रवर एवं उपाध्यायप्रवर के चातुर्मासों के सम्पर्क सूत्र

(1) कोटा (राज.)– परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर पूज्य श्री 1008 श्री हीराचन्द्र जी म.सा. आदि ठाणा। **चातुर्मास स्थल**– श्री वर्द्धमान स्थानकवासी जैन श्रीसंघ, ग्राण्ट होटल वाली गली, कोतवाली के सामने, रामपुरा बाजार, कोटा (राज.), फोनः 0744-2382711

सम्पर्क सूत्र– (1) श्री राजेन्द्र सिंह जी मेहता-अध्यक्ष, 0744-2380271 (2) श्री बुद्धिप्रकाश जी जैन-मंत्री, फोन-0744-2382832, मोबाइल-9414177139, 8302599661

(2) शक्तिनगर, जोधपुर (राज.)– परम श्रद्धेय उपाध्यायप्रवर पं. रत्न श्री मानचन्द्र जी म.सा. आदि ठाणा। **चातुर्मास स्थल**– सामायिक-स्वाध्याय भवन, शक्तिनगर छट्ठी गली, पावटा सी रोड़, जोधपुर-342006 (राज.), फोन-0291-2641445, 2636763

सम्पर्क सूत्र– (1) श्री धनपतचन्दजी सेठिया-अध्यक्ष, फोन-0291-2624558, मोबाइल- 9829022472, (2) श्री सुभाषचन्द जी हुण्डीवाल-मंत्री, मोबाइल-9460551096 (3) श्री महावीरचन्द जी बोथरा-संयोजक, फोन-0291-2556767, 98285-82391

चातुर्मासों के सम्पर्क सूत्रों का विस्तृत विवरण जिनवाणी के आगामी अंक में दिया जाएगा।

विचरण विहार एवं विहार दिशाएँ

(01 जून 2014 के अनुसार)

चातुर्मासों की घोषणा हो जाने से सभी संतप्रवर एवं महासती मण्डल का विहार अपने-अपने चातुर्मास स्थलों की ओर हो रहा है। पूज्य आचार्यप्रवर का 01 जून को बूंदी से कोटा की ओर विहार हुआ है। उपाध्यायप्रवर एवं शासनप्रभाविका जी जोधपुर में विचर रहे हैं। तत्त्वचिंतक श्रद्धेय श्री प्रमोदमुनिजी म.सा. जयपुर विराज रहे है। व्याख्यात्री महासती श्री तेजकंवरजी म.सा. आदि ठाणा 10 गोटन पधार चुके हैं। विदुषी महासती श्री सुशीलाकंवरजी म.सा. दूणी पधारे हैं। विदुषी महासती श्री सौभाग्यवती जी म.सा. तथा व्याख्यात्री महासती श्री सोहनकंवरजी म.सा. आदि ठाणा जयपुर विराज रहे हैं। व्याख्यात्री महासती श्री मनोहरकंवर जी म.सा. का विहार मेड़ता की ओर चल रहा है। व्याख्यात्री महासती श्री इन्दुबालाजी म.सा. पालनपुर पधारे हैं। व्याख्यात्री महासती श्री ज्ञानलता जी

म.सा. वरिधि पधारे हैं, बैंगलोर की ओर विहार चल रहा है। व्याख्यात्री महासती श्री चारित्रलता जी म.सा. का विहार हैदराबाद की ओर चल रहा है। व्याख्यात्री महासती श्री निःशल्यवती जी म.सा. आदि ठाणा पूना के उपनगरों में विचरण कर रहे हैं। व्याख्यात्री महासती श्री मुक्तिप्रभा जी म.सा. कानपुर विराज रहे है। सेवाभावी महासती श्री विमलेशप्रभाजी म.सा. आदि ठाणा जोधपुर पधारे हैं। व्याख्यात्री महासती श्री रुचिता जी म.सा. आदि ठाणा गुलाबपुरा पधारे हैं।

देई में अक्षय तृतीया पर्व के पश्चात् आचार्यप्रवर का बूंदी पदार्पण

जिनशासन गौरव, आगम-महोदधि, प्रशान्त-प्रतिभा-विभूति, जन-जन की आस्था के केन्द्र, प्रवचनप्रभाकर, व्यसनमुक्ति, सामायिक-स्वाध्याय तथा रात्रिभोजन त्याग के प्रभावी प्रेरक परमाराध्य **परमश्रद्धेय आचार्यप्रवर पूज्य श्री हीराचन्द्र जी म.सा., महान् अध्यवसायी श्रद्धेय श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा. आदि ठाणा** 7 पोरवाल क्षेत्र में विचरण करते हुए 23 अप्रेल 2014 को देई पधारे। राजस्थान के हाड़ौती क्षेत्र में बूंदी जिले के अन्तर्गत नैनवां तहसील में एक कस्बा है देई। यहाँ पर लगभग 100 घर अग्रवाल समाज के हैं, जिनमें 25 घर स्थानकवासी हैं। पूज्य गुरुदेव आचार्य श्री हस्ती का जब यहाँ पदार्पण हुआ था तब वर्षों पूर्व यहाँ जागृति का संचार हुआ था। लोगों के समर्पण एवं आस्था को देखकर गुरुदेव ने फरमाया था- "भाई! यह देई तो सोने की पेई (पेटी) है।" अभी पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. के यहाँ पदार्पण से जन-जन हर्षित रहे। सभी लोग श्रद्धाभक्ति की भावना से ओतप्रोत थे। यहाँ पर पूज्य गुरुदेव का 20 दिन विराजना हुआ। प्रार्थना, प्रवचन, शास्त्र-वाचनी, ज्ञानचर्चा, उभयकाल प्रतिक्रमण, संवर आराधना आदि का क्रम अनवरत चलता रहा। बहिनों ने विदुषी महासती श्री सुशीलाकंवर जी म.सा. आदि ठाणा, व्याख्यात्री महासती श्री सरलेशप्रभा जी आदि ठाणा तथा व्याख्यात्री महासती श्री रुचिता जी म.सा. की सन्निधि में संवर आराधना एवं उभयकाल प्रतिक्रमण का सुलाभ लिया। आचार्यप्रवर के इस पावन प्रवास में देई संघ वालों ने धर्माराधना के साथ तप-त्याग एवं व्रत नियम भी अंगीकार किये। इस प्रवास काल में 6 आजीवन शीलव्रती बने। दर्शनार्थ पधारने वालों का क्रम प्रायः प्रतिदिन बना रहा। संघ की वात्सल्य भावना प्रमोदजन्य रही।

24 अप्रेल को दूनी संघ ने चातुर्मासार्थ विनति-पत्र गुरु चरणों में प्रस्तुत किया। 28 अप्रेल को 6 विरक्ता बहनें पूज्य आचार्यप्रवर की सन्निधि में उपस्थित हुईं तथा 9 मई तक गुरुचरणों में संयमी-जीवन की निर्मल साधना का हार्द समझा। 29 अप्रेल को प्रातः 11 बजे महान् अध्यवसायी श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा. के मुखारविन्द से देई की श्राविकारत्न श्रीमती

कमला देवी जी धर्मसहायिका श्री उच्छबलाल जी जैन ने चौविहार संथारा स्वीकार किया, जो उसी दिन सीझ गया। देई के इतिहास में पहली बार किसी का संथारापूर्वक समाधिमरण हुआ है।

2 मई को अक्षयतृतीया के पावन प्रसंग पर 34 तपस्वी भाई-बहिनों ने पारणक का लाभ लिया तथा उनमें से कइयों ने वर्षीतप की शृंखला को आगे के लिए बढ़ाया और कुछ नये वर्षीतप भी स्वीकार किए गए। भीषण गर्मी में भी 2000 की विशाल उपस्थिति उल्लेखनीय रही। देई संघ की तत्परता हर मायने में प्रशंसनीय रही। इसी दिन चेन्नई निवासी बहिन श्रीमती सरोज जी एवं आशा जी सुराणा तथा बैंगलोर निवासी श्रीमती मंजू जी मेहता का आज्ञा-पत्र परिवारजनों द्वारा आचार्यप्रवर को प्रस्तुत किया गया। पूज्यप्रवर ने विनतियों को ध्यान में रखकर विदुषी महासती श्री सुशीलाकंवर जी म.सा. आदि ठाणा का चातुर्मास चौथ का बरवाड़ा, व्याख्यात्री महासती श्री सोहनकंवरजी म.सा. आदि ठाणा का चातुर्मास मालवीय नगर क्षेत्र खुला रखते हुए बारह गणगौर का रास्ता, जयपुर तथा व्याख्यात्री महासती श्री सरलेशप्रभाजी म.सा. का चातुर्मास देई संघ को प्रदान किया। देई संघ वालों की पुण्यवानी प्रबल रही कि उन्हें अक्षयतृतीया पर्व के साथ चातुर्मास का भी लाभ मिल गया।

वैशाख शुक्ला त्रयोदशी, 12 मई को उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा. का 52 वां दीक्षा-दिवस एकाशन तप की आराधना के साथ मनाया गया।

13 मई को देई से पूज्यप्रवर का विहार बूंदी की ओर हुआ। आपश्री भजनेरी, बांसी, सांवतगढ़ होते हुए 17 मई को रानीपुरा पधारे। यहाँ सरावगी भाइयों ने पूज्य आचार्यप्रवर से अधिक काल तक विराजने हेतु पुरजोर विनति की। 18 मई को आप रेणी फार्म पधारे, जहाँ जयपुर के मालवीय नगर से विनति लेकर पधारे संघ को आचार्यप्रवर ने स्वास्थ्य समाधि की दृष्टि से व्याख्यात्री महासती श्री सोहनकंवर जी म.सा. आदि ठाणा 4 के चातुर्मास में दो माह की अवधि हेतु मालवीय नगर संघ को स्वीकृति प्रदान की। यहाँ से ज्येष्ठ कृष्णा पंचमी 19 मई को डबलाना पधारे, जहाँ आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. का 24 वां आचार्य पदारोहण दिवस एकाशन तप की आराधना के साथ मनाया गया। यहाँ से 20 मई को नया गाँव होते हुए धनावा पधारे, जहाँ जयपुर में 10 से 19 मई 2014 तक आयोजित दस दिवसीय ज्ञानार्थी चेतना शिविर के लाभार्थी विरक्तों का आगमन हुआ। पूज्य श्री ने अपने मंगल उद्बोधन में नियमों को दृढ़ता से पालन करने पर बल दिया। इसी दिन बैंगलोर में 3 मुमुक्षु आत्माओं की भागवती दीक्षा 3 अक्टूबर 2014 को एवं हुबली में 2 मुमुक्षु बहनों की भागवती दीक्षा 25 जनवरी, 2015 को सम्पन्न होने हेतु स्वीकृति फरमाई।

यहाँ से दलेलपुरा होते हुए 22 मई को बूंदी नगर में जयघोषों के साथ पदार्पण हुआ।

यहाँ वीतराग वाणी का वर्षण हो रहा है। दर्शनार्थ आने वाले श्रद्धालुओं का क्रम बना हुआ है। तत्त्वज्ञ श्रावक श्री प्रेमचन्द जी कोठारी, स्वाध्याय रसिक श्री मिलापचन्द जी डागा आदि परिवारजन निरन्तर धर्म लाभ में सन्नद्ध है। 23 मई को यहाँ ज्ञानार्थी रवि जी के परिवारजनों ने गुरुदेव की सेवा में आज्ञा-पत्र प्रदान किया। **28 मई को बूंदी के स्थानकवासी समाज ने सामूहिक रात्रिभोजन त्याग का नियम अंगीकार किया।**

देई में तप और दान के विशिष्ट पर्व अक्षय तृतीया पर व्रत-प्रत्याख्यानों के प्रति उत्साह

जिनशासन गौरव, आगमज्ञ, प्रवचन प्रभाकर, शीलव्रत के प्रेरक, रत्नसंघ के अष्टम पट्टधर परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर पूज्य श्री 1008 श्री हीराचन्द्र जी म.सा., महान् अध्यवसायी श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा. आदि ठाणा 7 एवं परम विदुषी महासती श्री सुशीलाकंवरजी म.सा., व्याख्यात्री महासती श्री सरलेशप्रभा जी म.सा., व्याख्यात्री महासती श्री रुचिता जी म.सा. आदि ठाणा के पावन सान्निध्य में पोरवाल क्षेत्र के देई (जिला-बून्दी) में तप एवं दान के विशिष्ट पर्व अक्षय तृतीया 2 मई 2014 को व्रत-प्रत्याख्यानों की प्रेरणा की गई तथा तप एवं दान का महत्त्व प्रतिपादित किया गया। देई में 34 तपस्वियों ने पारणक का लाभ लिया।

देई यद्यपि बड़ा क्षेत्र नहीं है, पर यहाँ के अग्रवाल भाइयों की भावना प्रशंसनीय है। 2 मई को गोयल मैरिज गार्डन परिसर में आयोजित तप पूर्णाहूति समारोह में लगभग 2000 श्रावक-श्राविकाओं की उपस्थिति से तपस्वी भाई-बहनों की अनुमोदना हुई। प्रवचन सभा में आचार्यप्रवर, संतप्रवरों एवं महासती मण्डल के प्रवचनों का सभी आगन्तुकों को लाभ प्राप्त हुआ। सर्वप्रथम देई संघ के मंत्री श्री ताराचन्द जी जैन ने समागत सभी श्रद्धालुओं का शब्दों से स्वागत किया।

प्रवचन सभा में **श्रद्धेय श्री योगेशमुनिजी म.सा.** ने अपने प्रवचन में तप और दान का महत्त्व प्रतिपादित करते हुए फरमाया कि तप के साथ-साथ दान का भी महत्त्व है। जहाँ तप से पुराने कर्मो का क्षय होता है वहीं दान से धर्म पुष्ट होता है। तप से स्वाद नहीं, मन में विवाद नहीं, जीवन में प्रमाद नहीं, इस सूत्र को हम अंगीकार करेंगे तो अवश्य ही हमारे जीवन का कल्याण होगा।

व्याख्यात्री महासती श्री रुचिताजी म.सा. ने एक गीतिका प्रस्तुत करते हुए कहा कि- मरुदेवी माता के लाल ने वर्षीतप की आराधना करके इस धरा पर तप को प्रतिष्ठापित किया एवं राजा श्रेयांस ने दान की महत्ता को सिद्ध किया।

व्याख्यात्री महासती श्री रक्षिताजी म.सा. ने "मरुदेवी रो जायो, धरा ने रोशन कर

गयो'' नामक गीतिका प्रस्तुत करते हुए तप और दान का महत्व प्रतिपादित किया।

महान् अध्यवसायी श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा. ने अक्षय तृतीया एवं भगवान आदिनाथ के पारणे को लेकर तप और दान के महत्त्व को प्रतिपादित करते हुए बताया कि तप द्वारा जीव स्वयं शुद्ध होता है एवं दान के द्वारा स्व-पर की शुद्धि होती है। भगवान ने फरमाया है **''दाणाणं सेट्ठं अभयप्पाणं''**, दानों में अभयदान श्रेष्ठ है। अक्षय तृतीया का पर्व हम-सबको तप करने की प्रेरणा प्रदान कर रहा है। गुरुदेव की असीम कृपा से आप और हम सभी तप के क्षेत्र में आगे बढ़ें, वहीं कुछ न कुछ देना सीखें। जो देता है वही प्राप्त करता है। आज हमारे समक्ष चार-चार पावन प्रसंग उपस्थित हैं- (1) आदिनाथ भगवान के तप का सम्पूर्ति दिवस (2) राजा श्रेयांस द्वारा दिए गए दान के कारण दान दिवस (3) आचार्य हस्ती का आचार्य पदारोहण दिवस (4) आचार्य पूज्य श्री कजोड़मलजी म.सा. का पुण्य दिवस। ये चारों प्रसंग हमको दान एवं तप की प्रेरणा कर रहे हैं। ज्ञानियों ने भी कहा है कि दान देने वाला व्यक्ति परीत संसारी बनकर तीर्थंकर गोत्र का वरण कर मुक्ति मार्ग से अपने-आपको जोड़ लेता है।

जिनशासन गौरव परम **श्रद्धेय आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा.** ने अपने सारगर्भित प्रवचन में फरमाया कि इन्द्रियों पर विजय हासिल करने पर ही तप की आराधना होती है। तप हमारे सम्पूर्ण कर्मों को क्षय करने वाला है। एक बहन 40 वर्ष से वर्षीतप कर रही है, मैंने उनके पति से पूछा- बहन इतने वर्षों से तपस्या कर रही है, आपका इसमें क्या सहयोग है ? तो भाई ने कहा- महाराज ! मैं तपस्या तो नहीं कर सकता, लेकिन इनकी तपस्या में सहयोग के रूप में पिछले 40 वर्ष से शीलव्रत की आराधना कर रहा हूँ। ऐसे भी त्यागी-तपस्वी संघ में मौजूद है। इन्हीं लोगों से जिनशासन की प्रभावना हो रही है। दान देने से कभी कमी नहीं आती है। जैसे सूर्य की किरणें कभी कम नहीं पड़तीं, वायुमण्डल से प्राण वायु खत्म नहीं होती और समुद्र का पानी कभी खत्म नहीं होता वैसे ही दान देने से अर्थ की कमी नहीं होती। आज का यह पावन प्रसंग हम सबको तप एवं दान की प्रेरणा कर रहा है, यत्किंचित् भी दान एवं तप आप अपनायेंगे तो कर्मों की निर्जरा करने के साथ अपने जीवन को प्रशस्त बनायेंगे।

ज्ञानियों ने जहाँ ज्ञान-दर्शन-चारित्र और तप को मोक्ष-मार्ग का साधन बताया वहीं दान, शील, तप और भाव को भी साधन बताया है, इनमें से एक-एक की आराधना करने पर जीव संसार सागर से पार हो जाता है। धर्म क्रिया में भावों की प्रधानता होती है, क्योंकि कभी-कभी जीव देता हुआ भी कर्मबन्ध कर लेता है और कभी दाखों का धोवन देते हुए तीर्थंकर गोत्र का बन्ध कर लेता है। भावों से पालन किया गया एक दिन का ब्रह्मचर्य भी

हमारी जीवन की दशा और दिशा को बदल सकता है। अत: तपस्या की आराधना हो अथवा दान हो, दोनों में साधक का भावों से जुड़ना महत्त्वपूर्ण होता है। यदि साधना के प्रति अच्छे भाव नहीं हैं तो वह साधना भी फलित नहीं होती है।

आचार्यप्रवर के प्रवचन पश्चात् कार्यक्रम संचालक **श्री प्रकाशजी सालेचा** ने तप साधकों के नामों का उच्चारण किया तथा आवश्यक सूचनाएँ दीं। युवा साथी **श्री नरेन्द्रकुमारजी जैन** ने अपने संक्षिप्त वक्तव्य में गुरुदेव के प्रति आभार व्यक्त करते हुए कहा कि गुरुदेव ने महती कृपा करके हमारे छोटे से गाँव को अक्षय तृतीया का पावन प्रसंग प्रदान किया। इसी तरह भविष्य में भी आप महापुरुषों की कृपा बनी रहे। देई संघ की इच्छा है कि गुरुदेव देई संघ को इस बार महासती मण्डल के चातुर्मास की स्वीकृति प्रदान करें। अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक **संघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष माननीय श्री ज्ञानेन्द्रजी बाफना** ने तपस्वी भाई-बहिनों का बहुमान करते हुए आगन्तुक गुरुभ्राताओं का स्वागत किया। उन्होंने कहा कि देई संघ की संघनिष्ठा एवं गुरुभक्ति पर हमें गौरव का अनुभव होता है। उन्होंने अक्षय तृतीया महोत्सव की सुन्दर व्यवस्था के लिए देई श्रीसंघ के सभी पदाधिकारियों, युवा साथियों, श्राविका मण्डल की सदस्याओं का एवं सभी कार्यकर्त्ताओं का हृदय के अन्तःस्थल से आभार व्यक्त किया।

आचार्यप्रवर के मुखारविन्द से वर्षीतप साधकों में से कइयों ने एक वर्ष एकान्तर तप बढ़ाया तो कइयों ने एकान्तर तप की साधना हेतु नया नियम ग्रहण किया।

अक्षय तृतीया के पावन अवसर पर उपवास, बेले, तेले आदि तपस्याओं के प्रत्याख्यान हुए, वहीं नित्य की भांति आयंबिल एकासन के नियम भी हुए। आचार्यप्रवर के मंगलपाठ के पश्चात् गोयल मैरिज गार्डन परिसर में तप पूर्णाहुति समारोह का आयोजन हुआ। तप साधकों के पारिवारिक-परिजनों एवं इष्ट मित्रों ने तपस्वियों को इक्षु रसपान कराने के साथ तप की अनुमोदना की। स्थानीय संघ पदाधिकारियों ने स्वागत-सत्कार और बहुमान में अपूर्व उत्साह दिखाया। अ. भा. श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के अध्यक्ष श्री ज्ञानेन्द्रजी बाफना-जोधपुर, संघ के संयुक्त महामंत्री श्री मानेन्द्रजी ओस्तवाल-जोधपुर एवं मंत्री श्री बुद्धिप्रकाशजी जैन-कोटा ने सभी तपस्वी भाई-बहिनों की सुख-साता पृच्छा कर इक्षु रस का पारणा कराने के साथ तपस्वियों का बहुमान किया। तपस्वी भाई-बहिनों के नाम इस प्रकार हैं:- (1) श्रीमती रेखाजी उम्मेदराजजी लोढ़ा-जोधपुर (2) श्रीमती पुष्पाजी प्रकाशचन्दजी जैन-भरतपुर (3) श्रीमती उषाजी सुरेशचन्दजी जैन-भरतपुर (4) श्रीमती चमेलीदेवीजी नरेन्द्रमोहनजी जैन-बजरिया (सवाईमाधोपुर) (5) चंचलदेवीजी मांगीलालजी कुम्भट-जोधपुर (6) श्रीमती मंजूजी धनरूपचन्दजी मेहता-बैंगलोर (7)

श्रीमती सुशीलादेवीजी पारसमलजी चोरड़िया-उज्जैन (8) श्रीमती हर्षादेवीजी महावीरप्रसादजी जैन-समीधि (9) श्रीमती चंचलदेवीजी भेरूलालजी जैन-चौथ का बरवाड़ा (10) श्रीमती संतोषदेवीजी पदमचन्दजी जैन-बजरिया (सवाईमाधोपुर) (11) श्रीमती मंजूजी मोहनलालजी सर्राफ-सवाईमाधोपुर (12) श्रीमती कैलाशदेवीजी शांतिलालजी जैन-सवाईमाधोपुर (13) श्रीमती मनभरदेवीजी सौभागमलजी जैन-सवाईमाधोपुर (14) श्रीमती कांतिदेवीजी प्रेमचन्दजी जैन-सवाईमाधोपुर (15) श्रीमती चमेलीदेवीजी हरखचन्दजी जैन-सवाईमाधोपुर (16) श्रीमती पुष्पादेवीजी रामप्रसादजी जैन-कोटा (17) श्रीमती इन्द्रादेवीजी महावीरजी जैन-सवाईमाधोपुर (18) श्रीमती तारादेवीजी विजयराजजी सुराणा-कोलकाता (19) श्रीमती सुशीलाबाईजी मूलचन्दजी चौपड़ा-मेड़तासिटी (20) श्री सागरमलजी जैन-मेड़तासिटी (21) श्रीमती मैनाजी नेमीचन्दजी कर्नावट-वेल्लूर (22) श्रीमती कमलादेवीजी चौथमलजी जैन-अलीगढ़-टोंक (23) श्रीमती लीलादेवीजी ऋषभजी जैन-सुमेरगंजमण्डी (24) श्रीमती प्रेमदेवीजी माणकचन्दजी जैन-कोटा छावनी (25) श्रीमती कमलाजी महावीरप्रसादजी जैन-कोटा (26) श्रीमती पदमाजी डिग्गीजी जैन-सवाईमाधोपुर (27) श्रीमती मोहिनीदेवीजी विनयचन्दजी जैन-आलनपुर (28) श्रीमती विजयलक्ष्मीजी जैन-कोटा (29) श्री जितेन्द्रजी जैन-जयपुर (30) श्रीमती हेमलताजी महावीरप्रसादजी जैन-बाबई (31) श्रीमती कैलाशदेवीजी बाबूलालजी जैन-कोटा (32) श्रीमती हरकीबाईजी विमलचन्दजी जैन-जयपुर (33) श्रीमती मंजूजी योगेशजी पालावत, अलवर (34) श्रीमती राजेशजी त्रिलोकचन्दजी जैन-महावीरनगर (सवाईमाधोपुर)

अक्षय तृतीया के इस अवसर पर सरस्वतीनगर एवं महामंदिर जोधपुर, जयपुर, चेन्नई, बैंगलोर, कोटा, सवाईमाधोपुर शहर, आलनपुर, हाउसिंग बोर्ड, मण्डी रोड, बजरिया, आदर्शनगर, कुश्तला, चौरू, चौथ का बरवाड़ा, अलीगढ़-रामपुरा, समीधी, उणियारा, जरखोदा, बाबई, इन्द्रगढ़, सुमेरगंज मण्डी, उज्जैन, जलगांव, हिण्डौन, भरतपुर, गंगापुर, नैनवां, बंसोली, कुण्डेरा, श्यामपुरा, मेड़तासिटी, कोलकात्ता के संघ सदस्यों ने उपस्थित होकर तप एवं दान के अनुमोदन का लाभ लिया।

अक्षय तृतीया पर पधारने वाले सभी महानुभावों की एवं स्थानीय भाई-बहिनों की भोजन व्यवस्था श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, देई द्वारा की गई। अक्षय तृतीया के पावन अवसर पर स्थानीय संघ, युवक परिषद्, श्राविका मण्डल के सभी कार्यकर्त्ताओं ने उत्साह के साथ तपस्वी भाई-बहिनों एवं आगन्तुक महानुभावों के आवास-निवास, भोजन-पारणक आदि की सुन्दर व्यवस्था में दिन-रात श्रम कर पारणक महोत्सव के कार्यक्रम को सफल बनाया। देई श्रीसंघ की सभी सेवाएँ अनुकरणीय एवं प्रशंसनीय रहीं।

पूज्य उपाध्यायप्रवर नेहरू पार्क को लाभान्वित कर चौपासनी हाउसिंग बोर्ड पधारे

शान्त-दान्त-गम्भीर पूज्य उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा., मधुरव्याख्यानी श्री गौतममुनि जी म.सा. आदि ठाणा 5 का जोधपुर के नेहरू पार्क स्थित सामायिक-स्वाध्याय भवन में 27 अप्रेल को पदार्पण हुआ। श्रावक-श्राविकाओं का आवागमन निरन्तर बना रहा। नियमित रूप से तथा अष्टमी, चतुर्दशी आदि तिथियों पर दया-संवर, उपवास, पौषध आदि की विशेष आराधना हुई। उपाध्यायप्रवर का यहाँ 18 मई के प्रातःकाल तक लाभ प्राप्त हुआ। प्रतिदिन प्रातः प्रवचन में, दोपहर में मांगलिक श्रवण तथा सायंकाल प्रतिक्रमण में श्रद्धालुओं ने पूरा उत्साह दिखाया। बहिनों ने रात्रि-संवर एवं धर्माराधना का लाभ निकट में ही स्थित चोपड़ा भवन में विराजित महासती मण्डल के सान्निध्य में लिया। संतों के प्रवचन अत्यन्त प्रेरणाप्रद रहे।

अक्षय तृतीया 2 मई 2014 को जो तपस्वी भाई-बहिन पूज्य आचार्यप्रवर के सान्निध्य में नहीं पहुँच सके उन्होंने यहाँ उपाध्यायप्रवर के सान्निध्य में वर्षीतप की पूर्णाहुति की तथा नये नियम अंगीकार किए। वैशाख शुक्ला अष्टमी 7 मई को अध्यात्म योगी युगमनीषी आचार्यप्रवर श्री हस्तीमल जी म.सा. की 23 वीं पुण्यतिथि पर उपवास, एकाशन, दया-संवर एवं तप-त्याग के साथ धर्माराधना हुई। उपाध्यायप्रवर, मधुरव्याख्यानी श्री गौतममुनि जी म.सा. सहित सन्तप्रवरों एवं महासतियों ने पूज्य आचार्यप्रवर हस्ती के जीवन की विशेषताओं तथा प्रेरणाप्रद प्रसंगों पर प्रकाश डाला। वैशाख शुक्ला त्रयोदशी 12 मई को उपाध्यायप्रवर के 52 वें दीक्षा-दिवस पर विशेष धर्माराधना एवं तप-त्याग हुए। संतों एवं सतियों ने उपाध्यायप्रवर के संयम-जीवन पर प्रकाश डाला।

13 मई 2014 को भारत के सर्वोच्च्य न्यायालय के नव नियुक्त मुख्य न्यायाधिपति माननीय श्री राजेन्द्रमल जी लोढ़ा ने सपत्नीक उपाध्यायप्रवर के दर्शनों का लाभ लिया। यहाँ पर किशनगढ़ संघ के अध्यक्ष श्री राजेन्द्र जी डांगी अपने परिवार सहित बस लेकर उपाध्यायप्रवर एवं संत-सतियों के दर्शनार्थ पधारे।

18 मई को नेहरूपार्क के सामायिक-स्वाध्याय भवन से विहार कर उपाध्याय प्रवर शास्त्रीनगर पधारे। मधुर व्याख्यानी श्री गौतममुनि जी म.सा. ने प्रवचनोपरान्त विहार किया। शास्त्रीनगर से दूसरे दिन आपश्री संत मण्डल के साथ देवनगर स्थित महावीर वाटिका पधारे। यहाँ ज्येष्ठ कृष्णा पंचमी, 19 मई को आचार्य प्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. के 24 वें आचार्य पदारोहण दिवस पर पूज्य आचार्यप्रवर के जीवन की विशेषताओं को

संतों ने व्याख्यायित किया।

यहाँ से विहार कर उपाध्यायप्रवर 20 मई को चौपासनी हाउसिंग बोर्ड के 16 सेक्टर में स्थित स्थानक पधारे। यहाँ पर क्षेत्र के अनेक श्रद्धालुओं ने भाव भक्तिपूर्वक धर्माराधन का लाभ लिया। 30 मई को यहाँ से विहार कर उपाध्यायश्री कमला नेहरू नगर स्थित नेत्रहीन विकास संस्थान पधारे। यहाँ पर अन्ध छात्रों को सन्तों ने मार्मिक उद्बोधन दिया। यहाँ से 31 मई को समता भवन पधारे हैं। उपाध्यायप्रवर के जोधपुर आगमन से श्रावक-श्राविकाओं में विशेष उत्साह है।

आचार्य श्री हस्ती की 23 वीं पुण्यतिथि पर विशेष व्याख्यान

कोलकाता- अध्यात्मयोगी, युगमनीषी आचार्य श्री हस्तीमल जी म.सा. की 23 वीं पुण्यतिथि महावीर सदन कोलकाता में मोक्षद्वार पत्रिका के सम्पादक एवं स्वाध्यायी श्री गौतमचन्द जी ओस्तवाल, बैंगलोर के सान्निध्य में मनाई गई। श्री ओस्तवाल जी ने आचार्य श्री हस्ती के जीवन, दर्शन एवं उनके प्रेरक प्रसंगों पर प्रकाश डाला। सभा की अध्यक्षता साहित्य मनीषी श्रीमती तारा जी दूगड़ ने की। उन्होंने कहा कि हमें शाश्वत शान्ति प्राप्त करने के लिए जितना पुरुषार्थ करना चाहिए यदि करें तो जीवन सफल हो सकता है। सभा में कोलकाता के गणमान्य समाजसेवी श्री सरदारमल जी कांकरिया, श्री जयप्रकाश जी मेहता, श्री रिखबदास जी भंसाली एवं श्राविका मण्डल की राष्ट्रीय निदेशक श्रीमती मधु जी सुराणा-चेन्नई भी उपस्थित थे। बालक-बालिकाओं द्वारा इस अवसर पर जैनशाला तथा वर्तमान युग में गुरु भक्ति के संदेश की प्रासंगिकता पर परिसंवाद प्रस्तुत किया गया। महिला मण्डल की मंत्री श्रीमती रश्मि जी सिंघवी ने मंडल की रिपोर्ट प्रस्तुत की तथा मंडल की अध्यक्षा श्रीमती विमला भण्डारी ने मंडल की सामाजिक सेवाओं का विवरण प्रस्तुत किया। श्रीमती मंजू प्रेम जी भण्डारी ने आचार्य हस्तीमल जी म.सा. के व्यक्तित्व पर प्रकाश डाला। अंत में संघ उपाध्यक्ष श्रीमान् अजितराज जी मेहता ने धन्यवाद ज्ञापित किया। कार्यक्रम का संचालन श्रीमती निशि जी बाफना ने किया।

- गुमानसिंह पीपाड़ा-महामंत्री

पाली-मारवाड़- सामायिक-स्वाध्याय भवन, सुराणा मार्केट में आचार्य भगवन्त पूज्य श्री हस्तीमल जी म.सा. की 23 वीं पुण्यतिथि तप-त्याग, उपवास, पौषध, दया-संवर, एकाशन, आयंबिल की साधना के साथ मनाई गई। प्रवचन सभा में समरथ गच्छाधिपति श्री उत्तमचन्द जी म.सा. की आज्ञानुवर्तिनी महासती श्री मंजूश्रीजी ने पूज्य आचार्यश्री हस्ती की जीवन झाँकी प्रस्तुत करते हुए उनका गुणानुवाद किया। उन्होंने फरमाया कि आचार्य

हस्ती के विचारों में शालीनता तथा आचरण में प्रमाणिकता थी। वे अत्यन्त उदार व्यक्तित्व के धनी थे। उनमें साम्प्रदायिकता नहीं थी। महासती श्री कीर्तिप्रभा जी ने फरमाया कि आचार्य हस्ती का सान्निध्य टूटे मन को जोड़ने वाला तथा बिखरे जीवन को एकीकृत करने वाला था। सहमंत्री श्री चैनराज जी मेहता ने गुरुदेव के जीवन की विविध विशेषताओं पर प्रकाश डाला। सभा का संचालन श्री मांगीलाल जी चोपड़ा ने किया। संघ के अध्यक्ष श्री रूपकुमार जी चोपड़ा ने बताया कि इस अवसर पर वृद्धाश्रम एवं कोढी आश्रम में बिस्किट का वितरण किया गया तथा निर्धन व्यक्तियों को आवश्यकतानुसार वस्त्र वितरण किए गए। अधिकांश भाई-बहनों ने रात्रिभोजन त्याग, जमीकंद और लीलोती त्याग एवं ब्रह्मचर्य का नियम स्वीकार किया।

मुम्बई- आचार्य भगवन्त श्री हस्तीमल जी म.सा. की 23 वीं पुण्यतिथि 04 मई, 2014 को अहिंसा भवन, खार में तप-त्याग एवं सामूहिक सामायिक आराधना के साथ मनायी गयी। वहाँ विराजित पूज्य महासती श्री जयमाला जी म.सा. की सुशिष्या महासती श्री चन्दनबाला जी, महासती डॉ. चन्द्रप्रभाजी एवं विनीतप्रभा जी म.सा. ने गुरु भगवन्त के गुणों को स्मरण करते हुए एक नियम को जीवन में धारण करने की बात कही। श्री कपूरचन्द जी जैन ने भजन प्रस्तुत किया। वहीं मुम्बई श्रावक संघ के अध्यक्ष श्री नरेन्द्र जी हीरावत ने गुरुदेव के अनेक गुणों पर प्रकाश डाला। श्रीमती हेमलता जी सांखला, श्रीमती प्रसन्नजी गांग, श्री आनन्दराजजी तलेसरा, श्री शेखर जी भण्डारी ने आचार्य भगवन्त के जीवन के सम्बन्ध में भावाभिव्यक्ति प्रस्तुत की। कार्यक्रम का संचालन श्री गौतम जी मेहता ने किया। श्री दीपकजी हीरावत ने भोजन-व्यवस्था का सुन्दर संचालन किया। *-नरेन्द्र हीरावत*

बालोतरा में ज्ञानाराधन का उत्साह

बालोतरा- आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. की आज्ञानुवर्तिनी व्याख्यात्री महासती श्री इन्दुबाला जी म.सा. आदि ठाणा 4 तथा महासती श्री सुमतिकंवर जी म.सा. आदि ठाणा 5 ने 28 मार्च 2014 को जोधपुर से बालोतरा की ओर आगे-पीछे विहार किया था। दोनों सिंघाड़े समदड़ी होते हुए 9 अप्रेल को बालोतरा पधारे। प्रवेश के समय लगभग 200 भाई-बहनों की संख्या जयनाद करती हुई एवं भजन गाती हुई साथ चल रही थी। महासती वृन्द का रूकजी की पोल पाठशाला में प्रवेश हुआ। बालोतरा के विधायक श्री अमराराम जी चौधरी भी प्रवेश के समय उपस्थित थे। प्रार्थना, प्रवचन एवं ज्ञानचर्चा के विशेष कार्यक्रमों में अच्छी भागीदारी रही। 13 अप्रेल को महावीर जयन्ती के उपलक्ष्य में नया स्थानक में व्याख्यान रखा गया। जहाँ महासती श्री मुदितप्रभा जी म.सा. एवं महासती श्री वर्षा जी म.सा. ने भगवान महावीर के जीवन एवं आदर्शों पर चलने की प्रेरणा की। दोपहर

में भगवान महावीर के जीवन पर निबन्ध प्रतियोगिता रखी गई, जिसमें प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय पुरस्कार श्री हनुमानचन्द जी, पृथ्वीराजजी, जवरीलाल जी जागीरदार परिवार की ओर से प्रदान किये गये। 16 से 20 अप्रेल तक दोपहर में 2 से 4 बजे तक 10 वर्ष से अधिक आयु वाली बालिकाओं का शिविर आयोजित हुआ, जिसमें 185 बालिकाओं ने भाग लिया। महासतीवृन्द के द्वारा आधुनिक दूषित वातावरण से बचकर अच्छे संस्कारों के साथ जीने की प्रेरणा की गई। श्रीमती कौशल्या जी सालेचा एवं श्री ओमप्रकाश जी बांठिया के द्वारा भी अच्छे संस्कारों की शिक्षा दी गई। 22 अप्रेल को नवदम्पतियों का चिन्तन शिविर रखा गया जिसमें अच्छी संख्या में लोगों ने भाग लिया। समदड़ी से बालोतरा विहार सेवा में बालोतरा के सदस्यों का अच्छा योगदान रहा। यहाँ महासती मण्डल के 15 दिन विराजने पर चातुर्मास की भांति ठाठ लगा रहा। श्राविका मण्डल के द्वारा धार्मिक प्रश्नोत्तर की चर्चा की जाती थी। श्री जैन रत्न युवक परिषद् द्वारा 22 से 27 अप्रेल तक एक शिविर आयोजित किया गया, जिसमें 260 महिलाओं ने भाग लेकर ज्ञानार्जन किया। बालोतरा से महासतीवृन्द का विहार पालनपुर की ओर हुआ है। विहार सेवा में उत्साह से श्रावक-श्राविका तत्पर रहे।

मारवाड़ एवं मध्यप्रदेश क्षेत्र में प्रचार यात्रा सम्पन्न

श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर द्वारा 26 अप्रेल को मारवाड़ क्षेत्र में तथा 9 मई से 12 मई 2014 तक मध्यप्रदेश क्षेत्र में आध्यात्मिक प्रचार कार्यक्रम आयोजित किया गया। उक्त प्रचार कार्यक्रमों में स्वाध्याय संघ के सह संयोजक श्री राजेन्द्र जी कुम्भट-जोधपुर, सचिव श्री राजेश जी भण्डारी-जोधपुर, संघ के मुख्य कार्यालय प्रभारी श्री प्रकाश जी सालेचा-जोधपुर, मध्यप्रदेश स्वाध्याय संघ के प्रचारक श्री मोहन जी पीपाड़ा-इन्दौर स्वाध्याय संघ के कार्यालय प्रभारी श्री कमलेश जी मेहता-जोधपुर तथा कार्यालय सहयोगी श्री धीरज जी डोसी-जोधपुर की महनीय सेवाएं प्राप्त हुईं। प्रचार कार्यक्रम में भोपालगढ़, गोटन, जैन कॉलोनी-पुष्कर, मेड़ता सिटी, कालूखेड़ा, उन्हैल, उज्जैन, शाजापुर, बेरछा, आकोदिया मण्डी, शुजालपुर मण्डी, आष्टा, इन्दौर, हातोद, हाटपिपल्या, बागली, वाकोद, करही, बोलिया आदि क्षेत्रों में प्रवास हुआ। प्रचार कार्यक्रम में पर्युषण पर्वाराधना में स्वाध्यायी बुलाने की पुरजोर प्रेरणा की गई, जिसके फलस्वरूप 8 मांगें प्राप्त हुईं। नये स्वाध्यायी बनने की प्रेरणा से 19 महानुभावों ने स्वाध्यायी सदस्यता ग्रहण की तथा पुराने स्वाध्यायियों की पर्युषण सेवा स्वीकृति भी प्राप्त की गई। सभी स्थानों पर बालक-बालिकाओं हेतु रविवारीय संस्कार शिविरों की प्रेरणा की गई तथा चल रहे शिविरों की समीक्षा की गई। शिक्षण बोर्ड की आगामी परीक्षा की जानकारी देते हुए नये केन्द्र प्रारम्भ किए

गए तथा आगामी परीक्षा हेतु फार्म भरवाए गए। प्रचार के दौरान भोपालगढ़ में व्याख्यात्री महासती श्री मनोहरकंवर जी म.सा. आदि ठाणा के दर्शन-वन्दन का लाभ भी प्राप्त हुआ।

-कुशलचन्द जैन गोटेवाला, संयोजक

जोधपुर में 'तत्त्वार्थसूत्र' पर स्वाध्यायी गुणवत्ता अभिवर्द्धन शिविर सम्पन्न

स्वाध्यायियों के ज्ञान की अभिवृद्धि हेतु स्वाध्याय संघ द्वारा 23 से 25 मई 2014 तक जोधपुर में "स्वाध्यायी गुणवत्ता अभिवर्द्धन शिविर" आयोजित किया गया। उक्त शिविर में चयनित वरिष्ठ स्वाध्यायियों को ही आमंत्रित किया गया था। शिविर में 52 वरिष्ठ स्वाध्यायियों ने भाग लिया और उन्हें 'तत्त्वार्थ सूत्र' के पांच अध्ययनों का अध्ययन करवाया गया। विद्वान् प्रशिक्षक डॉ. धर्मचन्द जी जैन-जोधपुर, श्री प्रकाशचन्द जी जैन-जलगांव, श्री सुन्दरलाल जी जैन-जोधपुर तथा डॉ. श्वेता जी जैन-जोधपुर ने स्वाध्यायियों को तत्त्वार्थ सूत्र के मर्म को समझाया। स्वाध्याय संघ के सह संयोजक श्री राजेन्द्र जी कुम्भट तथा सचिव श्री राजेश जी भण्डारी ने भी शिविर में प्रतिभागिता ली। शिविर के अन्तिम दिवस परमश्रद्धेय उपाध्यायप्रवर पं. रत्न श्री मानचन्द्र जी म.सा. का आशीर्वाद प्राप्त हुआ तथा मधुरव्याख्यानी श्री गौतममुनि जी म.सा., श्रद्धेय श्री लोकचन्द्र जी म.सा., श्रद्धेय श्री जितेन्द्र मुनि जी म.सा. से तत्त्वार्थ सूत्र की विशेष जानकारी के साथ ही इसे पूर्ण रूप से कण्ठस्थ करने की प्रेरणा प्राप्त हुई। स्वाध्याय संघ द्वारा आगामी 1 से 3 अगस्त 2014 को परमश्रद्धेय आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. के पावन सान्निध्य में कोटा में केन्द्रीय स्वाध्यायी गुणवत्ता अभिवर्द्धन शिविर आयोजित किया जाना प्रस्तावित है।

-कुशलचन्द जैन गोटेवाला, संयोजक

आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड की आगामी परीक्षाएँ

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, घोड़ों का चौक, जोधपुर द्वारा कक्षा 1 से 12 तक के पाठ्यक्रम की आगामी परीक्षा 20 जुलाई, 2014, रविवार को दोपहर 12.30 से 3.30 बजे तक आयोजित की जायेगी। उक्त परीक्षा में भाग लेने हेतु आवेदन पत्र जमा कराने की अन्तिम तिथि 20 जून 2014 है। परीक्षार्थियों की सुविधा हेतु शिक्षण बोर्ड की ओर से कक्षा 1 से 3 तक गुजराती भाषा में तथा कक्षा 1 से 2 तक अंग्रेजी भाषा में भी पुस्तकें उपलब्ध हैं। तत्त्वज्ञान में रुचि रखने वाले भाई-बहिनों के लिए जैनागम स्तोक वारिधि (थोकड़ा) परीक्षा 11 जनवरी, 2015, रविवार को दोपहर 12.30 से 3.30 बजे तक आयोजित की जायेगी। इस परीक्षा में भाग लेने हेतु आवेदन-पत्र जमा कराने की अन्तिम तिथि 11 दिसम्बर 2014 है। आवेदन-पत्र, पुस्तकों तथा परीक्षा सम्बन्धी अन्य

जानकारी के लिए सम्पर्क करें- सुरेश बी. चोरडिया,संयोजक-9444028841, नवरतन गिड़िया, सचिव-9414100759, धर्मचन्द जैन, रजिस्ट्रार-9351589694, शिक्षण बोर्ड कार्यालय, जोधपुर-0291-2630490 Website: jainratnaboard.com, E-mail: shikshanboardjodhpur@gmail.com

श्राविका मण्डल द्वारा उपासकदशांग सूत्र की परीक्षा 29 जून को

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल द्वारा आयोजित बने आगम अध्येता में दशवैकालिकसूत्र पर आधारित उपासकदशांग की परीक्षा विभिन्न ग्राम-नगरों के पूर्व परीक्षा केन्द्रों पर रविवार, 29 जून 2014 को दोपहर 12 से 3 बजे तक रखी गई है। सभी परीक्षार्थी अपने केन्द्राधीक्षक से सम्पर्क कर जानकारी प्राप्त कर सकते है। सम्पर्क सूत्र (कार्यालय)- 0291-2636763,2641445, मोबाइल 9314635755, 9414205773

-बीना मेहता, महासचिव

समग्र जैन चातुर्मास सूची-2014 का प्रकाशन

समग्र जैन सम्प्रदायों (श्वेताम्बर, मूर्तिपूजक, स्थानकवासी, तेरापंथी एवं दिगम्बर) के लगभग 15 हजार से अधिक साधु-साध्वियों के प्रतिवर्ष होने वाले चातुर्मास एवं समाज की सभी गतिविधियों की सम्पूर्ण जानकारियाँ प्राप्त करने हेतु समग्र जैन चातुर्मास सूची का विगत 35 वर्षों से प्रति वर्ष नियमित प्रकाशन किया जाता रहा है। अतः निवेदन है कि आपके गाँव/शहर/कस्बे/उपनगरों में जिन पूज्य जैन गच्छ नायक आचार्यों, साधु-साध्वियों के वर्ष 2014 के चातुर्मास स्वीकृत हुए हैं, उन सभी संत-सतियों की चातुर्मास की जानकारियाँ शीघ्र भिजवाने की कृपा करावें, ताकि चातुर्मास प्रारम्भ होने तक इनका प्रकाशन कर सकें। **सम्पर्क सूत्र-** बाबूलाज जैन 'उज्ज्वल' संपादक, 105, तिरुपती अपार्टमेन्ट्स, आकुर्ली क्रॉस रोड नं. 1, रेलवे स्टेशन के सामने, कांदिवली (पूर्व), मुम्बई-400101 (महा.) टेलीफैक्स-022-28871278, मोबाइल-093245-21278, Email-ujjwalprakashan@gmail.com

जोधपुर जिलाधीश ने किया रक्तदान

जोधपुर- श्री वर्द्धमान जैन रिलीफ सोसायटी के तत्त्वावधान में परम श्रद्धेय उपाध्यायप्रवर पं. रत्न श्री मानचन्द्र जी म.सा. के 52 वें दीक्षा दिवस के अवसर पर श्री वर्द्धमान जैन रिलीफ सोसायटी जोधपुर एवं स्व. डॉ. सम्पतसिंहजी भाण्डावत की पावन स्मृति में निःशुल्क शल्य चिकित्सा शिविर 12 मई, 2014 को आयोजित किया गया। इस शिविर में ख्याति प्राप्त सर्जन डॉ. राम गोयल, एम.एस. द्वारा हर्निया, हाईड्रोसिल, पिस्टूला व मस्से

के ऑपरेशन किये गये। शिविर में सोजती गेट व्यापारी संघ, जोधपुर के संयुक्त तत्त्वावधान में रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया, जिसमें 65 लोगों ने अपना रक्तदान किया। रक्तदान शिविर में जोधपुर के जिलाधीश डॉ. प्रीतमजी बी. यशवन्त ने स्वयं रक्तदान करने के साथ ही वर्द्धमान अस्पताल का निरीक्षण-अवलोकन किया और अस्पताल में संचालित गतिविधियों को देखकर प्रसन्नता व्यक्त की। *-पूरणराज अबानी, अध्यक्ष*

'जैन संस्कृत एवं प्राकृत काव्यों में मानवीय मूल्य' विषय पर उदयपुर में राष्ट्रीय संगोष्ठी सम्पन्न

उदयपुर- जैन विद्या एवं प्राकृत विभाग, मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर एवं राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान मानित विश्वविद्यालय नई दिल्ली के संयुक्त तत्त्वावधान में 27-29 मार्च, 2014 तक राष्ट्रिय प्राकृत संगोष्ठी ''जैन संस्कृत एवं प्राकृत काव्यों में मानवीय-मूल्य'' विषय पर सम्पन्न हुई। त्रिदिवसीय संगोष्ठी में सम्पूर्ण देश से विद्वान आए, जिन्होंने इस ज्ञान यज्ञ में अपनी आहुति दी। संगोष्ठी के कुल 12 सत्रों में जैन संस्कृत एवं प्राकृत काव्यों को आधार बनाकर 65 बाह्य विद्वानों तथा 30 स्थानीय विषय विशेषज्ञों ने अपने शोध पत्र प्रस्तुत किए।

'अ.भा. प्राकृत विद्या फाउण्डेशन' का प्रथम अधिवेशन

उदयपुर- जैनविद्या एवं प्राकृत के अध्ययन-अध्यापन एवं शोध के क्षेत्र में नित-नये कार्यों को गति प्रदान करने और उनके विकास की स्थिति को सुदृढ़ता प्रदान करने के निमित्त से गठित ''अखिल भारतीय प्राकृत विद्या फाउण्डेशन'' का प्रथम अधिवेशन उदयपुर में सम्पन्न हुआ। अखिल भारतीय प्राकृत विद्या फाउण्डेशन के अध्यक्ष प्रोफेसर प्रेम सुमन जैन की अध्यक्षता में आयोजित इस अधिवेशन का उद्घाटन पालि एवं प्राकृत विद्या मनीषी तथा कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय के सेवानिवृत्त प्रोफेसर धर्मचन्द जैन, कुरुक्षेत्र के कर-कमलों द्वारा हुआ। इस अवसर पर त्रिदिवसीय राष्ट्रिय प्राकृत संगोष्ठी में समागत अनेक वरिष्ठ विद्वानों ने अपने विचारों से फाउण्डेशन की आवश्यकता, महत्ता और उसको सुनियोजित रूप में विकास देने पर जोर दिया। प्राकृत, पालि एवं जैनविद्या के इन सभी विद्वानों ने अ.भा. प्राकृत विद्या फाउण्डेशन की आजीवन सदस्यता ग्रहण कर इसके विकास और उन्नयन पर अपनी सहमति प्रदान की।

प्रधानमंत्री श्री मोदी का सकारात्मक रुख

श्री नरेन्द्र दामोदर दास मोदी ने भारत के 15 वें प्रधानमंत्री पद की 26 मई, 2014 को शपथ ग्रहण की। इसके साथ ही अहिंसा प्रेमियों के मन में नई आशाओं का संचार हो गया है। उनके उद्बोधन में जो जैनत्व के प्रभाव की झलकियाँ दृष्टिगोचर हुई हैं, इससे जैन

समाज उनके सकारात्मक पक्ष का अनुमान लगा रहा है। भारत के प्रधानमंत्री बनने से पूर्व गुजरात के मुख्यमंत्री के पद से त्यागपत्र देते समय गुजरात विधानसभा में 21 मई 2014 को श्री मोदी ने गुजराती भाषा में प्रदत्त अपने विदाई भाषण के अन्तिम चरण में कहा कि उनके द्वारा जाने-अनजाने में हुई गलतियों के लिए 'मिच्छा मि दुक्कडम्।' उनके 'मिच्छा मि दुक्कडम्' कहने पर उपस्थित सदस्यों और श्रोताओं ने मेजें थपथपाकर प्रमोद व्यक्त किया। आशा है प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी अहिंसा को प्रश्रय देते हुए कत्लखानों की संख्या में कमी लायेंगे तथा शाकाहार भोजन को बढ़ावा देंगे।

छात्रवृत्ति हेतु आवेदन आमन्त्रित

चेन्नई- प्रतापमल हरकचन्द भण्डारी करुणा इण्टरनेशनल एज्यूकेशन फाउण्डेशन द्वारा कक्षा 11 वीं से महाविद्यालयों की उच्चतर शिक्षा हेतु प्रतिवर्ष कुल 10 लाख रुपए तक की राशि का छात्रवृत्ति में उपयोग किया जाएगा। यह शैक्षणिक अनुदान-छात्रवृत्ति प्राप्त करने हेतु योग्यता निम्नानुसार है-

1. किसी भी जाति/लिंग के भारतीय नागरिक इस छात्रवृत्ति के लिए आवेदन कर सकेंगे।
2. विद्यार्थी के संरक्षक की आय प्रतिवर्ष चार लाख से अधिक नहीं होनी चाहिए।
3. अनुदान-छात्रवृत्ति आवेदन के पूर्व के शैक्षणिक सत्र में 75 प्रतिशत अंक अनिवार्य हैं।
4. वार्षिक छात्रवृत्ति की अधिकतम राशि 20,000/ रुपये तक होगी।

सम्पर्क सूत्र- Application for 'Scholarship', Pratapmal Harakchand Bhandari Karuna International Ecucation Foundation, M/s. Tatia Chemical Corpn. Pvt. Ltd., 18, Ritherdon Road, Vepery, Chennai-600007, श्री प्रवीण टाटिया-09840095050, करुणा अंतरराष्ट्रीय- 044-25231714, 25231724

आवश्यकता है

भोपालगढ़- श्री जैन रत्न जवाहरलाल बाफना उच्च प्राथमिक कन्या पाठशाला, नया स्थानक के पीछे, भोपालगढ़, जिला-जोधपुर (राज.) में प्रधानाध्यापिका एवं अध्यापक/अध्यापिका की आवश्यकता है। शैक्षणिक योग्यता- स्नातक, बी.एड., आकर्षक वेतन देय होगा। **सम्पर्क सूत्र-** श्री सोहनलाल बोथरा-सचिव, फोन नं. 02920-215354, 09414601024

संक्षिप्त-समाचार

चेन्नई- स्वाध्याय भवन, साहूकारपेट के प्रागंण में आचार्य श्री हीराचन्द्र जी म.सा. का आचार्य पदारोहण दिवस श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, तमिलनाडु के तत्त्वावधान में

ज्ञान-दर्शन-चारित्र तप-त्यागपूर्वक सामायिक साधना दिवस के रूप में मनाया गया। आचार्य श्री के जीवन चारित्र पर श्री विनोद जैन, श्री आर. नरेन्द्र कांकरिया, श्री आनन्द जी चोरडिया, श्री चंपालाल जी बोथरा, श्रीमती तारादेवी बाघमार, श्री हस्तीमल जी बोहरा, श्री ज्ञान जी बाघमार ने अपने विचार गुणानुवाद रूप में रखे।

-आर. नरेन्द्र कांकरिया, सहमंत्री

नग्नलूर- श्री एस.एस. जैन संघ, नग्नलूर-चेन्नई द्वारा 02 से 06 मई 2014 तक पंच दिवसीय ग्रीष्मकालीन धार्मिक शिक्षण शिविर का आयोजन किया गया। इस शिविर में नग्नलूर एवं आसपास के क्षेत्र से लगभग 100 बालक-बालिकाओं ने भाग लिया। शिविर में श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ एवं श्री जैन रत्न युवक परिषद्, चेन्नई का पूरा सराहनीय सहयोग प्राप्त हुआ।-गौतमचन्द कांकरिया

सूरत- श्री जैन रत्न युवक परिषद्, सूरत, जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, सूरत एवं संग्रामपुरा 6 कोटी संघ व दरियापुरी आठ कोटी संघ के संयुक्त तत्त्वावधान में 4 मई से 11 मई 2014 तक 8 दिवसीय ग्रीष्मकालीन नैतिक संस्कार व धार्मिक शिक्षण शिविर का आयोजन किया गया। शिविर में खम्भात सम्प्रदाय के आचार्य श्री कान्तिऋषिजी महाराज के अंतेवासी सुशिष्य श्री जितेन्द्र मुनि जी आदि ठाणा 3 का सान्निध्य प्राप्त हुआ। शिविरार्थियों ने प्रतिदिन 4 से 5 सामायिक की। कई शिविरार्थियों ने जमीकंद त्याग, रात्रिभोजन त्याग व वर्ष में 50 सामायिक से ऊपर करने की मर्यादा ग्रहण की। शिविर में जैन धर्म का संक्षिप्त इतिहास, आठ कर्म, सामायिक, प्रतिक्रमण, भक्तामर, तीर्थंकर एवं लोगस्स आदि का प्रश्नोत्तरी के माध्यम से अध्ययन कराया गया।

अजमेर- काश्मीर प्रचारिका, पूज्या श्री उमराव कुँवरजी म.सा. 'अर्चना' का पाँचवा पुण्य स्मरण त्रिदिवसीय कार्यक्रम महासती कंचन कुँवर जी म.सा. एवं उनके सती मण्डल के सान्निध्य में श्री पार्श्वनाथ सेवा संस्थान, अजमेर में मनाया गया। इस अवसर पर श्री रणजीत सिंह कूमठ (सेवानिवृत्त आई.ए.एस.) को श्री ब्रजमधुकर अर्चना लाइफ टाइम अचीवमेंट अवार्ड से सम्मानित किया गया तथा संस्थान की ओर से 51000/- की राशि भी भेंट स्वरूप प्रदान की गई, जिसे उन्होंने पुनः संस्थान को भेंट कर दिया। डॉ. नवनीत जी मुणोत-मुम्बई, डॉ. जय धारीवाल को यूथ अचीवर, श्रीमती प्रतिभा कोचर-जोधपुर को कला एवं संस्कृति व श्रीमती स्नेहा जैन-जोधपुर को खेल जगत् में अपने उल्लेखनीय योगदान के लिए युवा सम्मान से सम्मानित किया गया।

वैशाली (बिहार)- प्राकृत जैनशास्त्र और अहिंसा शोध संस्थान, वैशाली द्वारा वैशाली महोत्सव एवं महावीर जयन्ती के पावन अवसर पर जगदीशचन्द्र माथुर स्मृति

व्याख्यानमाला के अन्तर्गत 'सामाजिक जीवन में अनेकान्त' विषय पर 13 अप्रेल, 2014 को संगोष्ठी सम्पन्न हुई। संगोष्ठी में परिषद् के पूर्व सम्पादक डॉ. श्रीरंजन सूरिदेव ने अपने वक्तव्य में कहा कि अनेकान्तवाद को स्पष्ट करने की शक्ति स्याद्वाद में है। एक व्यक्ति में अनेक धर्मों का होना ही अनेकान्तवाद है, जैसे एक ही आदमी में पिता, पुत्र, पति, दादा, नाना इत्यादि धर्म एक साथ होते हैं, किन्तु उन्हें स्यात्पूर्वक ही कहा जा सकता है। 25 फरवरी को 'आचार्य कुन्दकुन्द का योगदान' विषयक तथा 31 जनवरी को 'प्राकृतभाषा और बिहार की भाषाएँ' विषयक व्याख्यान हुए।

वैशाली (बिहार)- प्राकृत जैनशास्त्र और अहिंसा शोध संस्थान, वैशाली के दो नये प्रकाशन- 1. दिगम्बर संत मुनिश्री प्रणम्यसागर जी महाराज द्वारा प्राकृत भाषा में रचित 'तित्थयरभावणा' एवं 2. श्वेताम्बर परम्परा के आचार्य प्रभाचन्द्र द्वारा रचित 'प्रभावक-चरित' का डॉ. श्रीरंजन सूरिदेव द्वारा किये गये हिन्दी भाषानुवाद की पुस्तक का लोकार्पण संस्थान में आयोजित विद्वत्संगोष्ठी में शताधिक विद्वानों-श्रोताओं की सन्निधि में अतिथियों द्वारा किया गया।

बैंगलोर- आचार्य श्री रामलाल जी म.सा. के मुखारविन्द से सुश्री बीना (पिंकी) चोरड़िया सुपुत्री श्री पन्नालाल जी एवं श्रीमती स्वर्णलता जी चोरड़िया की भागवती दीक्षा सम्पन्न हुई।

जोधपुर- महावीर इण्टरनेशनल द्वारा 20 अप्रेल 2014 को महावीर विचार गोष्ठी 'भगवान महावीर की समाधान शैली' विषय पर आयोजित की गई। जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय के संस्कृत विभाग के पूर्व अध्यक्ष एवं जिनवाणी के मानद सम्पादक डॉ. धर्मचन्द जी जैन ने अपने मुख्य वक्तव्य में कहा कि भगवान महावीर की समस्याओं के समाधान की विशिष्ट शैली रही है, जिसका प्रतिपादन व्याख्याप्रज्ञप्ति, आचारांग, प्रज्ञापना, सूत्रकृतांग आदि में मिलता है। प्रभु महावीर द्रव्य-क्षेत्र-काल-भाव नामक चतुर्दृष्टि से, आपेक्षिक दृष्टि से, स्याद्वाद शैली से, द्रव्य-पर्याय की दृष्टि से, विभज्यवाद एवं मनोविज्ञान की शैली से प्रश्नकर्त्ताओं को उत्तर देकर सन्तुष्ट करते थे। कार्यक्रम के अध्यक्ष शहर विधायक श्री कैलाश जी भंसाली ने कहा कि- "जीओ और जीने दो" सिद्धान्त के प्ररूपक भगवान महावीर के विचार आज भी उतने ही प्रासंगिक हैं।

चेन्नई- मद्रास विश्वविद्यालय के जैनालॉजी विभाग में एम.ए., एम.फिल, पी.एच्.डी. एवं डिप्लोमा इन जैन टेम्पल मैनेजमेण्ट के कोर्स चलाए जाते हैं। प्रवेश के लिए आप निम्न वेबसाइट पर जानकारी कर सकते हैं- website-www.unom.ad.in

एम.ए. उत्तीर्ण विद्यार्थी को जैन इण्डिया ट्रस्ट से अनुमोदनार्थ 20000/- रुपये की वृत्ति राशि (Stipend) की व्यवस्था उपलब्ध है। **सम्पर्क सूत्र-** डॉ. प्रियदर्शना जैन,

फोन-098403-68851, Email- priyadarshanjain@yahoo.in

दिल्ली- श्री ऑल इण्डिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेन्स के अध्यक्ष के रूप में श्री नेमनाथ जैन, इन्दौर को एवं राष्ट्रीय मंत्री के रूप में श्री उगमचन्द गाँधी, इचलकरंजी को मनोनीत किया गया है।

श्रवणबेलगोला- डॉ. रमेशचन्द जैन, बिजनौर (उत्तरप्रदेश) राष्ट्रीय प्राकृत अध्ययन एवं संशोधन संस्थान श्रवणबेलगोला के निदेशक के पद पर नियुक्त किए गए हैं। डॉ. रमेशचन्द जैन संस्कृत और प्राकृत के साहित्यिक क्षेत्र के प्रसिद्ध विद्वान् हैं। उन्होंने 60 से अधिक ग्रंथों की रचना, अनुवाद एवं संपादन किया है। सम्पर्क सूत्र- 08176-257228, **Email-mynipsar@yahoo.co.in**

बालोतरा- श्री हस्ती कल्याण संस्थान बालोतरा एवं श्री जैन रत्न युवक परिषद् द्वारा सर्वोच्च न्यायालय के 41 वें मुख्य न्यायाधिपति श्री आर.एम. लोढ़ा का बहुमान कर अभिनन्दन किया गया।

बधाई

आश्का अबानी

तन्वी चौपड़ा

हर्ष चोरड़िया

श्रीमती शकुन्तला जैन

महिमा लोढ़ा

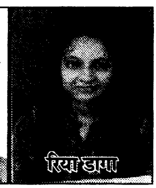
रिया डागा

वीरायतन- भारतीय मूल के श्री सोहम डागा सुपुत्र श्री मनोज कुमार डागा ने वाशिंगटन, अमेरिका में आयोजित "2014 इंटेल साइंस टैलेंट सर्च" के 40 अंतिम चयनित विद्यार्थियों में अपना स्थान बनाया है। ये विद्यार्थी कम्प्यूटर विज्ञान, माइक्रो बाइलॉजी, नेनो टेक्नालॉजी आदि विषयों में अपने प्रोजेक्ट बनायेंगे। इन विद्यार्थियो से अमरीकी राष्ट्रपति बराक ओबामा ने वाशिंगटन में मुलाकात की एवं प्रोत्साहित किया। श्री सोहम डागा वीरायतन संस्थान के मानद सचिव श्री तनसुख जी डागा के सुपौत्र हैं।

जोधपुर- सुश्री आश्का सुपुत्री प्रवीणजी-रेखाजी अबानी सीनियर सैकण्डरी वाणिज्य वर्ग में 95.6 प्रतिशत अंक प्राप्त करने के साथ राजस्थान में छठे स्थान पर रहीं। आप श्री वर्द्धमान जैन रिलीफ सोसायटी के अध्यक्ष श्री पूरणराजजी अबानी की सुपौत्री हैं।

जयपुर- सुश्री तन्वी सुपुत्री श्रीमती सविताजी एवं श्री चन्द्रशेखर जी चौपड़ा (सुपौत्री पूर्व न्यायाधिपति श्री जसराज जी चौपड़ा) को दुबई स्थित बेट कॉर्पोरेशन में वरिष्ठ प्रोजेक्ट कॉऑर्डिनेटर के पद पर नियुक्त किया गया है। आपने जयपुर से कम्प्यूटर इंजिनियरिंग में

बी. टेक. करके एस.पी. जैन इन्स्टीट्यूट ऑफ ग्लोबल मेनेजमेंट, सिंगापुर से एम.जी.बी. डिग्री प्राप्त की।

बैंगलुरु- श्री हर्ष चोरड़िया सुपुत्र श्री राजेन्द्र जी चोरड़िया (क्षेत्रीय प्रधान, कर्नाटक संभाग) ने 12 वीं कॉमर्स में 92 प्रतिशत अंक प्राप्त किए हैं।

जयपुर- श्रीमती शकुन्तला जैन को प्राकृत भाषा एवं साहित्य में कृत योगदान के लिए श्री कुन्दकुन्द भारती ट्रस्ट, दिल्ली द्वारा ब्राह्मी पुरस्कार प्रदान किए जाने की घोषणा की गई है। पुरस्कार स्वरूप उन्हें जून के प्रथम सप्ताह में एक लाख रुपये, प्रशस्ति-पत्र एवं स्वर्ण पदक समर्पित किये जायेंगे।

जयपुर- सुश्री महिमा लोढ़ा सुपुत्री श्रीमती अंजलिजी-प्रमेशजी लोढ़ा ने सी.बी.एस.ई. की सैकण्डरी परीक्षा 95 प्रतिशत अंक से उत्तीर्ण की।

जयपुर- सुश्री रिया सुपुत्री श्रीमती सुरुचि-राजेश जी डागा एवं सुपौत्री समाजसेवी श्री उत्तमचन्द जी डागा ने **CBSE** की 12 वीं कक्षा में 93 प्रतिशत अंक प्राप्त किये।

श्रद्धांजलि

विजयनगर- जैनाचार्य श्री सुदर्शनलाल जी म.सा. के शिष्य श्री संतोकमुनिजी महाराज का संथारापूर्वक समाधिमरण हो गया। उन्होंने जैन आचार्य श्री सोहनलाल जी महाराज के प्रवचनों से प्रभावित होकर 1994 में जैन दीक्षा ग्रहण की थी। आप स्वाध्याय में सदैव तल्लीन रहते थे। आप सेवामूर्ति की उपाधि से अलंकृत थे।

खेडला (दौसा)- संघ-सेवी, संत-सेवी सुश्राविका वीरमाता श्रीमती सुमित्रादेवीजी

धर्मपत्नी वीरपिता श्री राजेशकुमार जी जैन का 26 अप्रेल 2014 को देहावसान हो गया। आपका त्याग-तप से युक्त जीवन था। आपका जीवन अनेक गुणों से सुवासित था। आपकी आचार्यप्रवर, उपाध्यायप्रवर एवं संत-सतीवृन्द के प्रति अगाध श्रद्धा व भक्ति थी। शेखेकाल अपने यहाँ पधारने वाले संत-सतीवृन्द को भक्ति-भाव पूर्वक निर्दोष आहार-पानी बहराकर अपने-आप को वे भाग्यशाली समझती थीं। उन्होंने संस्कारी जीवन जीते हुए अपनी सन्तति को धार्मिक संस्कार देने का महत्त्वपूर्ण दायित्व निभाया। उसी का प्रभाव है कि साध्वीप्रमुखा श्री मैनासुन्दरी जी म.सा. की सुशिष्या महासती श्री निरंजनाजी म.सा. के रूप में आपकी सुपुत्री रत्नसंघ एवं जिनशासन की प्रभावना करते हुए संघ की गौरव-गरिमा में अभिवृद्धि कर रही हैं।

देई- तपसाधिका श्रीमती कमलादेवी जी जैन धर्मपत्नी श्री उच्छबलाल जी जैन का 29 अप्रेल 2014 को समाधिमरण हो गया। उस समय पूज्य गुरुदेव आचार्य श्री हीराचन्द्र जी म.सा. का पावन प्रवास वहीं था, अतः इस संयोग को श्राविका ने अपना भाग्योदय समझा और महान् अध्यवसायी श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा. के मुखारविन्द से चौविहार संथारा ग्रहण किया। आपका जीवन धर्म-ध्यान से अनुप्राणित था।

जोधपुर- सेवाभावी श्राविकारत्न श्रीमती मगी बाई धर्मपत्नी श्री मोतीलाल जी कांकरिया का 98 वर्ष की वय में 1 मई, 2014 को स्वर्गगमन हो गया। आपकी रत्नसंघ के संत-सतियों के प्रति गहरी श्रद्धा थी। नित्य प्रति 5-6 सामायिक के साथ पर्वतिथियों पर आप उपवास, एकासन, दया व्रत, संवर की साधना करती थीं। बिराई में आचार्यश्री, उपाध्यायश्री एवं संत-सतियों के पधारने पर आपका परिवार तन, मन और धन से सेवा भक्ति में तत्पर रहा। आप वरिष्ठ स्वाध्यायी श्री मुन्नालाल जी भण्डारी की सास थीं।

कोलकाता- संघसेवी श्राविकारत्न श्रीमती सोहनकंवरजी भण्डारी धर्मसहायिका स्व. श्री मदनरूपचन्द जी भण्डारी का 10 मई 2014 को 83 वर्ष की वय में संथारा-संलेखना पूर्वक स्वर्गगमन हो गया। समर्पित गुरुभक्त श्राविकाजी ने जोधपुर के पावटा स्थानक के पूर्व भवन का निर्माण स्वयं खड़े रहकर अचित्त जल से करवाया। कोलकाता में भी उनकी लगन एवं प्रेरणा से महावीर सदन ने आकार ग्रहण किया। सन्त-सतियों की सेवा में वे सदैव तत्पर रहती थीं। वे नियमित रूप से सामायिक-स्वाध्याय करती थीं। उन्होंने अठाई, मासक्षमण एवं वर्षीतप की आराधना की। आचार्य श्री हस्ती एवं आचार्य श्री हीरा के प्रति श्रद्धानिष्ठ श्राविका संघसेवा एवं समाज-सेवा में सदैव सन्नद्ध रहने के साथ जरूरतमंद की सहायता के लिए तत्पर रहती थीं। वे अपने पीछे भरापूरा संस्कारित परिवार छोड़कर गई हैं।

जोधपुर- सुश्रावक श्री ज्ञानमल जी मुल्तानी का 27 मार्च, 2014 को 85 वर्ष की आयु में देहावसान हो गया। आपका जीवन सरलता, मधुरता, उदारता आदि सद्गुणों से युक्त था। आपने आजीवन शीलव्रत का नियम लिया था। आबकारी विभाग में ईमानदारी के लिए आपको कई बार सम्मानित किया गया। आपके पुत्र श्री सुरेश जी मुल्तानी 6 वर्षों तक आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड के कोषाध्यक्ष रहे हैं। पुत्रवधू डॉ. मीताजी मुल्तानी वर्तमान में अखिल भारतीय श्राविका संघ की कोषाध्यक्ष हैं।

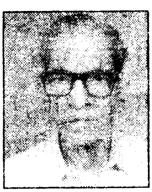

मुम्बई- संतसेवी, श्रद्धानिष्ठ सुश्राविका श्रीमती पूनमकँवरजी धर्मसहायिका श्री पुरुषोत्तम

मल जी भण्डारी का स्वर्गवास 02 मई 2014 को हो गया। आपने छह वर्ष की अल्पायु में प्रतिक्रमण शुद्ध उच्चारण सहित कंठस्थ कर लिया था। आप नियमित रूप से अंतगडदसा सूत्र, दशवैकालिक सूत्र, कल्पसूत्र, उत्तराध्ययन सूत्र का स्वाध्याय करती थीं। आपको भक्तामर स्तोत्र व कल्याणमंदिर स्तोत्र कंठस्थ थे। आप नियमित रूप से मौनव्रत का पालन करती थीं। आपके जीवन पर रत्नसंघ के मुनि भगवन्तों और साध्वीवृन्द का विशेष प्रभाव था।

आरकाट- धर्मनिष्ठ सुश्राविका श्रीमती सुशीलाबाई जी चौधरी धर्मपत्नी श्री रेखचन्दजी

चौधरी का 63 वर्ष की वय में 6 मई, 2014 को आकस्मिक निधन हो गया। आप आचार्य भगवन्त श्री हस्तीमल जी म.सा. के सुशिष्य बाबाजी महाराज श्री जयन्तीमुनिजी की संसारपक्षीया पौत्रवधू थीं। सेवा और सादगी की प्रतिमूर्ति सुश्राविका जी आरकाट क्षेत्र में विचरण करने वाले साधु-साध्वियों की सेवा-भक्ति में सदैव तत्पर रहती थीं। उसी क्षेत्र में पिछले बीस वर्षों से जैन परिवारों में नवकार मंत्र का जाप एवं अन्य धार्मिक गतिविधियों को सुचारू रूप से नियमित करवाने में आपकी प्रमुख भूमिका रहती थी। गुरु भगवन्तों के प्रति अनन्य श्रद्धा रखने वाली श्राविका के जीवन में सामायिक, व्रत-प्रत्याख्यान आदि दैनिक नियम थे।

जयपुर- सुश्रावक श्री रतनलाल जी रांका का 16 अप्रेल 2014 को देहावसान हो गया। आपका जीवन संघ व समाज सेवा में समर्पित रहा। आप नियमित सामायिक-स्वाध्याय करने वाले चिन्तनशील श्रावक थे। आपने अपने जीवन में अनेक त्याग-प्रत्याख्यान ग्रहण किए थे। स्वधर्मी-वात्सल्य, आतिथ्य-सत्कार एवं रत्नसंघ द्वारा संचालित सभी प्रवृत्तियों में रांका परिवार का महत्त्वपूर्ण योगदान प्राप्त होता रहा है।

जयपुर- धर्मनिष्ठ सुश्राविका श्रीमती जयचन्द देवी नाहर धर्मपत्नी स्व. श्री उमरावसिंह जी नाहर का 15 अप्रेल 2014 को 72 वर्ष की वय में स्वर्गलोकगमन हो गया। आप नियमित सामयिक-स्वाध्याय करती थीं। आपने आजीवन शीलव्रत का नियम ग्रहण कर अपने जीवन को संयम साधना से पुष्ट किया था।

बैंगलुरु- सुश्राविका श्रीमती सुनीता जी सिंघवी धर्मपत्नी श्री संजय जी सिंघवी मूल निवासी जोधपुर का 42 वर्ष की आयु में 18 मई 2014 को राजस्थान में देवलोकगमन हो गया। आपका जीवन सादगीपूर्ण था।

बैंगलुरु- सरलमना सुश्राविका श्रीमती कमलाबाई धर्मपत्नी श्री बी. शांतिलाल जी पोखरणा का 69 वर्ष की उम्र में 8 मई 2014 को हृदयाघात से देहावसान हो गया। प्रतिदिन सामायिक करना आपका नित्य क्रम था। आप मिलनसार प्रवृत्ति की मृदुभाषी व्यवहार कुशल महिलारत्न थीं।

मसूदा- सुश्रावक श्री गजराज जी रूणीवाल का तिरही (तमिलनाडू) में 03 अप्रेल 2014 को आकस्मिक निधन हो गया। आपके आजीवन शीलव्रत के प्रत्याख्यान थे। आप उदारमना धर्मनिष्ठ श्रावक थे।

जोधपुर- सुश्रावक श्री प्रकाशमल जी सुपुत्र स्व. श्री नवरतनमल जी लोढ़ा का 85 वर्ष की वय में 30 अप्रेल 2014 को बैंगलोर में हृदयाघात से आकस्मिक स्वर्गगमन हो गया। आपका मन सहज एवं उदार भावों से युक्त था। आप भावांजलि के सक्रिय सदस्य थे।

दूदू- श्रद्धाशील सुश्राविका श्रीमती चाँदकंवर जी मेहता धर्मपत्नी श्री धर्मचन्द जी मेहता का 62 वर्ष की अल्पायु में स्वर्ग-प्रयाण हो गया। आप चार सामायिक प्रतिदिन करती थीं तथा आपके रात्रिभोजन त्याग का नियम था। आप सरलता एवं सादगी से जीवन यापन करती थीं। आप अपने पीछे धर्मनिष्ठ परिवार छोड़कर गई हैं।

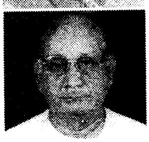

इन्दौर- वरिष्ठ श्रावक श्री रामप्रसाद जी जैन सिंगोर वालों का 19 मार्च, 2014 को परलोकगमन हो गया। वे समाजसेवी व धार्मिक संस्कारों से अनुप्राणित थे।

पीपलगाँव (बसवंत)- सुश्राविका श्रीमती सरुबाई धर्मपत्नी श्री झूंबरलाल जी छाजेड़ का 83 वर्ष की वय में स्वर्गवास हो गया। आप धर्म-आराधन, आगमशास्त्र-पठन, जप-तप में अपना समय व्यतीत करती थीं।

बालोतरा- संघसेवी सुश्रावक श्री गणपतलाल जी दांती चौपड़ा का 13 मई 2014 को देहावसान हो गया। आपकी संत-सतीवृन्द के प्रति अच्छी श्रद्धा-भक्ति थी। साम्प्रदायिक भावना से परे रहकर धर्माराधना-तपाराधना एवं संघ-सेवा

में आप सदैव तत्पर रहते थे। आचार्यप्रवर एवं उपाध्यायप्रवर आदि संत-सतीमण्डल के बालोतरा पधारने पर आपने अपूर्व धर्म-ध्यान का लाभ लिया।

जोधपुर- सुश्राविका श्रीमती रतनकंवरजी मेहता का 30 अप्रेल 2014 को देवलोकगमन हो गया। संघनिष्ठ, कर्त्तव्यनिष्ठ सुश्राविका की रत्नसंघ के संत-सतीवृन्द के प्रति अगाध श्रद्धा-भक्ति थी। आपने अपने जीवन में अनेक त्याग-प्रत्याख्यान स्वीकार किए थे। आप संत-सतीवृन्द की सेवा-भक्ति में सदैव तत्पर रहती थीं। आप एवं आपका परिवार संघ-सेवा, समाज-सेवा में सदैव अग्रणी रहा है।

चेन्नई- सुश्राविका श्रीमती भँवरीकंवरजी चोरडिया धर्मपत्नी स्व. श्री खींवराज जी चोरडिया का 03 मई, 2014 को संथारा के साथ देवलोकगमन हो गया। महासती श्री सिद्धि सुधाजी के मुखारविन्द से 27 अप्रेल को संथारा ग्रहण किया जो सात दिन चला। आपने मासक्षमण, 11 की तपस्या एवं अनेक अठाइयाँ कीं। वर्षीतप, नवपद आयम्बिल ओली, कल्याण तप आदि अनेक तपस्याएँ भी कीं। 25 वर्ष की लघु वय से ही आप रात्रि चौविहार-त्याग करती आ रही थी।

उपर्युक्त दिवंगत आत्माओं के प्रति सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जिनवाणी-परिवार तथा अ.भा. श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए उनके परिवारजनों के प्रति गहरी संवेदना व्यक्त करते हैं।

अनमोल चिंतनसूत्र

(मधुरव्याख्यानी श्री गौतममुनिजी म.सा. के द्वारा प्रवचन-सभा में प्रदत्त चिंतनसूत्र)

1. जय गुरु हीरा-जय गुरु मान, मेरी आत्मा बने महान्।
2. करूँ जिनवाणी का ज्ञान, तोडूँ मोह अज्ञान।
3. गुरु का सहारा, संसार से किनारा।
4. भाव सुधारूँ, भव सुधारूँ।
5. प्रभु गुण गाऊँ, प्रभु बन जाऊँ।
6. कुछ न चाहूँ, जन्म-मरण मिटाऊँ।
7. वीतराग को वंदन, तोडूँ राग का बन्धन।
8. प्रभु पुकारो, मुझे उभारो।

-संकलनकर्त्ता- श्री नवरतन डागा,
पूर्व महामंत्री, अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, जोधपुर (राज.)

साभार-प्राप्ति-स्वीकार

1000/- जिनवाणी पत्रिका की 20 वर्षीय आजीवन-सदस्यता हेतु प्रत्येक

क्रम संख्या 15247 से 15259 तक 13 सदस्य बने।

'जिनवाणी' मासिक पत्रिका हेतु साभार प्राप्त

11000/- श्री पुरुषोत्तमजी, अनिलजी, उदितजी, यशजी भंडारी, मुम्बई, श्रीमती पूनमकँवरजी धर्मसहायिका श्री पुरुषोत्तमजी भंडारी का दिनांक 02 मई 2014 को देहावसान हो जाने पर उनकी पुण्य स्मृति में।

5100/- श्रीमती सुशीलाजी मेहता, जयपुर, श्री प्रदीपजी सुपुत्र श्रीमती सुशीलाजी एवं स्व. श्री कैलाशचन्दजी मेहता की शादी की 25वीं सालगिरह के उपलक्ष्य में।

5100/- श्री महावीरजी, अनिलजी बोथरा (भोपालगढ़ वाले), जलगाँव, सौ. प्रेमलताजी धर्मपत्नी श्री सोहनलालजी बोथरा के वर्षीतप का पारणा सुखसाता से सम्पन्न होने की खुशी में।

5100/- वीरपिता श्री उषभचन्द जी सालेचा, हुबली (कर्नाटक), नवनिर्मित गृहप्रवेश तथा सपुत्र चि. महेश का शुभ विवाह सौ.कां. प्रभा के संग 19 अप्रेल 2014 को सम्पन्न होने के उपलक्ष्य में।

5000/- श्री उच्छबलालजी, श्यामबिहारीजी, अनुजजी, आदित्यजी जैन, देई-बूंदी, श्रीमती कमलादेवीजी धर्मसहायिका श्री उच्छबलालजी जैन का संथारे के साथ 29 अप्रेल 2014 को महाप्रयाण हो जाने पर उनकी पुण्य स्मृति में।

3100/- श्री रेखचन्दजी, आनन्दजी, सुदर्शनजी चौधरी (पीपाड़सिटी वाले), आर्काट, श्रीमती सुशीलाबाईजी धर्मपत्नी श्री रेखचन्दजी चौधरी का 06 मई 2014 को आर्काट में देहावसान हो जाने पर उनकी पुण्य स्मृति में।।

2100/- श्री धनरूपचन्दजी, अमित कुमारजी मेहता, बेंगलोर, श्रीमती मंजूजी धर्मसहायिका श्री धनरूपचन्दजी मेहता का अक्षय तृतीया पर वर्षीतप का पारणक एवं उनका आज्ञापत्र समर्पित करने के उपलक्ष्य में।

2100/- श्री धर्मचन्दजी, कमल कुमारजी, संजयजी मेहता, दूदू-जयपुर, श्रीमती चाँदकँवरजी मेहता धर्मपत्नी श्री धर्मचन्दजी मेहता का दिनांक 02 मई 2014 को देहावसान हो जाने पर उनकी पुण्य स्मृति में।

2100/- श्री संदीपजी बागमार, जबलपुर, श्री सम्पतलालजी बागमार का देहावसान हो जाने पर उनकी पुण्य स्मृति में।

2100/- श्री विमलराजजी, अनिलराजजी विनायक मेहता, जोधपुर, पूजनीया माताजी श्रीमती रतन कंवर जी मेहता धर्मपत्नी स्व. श्री धनराज जी मेहता की पावन पुण्य स्मृति में।

1100/- श्री बिजयसिंहजी, शैलेन्द्रसिंहजी मुणोत, जयपुर, श्रीमती पुष्पाजी धर्मसहायिका स्व. श्री चन्द्रसिंहजी मुणोत का 13 अप्रेल 2014 को देहावसान हो जाने पर उनकी पुण्य स्मृति में।

1100/- श्री मुन्नालालजी, हिम्मतसिंहजी, कुलदीप कुमारजी रूणवाल (मसूदा वाले), तिरछी-तमिलनाडु, श्री गजराज जी रूणवाल की पुण्य स्मृति में भेंट।

1100/- श्री हीराचन्दजी नाहर, जयपुर, सुश्राविका श्रीमती जयचन्ददेवीजी धर्मपत्नी स्व. श्री

उमरावसिंह जी नाहर का 15 अप्रेल 2014 को देहावसान हो जाने पर उनकी पुण्य स्मृति में।

1100/- श्री सागरमलजी कोठारी, ब्यावर, श्री सुदर्शनजी सुपौत्र श्री सागरमलजी, सुपुत्र श्री सुभाषजी कोठारी की इन्फोसिस कम्पनी, चेन्नई में नियुक्ति होने के उपलक्ष्य में।

1100/- श्री प्रेमचन्दजी जैन, जयपुर सुपुत्र श्री अमितजी जैन का शुभविवाह सौ.कां. प्रियंकाजी सुपुत्री श्री महेन्द्रजी जैन, सवाईमाधोपुर के संग सानन्द सम्पन्न होने की खुशी में।

1100/- श्री देवराजजी, नवरतनमलजी चोरड़िया एवं पारिवारिकजन, चेन्नई, श्रीमती भंवरीकँवरजी धर्मपत्नी स्व. श्री खिंवराजजी चोरड़िया का 03 मई 2014 को संथारे के साथ स्वर्गगमन हो जाने पर उनकी पुण्य स्मृति में।

1100/- श्रीमती अनिताजी-रिदेशजी भण्डारी, जोधपुर, श्रीमती पुष्पाजी ओस्तवाल धर्मपत्नी स्व. श्री मिश्रीमल जी ओस्तवाल का स्वर्गवास 12 फरवरी, 2014 को हो जाने पर उनकी पावन स्मृति में।

1100/- श्री पारसचन्द जी, समीरमल जी जैन, अलीगढ़-रामपुरा, चि. मारुत सुपुत्र श्री समीरमल जी का शुभ विवाह सौ. नेहा सुपुत्री श्री महावीरप्रसादजी जैन, पचालावाले के संग 20 अप्रेल, 2014 को सम्पन्न होने के उपलक्ष्य में।

1100/- श्री सुरेशमल जी गांग, अहमदाबाद, वर्षीतप के पारणक के उपलक्ष्य में।

1100/- श्रीमती सरस्वतीदेवीजी, श्री सुनिल जी, श्री चन्द्रशेखरजी, श्री सुरेशजी मुल्तानी, जोधपुर, श्री ज्ञानमल जी मुल्तानी का स्वर्गगमन 27 मार्च, 2014 को हो जाने की पुण्यस्मृति में।

1100/- श्री मुन्नालाल जी भण्डारी, जोधपुर, अपनी सास श्रीमती मगीबाईजी धर्मपत्नी श्री मोतीलाल जी कांकरिया (बिराई वाले) का स्वर्गगमन 01 मई, 2014 को होने पर उनकी पुण्यस्मृति में।

1100/- श्रीमती ममता जी धर्मपत्नी श्री पुखराज जी दुगड़, गोपुर, आसाम, श्रीमती ज्ञानदेवीजी धर्मपत्नी स्व. श्री फूलचन्दजी ललवाणी नागौर निवासी हाल मुकाम इन्दौर की पुण्यस्मृति में।

1100/- श्रीमती उषाजी एवं श्री नरेन्द्रजी सिंघवी, जोधपुर, श्री प्रकाशमल जी लोढ़ा सुपुत्र स्व. श्री नवरतनमल जी लोढ़ा का 30 अप्रेल 2014 को स्वर्गगमन हो जाने की पुण्य स्मृति में।

1100/- श्री राजूलालजी, नरेन्द्रमोहनजी, जिनेन्द्रकुमारजी 'श्यामपुरा वाले', बजरिया,सवाईमाधोपुर, वीर माता श्रीमती चमेलीदेवी धर्मपत्नी श्री नरेन्द्रमोहनजी के वर्षीतप के पारणे के उपलक्ष्य में।

1100/- श्री जगदीशप्रसादजी जैन, सुमेरगंजमण्डी वाले, कोटा, पूज्या माताजी श्रीमती पुष्पादेवी जी के वर्षीतप पारणे के उपलक्ष में।

1100/- कल्याणमल प्रकाशमल चोरडिया ट्रस्ट, चेन्नई, सहयोग हेतु।

1100/- श्री प्रमेशजी लोढ़ा, जयपुर, सुश्री महिमा लोढ़ा सुपुत्री श्रीमती अंजलिजी प्रमेशजी लोढ़ा, सुपौत्री स्व. श्री रतनचन्दजी लोढ़ा द्वारा सी.बी.एस.ई. परीक्षा में 95% अंक प्राप्त करने की खुशी में।

1100/- श्रीमती राजूबाईजी अनराजजी गाँधी, जोधपुर, स्व. श्री अनराजजी माणकचन्दजी गाँधी की पुण्य तिथि 12 जून 1985 की चिर स्मृति में।

श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ हेतु साभार प्राप्त

21000/- श्री पुरुषोत्तमजी, अनिलजी, उदितजी, यशजी भंडारी, मुम्बई, श्रीमती पूनमकँवरजी

धर्मसहायिका श्री पुरुषोत्तमजी भंडारी का 02 मई 2014 को देहावसान हो जाने पर उनकी पुण्य स्मृति में।

3100/- श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ, मेडतासिटी, 2013 के पर्युषण सहयोग हेतु।

2000/- श्री पदमचंद जी मेहता, जोधपुर, सहयोग हेतु।

1101/- श्री प्रेमचन्दजी जैन, चकेरी वाले हॉल निवासी तारों की कूंट, जयपुर, सुपुत्र चि. अमित के शुभ विवाहोपलक्ष्य में।

1101/- श्री सौभाग्यमलजी, देवेन्द्रकुमारजी जैन 'गम्भीरा वाले', आवासन मण्डल सवाईमाधोपुर, सुपुत्र चि. मनीष के शुभ विवाहोपलक्ष्य में।

1101/- श्री फूलचन्दजी, मिलापचन्द जी जैन, चौथ का बरवाड़ा (सवाईमाधोपुर), सुपुत्र चि. तपेश के शुभ विवाहोपलक्ष्य में।

1100/- श्री राजूलालजी, नरेन्द्रमोहनजी, जिनेन्द्रकुमारजी 'श्यामपुरा वाले', बजरिया, सवाईमाधोपुर, वीर माता श्रीमती चमेलीदेवी धर्मपत्नी श्री नरेन्द्रमोहनजी के वर्षीतप के पारणे के उपलक्ष्य में।

1100/- श्री चंचलमल जी गांग, जोधपुर, श्रीमती केसर जी गांग-श्री चंचलमल जी गांग के विवाह की 48 वीं वर्षगांठ एवं सुपौत्र राहुलजी सुपुत्र श्रीमती योगिताजी-राजेशजी गांग के 18 वें जन्म-दिवस के उपलक्ष्य में।

1100/- श्री रामलक्ष्मणजी एवं श्रीमती उषाजी कुम्भट, जोधपुर, अपनी मातुश्री श्रीमती उगमकंवरजी धर्मपत्नी स्व. श्री मगराजजी कुम्भट की पंचम पुण्यतिथि (04.06.2014) पर स्मरणांजलि स्वरूप।

सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के सत्साहित्य प्रकाशनार्थ अर्थसहयोग

21000/- श्री पुरुषोत्तमजी, अनिलजी, उदितजी, यशजी भंडारी, मुम्बई, श्रीमती पूनमकँवरजी धर्मसहायिका श्री पुरुषोत्तमजी भंडारी का 02 मई 2014 को देहावसान हो जाने पर उनकी पुण्य स्मृति में सम्यग्ज्ञान प्रचारक मंडल से प्रकाशित पुस्तक 'भक्तामर स्तोत्र' के पुनः मुद्रण हेतु अर्थसहयोग।

2000/- श्री धर्मचन्दजी, कमल कुमारजी, संजयजी मेहता, दूदू-जयपुर, श्रीमती चाँदकँवरजी मेहता धर्मपत्नी श्री धर्मचन्दजी मेहता का दिनांक 02 मई 2014 को देहावसान हो जाने पर उनकी पुण्य स्मृति में।

अ.भा.श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड हेतु साभार प्राप्त

25000/- श्री दलीचन्दजी, अशोक जी कवाड़, पुनमल्लै, चेन्नई, पुस्तक प्रकाशन हेतु।

3100/- श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ, मेडतासिटी।

गजेन्द्र निधि/ फाउण्डेशन ट्रस्टी

श्री गौतमचन्द जी, प्रवीणकुमारजी, मनोजकुमारजी संकलेचा, कुम्बकोणम्।

गजेन्द्र निधि द्वारा संचालित आचार्य हस्ती मेधावी छात्रवृत्ति योजना

(अखिल भारतीय श्री जैन रत्न युवक परिषद् द्वारा क्रियान्वित)

दानदाता एवं दान एकत्रित करने वालों की सूची

48000/- श्री चंपालालजी, सुजीत कुमारजी, ललित कुमारजी, अमित कुमारजी मखणा, बोदूदवाल (कर्नाटक), श्रीमती हुल्लासीबाईजी मखणा की पुण्यस्मृति में।

12000/- श्री मोहनराज जी चामड़ मेहता, जोधपुर।

12000/- श्रीमती कंचन जी, श्री राजीवजी, श्री संजीव जी बाफना, कोलकात्ता, श्रीमान् रतनलाल जी बाफना की तृतीय पावन स्मृति में।

छात्रवृत्ति-योजना में इच्छुक दानदाता एक छात्र के लिए 12000/- रु. अथवा उनके गुणक में जितनी छात्रवृत्तियाँ देना चाहें तदनुसार दानराशि 'गजेन्द्र निधि आचार्य श्री हस्ती स्कॉलर शिप फण्ड' योजना के नाम चैक या ड्राफ्ट(Donations to Gajendra Nidhi are exempted u/s 80G of IncomeTax Act 1961) से निम्नांकित पते पर भेजने का कष्ट करें- *श्री अशोक जी कवाड़,* 33, *Montieth Road, Egmore, Chennai-600008 (Mob. 9381041097)*

आगामी पर्व

ज्येष्ठ शुक्ला 14, गुरुवार	12.06.2014	चतुर्दशी, क्रियोद्धारक आचार्य पूज्य श्री रतनचन्द्र जी म.सा. की 169 वीं पुण्यतिथि
आषाढ़ कृष्णा, 1 एवं 2, शनिवार	14.06.2014	पक्खी, 218 वाँ क्रियोद्धारक दिवस
आषाढ कृष्णा 8, शुक्रवार	20.06.2014	अष्टमी
आषाढ कृष्णा 10, रविवार	22.06.2014	आर्द्रा नक्षत्र प्रारम्भ
आषाढ कृष्णा 14, गुरुवार	26.06.2014	चतुर्दशी
आषाढ कृष्णा 30, शुक्रवार	27.06.2014	पक्खी
आषाढ शुक्ला 8, शनिवार	05.07.2014	अष्टमी
आषाढ शुक्ला 8, रविवार	06.07.2014	अष्टमी
आषाढ शुक्ला 14, शुक्रवार	11.07.2014	चतुर्दशी, पक्खी एवं चातुर्मास प्रारम्भ
श्रावण कृष्णा 8, शनिवार	19.07.2014	अष्टमी
श्रावण कृष्णा 14, शुक्रवार	25.07.2014	चतुर्दशी
श्रावण कृष्णा 30, शनिवार	26.07.2014	पक्खी, आचार्यश्री शोभाचन्द्र जी म.सा. की 88 वीं पुण्यतिथि

रचनाएँ आमन्त्रित

'जिनवाणी' मासिक पत्रिका हेतु लेखकों का सहयोग निरन्तर प्राप्त हो रहा है। आप जिनवाणी के युवा-स्तम्भ, नारी-स्तम्भ, परिवार-स्तम्भ, बाल-स्तम्भ के साथ नैतिक, आध्यात्मिक, सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक विषयों पर भी अपनी मौलिक रचनाएँ प्रेषित कर सकते हैं। रचनाएँ साफ सुथरी एवं प्रवाहमयी भाषा में हों।-**सम्पादक**

सम्पूर्ण भारत से प्रवेशार्थ आवेदन-पत्र आमन्त्रित

आचार्य हस्ती आध्यात्मिक शिक्षण संस्थान में अध्ययन की उत्कृष्ट सुविधा

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर 1008 श्री हस्तीमल जी म.सा. की प्रबल प्रेरणा से सन् 1973 में संस्थापित एवं गजेन्द्र चेरिटेबल ट्रस्ट द्वारा संचालित आचार्य हस्ती आध्यात्मिक शिक्षण संस्थान, जयपुर में नैतिक संस्कारों के साथ आध्यात्मिक शिक्षण प्राप्त करते हुए विद्यालय, महाविद्यालय, प्रोफेशनल एवं प्रशासनिक स्तरीय का उच्च शिक्षण प्राप्त करने के इच्छुक जैन विद्यार्थियों से वर्ष 2014 में संस्थान में प्रवेश हेतु आवेदन आमंत्रित हैं। विगत 39 वर्षों में यहाँ से अध्ययन कर लगभग 120 विद्यार्थी वर्तमान में प्रशासनिक, राजकीय एवं व्यावसायिक क्षेत्रों में सेवारत हैं।

संस्थान में प्रवेश हेतु प्रक्रिया-

1. कक्षा आठ से लेकर उच्च कक्षा उत्तीर्ण विद्यार्थी आवेदन-पत्र प्राप्त कर निश्चित तिथि से पूर्व आवेदन पत्र जमा करावें।
2. विद्यालय, महाविद्यालय एवं प्रोफेशनल अध्ययन के साथ प्रशासनिक सेवाओं के प्रतियोगियों के लिए सभी विषयों में आवेदन आमंत्रित है। कला संकाय में संस्कृत विषय लेने वाले विद्यार्थियों को प्रवेश प्रक्रिया में विशेष छूट संभावित है।
3. संस्थान में प्रवेश हेतु विद्यार्थी का शैक्षणिक स्तर पर 58 प्रतिशत एवं उससे अधिक अंक होना, आध्यात्मिक रुचि का होना आवश्यक है। पारिवारिक आय स्तर भी प्राथमिकता रखेगा।
4. प्राप्त आवेदनों में से शैक्षणिक व आध्यात्मिक योग्यतानुसार चयनित छात्र ही प्रवेश हेतु साक्षात्कार में आमंत्रित किये जायेंगे, जिसकी सूचना आवेदनकर्त्ताओं को की जायेगी।

नियम एवं सुविधाएँ-

1. संस्थान में अध्ययनानुकूल उचित आवास एवं भोजन की निःशुल्क व्यवस्था।
2. विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास हेतु अँग्रेजी एवं विविध विषयों पर विशेष आमंत्रित महानुभावों द्वारा अभिप्रेरणा एवं कार्यशाला का आयोजन। संस्थान द्वारा भाषण, गायन, वाद-विवाद, गेम शो का समय-समय पर आयोजन।
3. सुसज्जित पुस्तकालय, विभिन्न समाचार पत्र-पत्रिकाएँ एवं कम्प्यूटर शिक्षण की उत्तम व्यवस्था।
4. विद्यार्थियों को स्कूल एवं महाविद्यालय के अध्ययन के साथ संस्थान द्वारा निर्धारित पाठ्यक्रम का अध्ययन अनिवार्य है।
5. संस्थान द्वारा निर्धारित अन्य नियमों एवं उपनियमों का पालन अनिवार्य।

जो भी विद्यार्थी नैतिक एवं आध्यात्मिक संस्कारों के शिक्षण के साथ विद्यालय, महाविद्यालय, प्रोफेशनल एवं प्रशासनिक स्तर के उच्च शिक्षण हेतु जयपुर में रहकर संस्थान में प्रवेश लेना चाहते हैं, वे दिये गये प्रवेश आवेदन पत्र को भरकर शीघ्र निम्न पते पर प्रेषित करावें- **दिलीप जैन,** ***संयोजक/अधिष्ठाता, आचार्य हस्ती आध्यात्मिक शिक्षण संस्थान, ए-9, महावीर उद्यान पथ, बजाज नगर, जयपुर-302015 (राज.) फोनः 0141-2710946, 094614-56489, ईमेलः- ahassansthan@gmail.com***

गजेन्द्र निधि द्वारा संचालित

आचार्य हस्ती मेधावी छात्रवृत्ति योजना

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न युवक परिषद् द्वारा क्रियान्वित

रत्न संघ के अष्टम पट्टधर परम पूज्य आचार्य भगवंत 1008 श्री हीराचन्द्र जी म.सा. एवं पंडितरत्न उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा. एवं संत-सतीमण्डल की असीम कृपा एवं रत्नसंघ के संघनिष्ठ गुरुभक्तों के पूर्ण सहयोग से गत आठ वर्षों से युवारत्न छात्र-छात्राओं की शैक्षणिक उन्नति एवं नैतिक व आध्यात्मिक जीवन में अभिवृद्धि करने के लिए छात्रवृत्ति योजना निरन्तर चल रही हैं। संघ द्वारा योजना का आगे विस्तार कर दिया गया है।

इस वर्ष के लिए इच्छुक छात्र-छात्राएँ चयन समिति से आवेदन पत्र मंगवा कर पूरित आवेदन पत्र चयन समिति के पास प्रेषित कर सकते हैं । इस योजना से संबंधित नियमावली इस प्रकार है-

नियमावली

1 आवेदक को प्रतिदिन 1 नवकार मंत्र की माला जपने का संकल्प करना होगा।

2 आवेदक सदाचारी हो एवं उसे सप्त कुव्यसन का त्याग करना होगा।

3 आवेदक को एक महीने में 5 सामायिक करने का संकल्प करना होगा।

4 चयनित विद्यार्थियों को अ. भा. श्री जैन रत्न युवक परिषद् द्वारा आयोजित शिविरों में भाग लेना अनिवार्य होगा ।

5 छात्रवृत्ति योजना के अंतर्गत **Scholarship Requisition Form** के आधार पर चयन समिति के निर्णयानुसार छात्रवृत्ति की राशि प्रदान की जायेगी। छात्रवृत्ति राशि की अधिकतम सीमा निम्नानुसार है।

Class	**Up to Class 10th**	**11th & 12th**	**Graduation & Post Graduation**	**Professional etc.**
Maximum Limit	Rs. 6000/-	Rs. 9000/-	Rs. 12000/-	Rs. 27500/-

6 चयन समिति के अनुसार **Scheme 1st** में उन विद्यार्थियों का चयन किया जायेगा जो व्यावहारिक शिक्षण में कम से कम 70% और धार्मिक शिक्षण में 60% से अधिक अंक प्राप्त करेंगे। इससे कम अंक वालों को **Scheme 2nd** में मान्य किया जायेगा।

7 सभी विद्यार्थियों को अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड जोधपुर द्वारा आयोजित परीक्षा देना अनिवार्य है।

नोट- लाभान्वित छात्र-छात्राएँ प्राप्त छात्रवृत्ति राशि को भविष्य में अपनी अनुकूलता अनुसार संघ को वापस प्रदान करते हैं तो उनका स्वागत है।

आवेदक की योग्यता- आवेदक की आयु 12 वर्ष से अधिक एवं 30 वर्ष से कम होनी चाहिए। आवेदक रत्न संघ का सदस्य होना चाहिए।

आवेदन पत्र प्रेषित करने का स्थान :-B.Budhmal Bohra, "Darshan Foundation", W 570, Park Road, Annanagar, West Extn. Chennai-600101(TN), Mob.-09543068382 , Email- guruhasti_scholarship@yahoo.co.in

आवेदन पत्र प्रस्तुत करने की अन्तिम तिथिः- पूरित आवेदन पत्र प्रस्तुत करने की अन्तिम तिथि 31 अगस्त 2014 है । आवेदन पत्र उपर्युक्त पते से मंगवाया जा सकता है । आवेदन पत्र की प्रतिलिपि (Photo-Copy) मान्य होगी। वेबसाइट www.jainyuvaratna.org से आवेदन-पत्र Download भी कर सकते हैं।

स्वाध्यायियों के लिये आवश्यक सूचना

श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर के समस्त स्वाध्यायी बन्धुओं से निवेदन है कि प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष भी आत्म गुणों के संचय, संवर्धन एवं संरक्षण के महापर्व पर्वाधिराज पर्युषण (दिनाँक 23 अगस्त से 30 अगस्त 2014 तक) के पुनीत अवसर पर आपकी सेवाओं की महती आवश्यकता है। आप पर्युषण पर्व में अवश्य पधारकर अपनी अमूल्य सेवाएँ संघ को प्रदान करावें। पर्युषण में बाहर क्षेत्र में जाकर सेवा देने से आपकी धर्माराधना तो सुचारू रूप से होगी ही, अन्य भाई-बहिनों की साधना में भी आप निमित्त बन सकेंगे। अतः आपसे आग्रह है कि आप अपनी पर्युषण स्वीकृति स्वाध्याय संघ कार्यालय, जोधपुर के पते पर अवश्य भिजवाने का श्रम करावें। साथ ही आप अपनी नवीनतम जानकारी जैसे अपने मोबाइल नम्बर, ईमेल आदि भी इस कार्यालय को अवश्य प्रेषित करें ताकि आपसे सम्पर्क में आसानी रहे।

विशेष निवदेन

हम सभी स्वाध्यायी बन्धुओं की पारिवारिक, सामाजिक एवं व्यावसायिक जान-पहचान अपने क्षेत्र में ही नहीं, अपितु पूरे भारत वर्ष एवं विदेशों में भी हैं। इस संबध में निवेदन है कि हम अपने जान-पहचान वालों से व्यावहारिक वार्तालाप करने के साथ ही आध्यात्मिकता से जुड़ी बातें भी करें। हमारे सम्पर्क में आया बन्धु जिस क्षेत्र से जुड़ा है, उस क्षेत्र में चातुर्मास है या नहीं, इसकी जानकारी लें। अगर नहीं हैं तो क्षेत्र के अध्यक्ष/मंत्री से बात कर स्वाध्यायी बुलाने की प्रेरणा करें। अगर आपकी प्रेरणा से उस क्षेत्र में स्वाध्यायी जाते हैं तो आपको धर्म दलाली का लाभ स्वतः ही मिल जाएगा। साथ ही सम्पर्क में आने वाले बन्धुओं की धार्मिक जानकारी एवं योग्यता की परख करें तथा उन्हें स्वाध्यायी बनने एवं बनाने हेतु प्रेरणा करें। ऐसे बन्धु जिनमें स्वाध्यायी बनने की योग्यता हो उनके पते एवं फोन नं. इस कार्यालय को अवश्य प्रेषित करें, ताकि उनसे सम्पर्क किया जा सके।

संयोजक/सचिव

श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ

घोड़ों का चौक, जोधपुर (राज.)

फोन नं. 0291-2624891 मो. 9414126279, 9414569982

पर्युषण पर्वाराधना हेतु स्वाध्यायी आमन्त्रित कीजिए

श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर विगत 68 से भी अधिक वर्षों से सन्त-सतियों के चातुर्मासों से वंचित गाँव/शहरों में 'पर्वाधिराज पर्युषण पर्व' के पावन अवसर पर धर्माराधन हेतु योग्य, अनुभवी एवं विद्वान् स्वाध्यायियों को बाहर क्षेत्र में भेजकर जिनशासन एवं समाज की महती सेवा करता आ रहा है। इस वर्ष भी उन क्षेत्रों में जहाँ जैन सन्त-सतियों के चातुर्मास नहीं हैं, स्वाध्यायी बन्धुओं को भेजने की व्यवस्था है। इस वर्ष **पर्युषण पर्व 23 से 30 अगस्त 2014** तक रहेंगे। अतः देश-विदेश के इच्छुक संघ के अध्यक्ष/मंत्री निम्नांकित बिन्दुओं की जानकारी के साथ अपना आवेदन पत्र दिनांक **15 जुलाई 2014** तक इस कार्यालय को अवश्य प्रेषित करने का श्रम करावें। पहले प्राप्त आवेदन पत्रों को प्राथमिकता दी जायेगी।

1. गांव/शहर का नाम......................जिला.............प्रान्त...............
2. श्री संघ का नाम व पूरा पता..
3. संघाध्यक्ष का नाम, पता मय फोन नं..
   ....
4. संघ मंत्री का नाम, पता मय फोन नं..
   ....
5. संबंधित जगह पहुंचने के विभिन्न साधन..
   ....
6. समस्त जैन घरों की संख्या...
7. क्या आपके यहाँ धार्मिक पाठशाला चलती है?.....................................
8. क्या आपके यहाँ स्वाध्याय का कार्यक्रम नियमित चलता है?........................
9. पर्युषण सेवा संबंधी आवश्यक सुझाव..
10. अन्य विशेष विवरण...

आवेदन करने का पता-संयोजक/सचिव, श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, प्रधान कार्यालय-घोड़ों का चौक, जोधपुर- 342001 (राज.) फोन नं. 0291-2624891, फैक्स- 2636763, मो.-94604-41570 (संयोजक), 94610-13878 (सचिव), 9460081112 (का. प्रभारी) ,ईमेल-**swadhyaysanghjodhpur@gmail.com**

विशेष- दक्षिण भारत के संघ अपनी मांग श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ शाखा चेन्नई 24/25, **Basin Water Works Street,Sowcarpet, Chennai-600079** के पते पर भी भेज सकते हैं। सम्पर्क सूत्र- श्री सुधीर जी सुराणा, फोन नं. 09380997333 (मोबाइल)044-25295143 (स्वाध्याय संघ)

जयगुरु हस्ती जयगुरु हीरा जयगुरु मान

क्रोध पर विजय प्राप्त करनी हो तो क्षमा धारण करें।
– आचार्यश्री हस्ती

जोधपुर में प्लॉट, मकान, जमीन, फार्म हाउस खरीदने व बेचने हेतु सम्पर्क करें।

पद्मावती

डेवलपर्स एण्ड प्रोपर्टीज

महावीर बोथरा
09828582391

नरेश बोथरा
09414100257

292, सनसिटी हॉस्पिटल के पीछे, पावटा, जोधपुर 342001 (राज.)
फोन नं. : 0291-2556767

जयगुरु हस्ती जयगुरु हीरा जयगुरु मान

अंतर में सच्चाई चाहिए और व्यवहार में सफाई चाहिए, वही प्राणी संसार में अपना आत्म हित कर जगत के सामने आदर्श रख सकता है ।

– आचार्य श्री हीरा

C/o CHANANMUL UMEDRAJ
BAGHMAR MOTOR FINANCE
S. SAMPATRAJ FINANCIERS
S. RAJAN FINANCIERS

218, Ashoka Road, Lashkar Mohalla,
Mysore-570001 (Karanataka)

With Best Compliments from :

C. Sohanlal Budhraj Sampathraj Rajan
Abhishek, Rohith, Saurav, Akhilesh Baghmar

Tel. : 821-4265431, 2446407 (O)
Mo. : 9845126407 (B), 9845580407 (S), 9845113334 (R)

जयगुरु हस्ती जयगुरु हीरा जयगुरु मान

सामायिक वह महती साधना है, जिसके द्वारा जन्म-जन्मान्तरों के संचित कर्म-मल को नष्ट किया जा सकता है।

BALAJI AUTOS

(Mahindra & Mahindra Dealers)
618, 619, Old No. 224, C.T.H. Road
Padi, Mannurpet, Chennai - 600050
Phone : 044-26245855/56

BALAJI HONDA

(Honda Two Wheelers Dealers)
570, T.H. Road, Old Washermenpet, Chennai - 600021
Phone : 044-45985577/88
Mobile : 9940051841, 9444068666

BALAJI MOTORS

(Royal Enfield Dealers)
138, T.H. Road, Tondiarpet, Chennai - 600081
Maturachaiya Shelters,
Annanagar
Mobile : 9884219949

BHAGWAN CARS

Chennai - 600053
Phone : 044-26243455/66

परस्परोपग्रहो जीवानाम्

With Best Compliments from :

परस्परोपग्रहो जीवानाम्

Parasmal Suresh Kumar Kothari

Dhapi Nivas, 23, Vadamalai Street,
Sowcarpet, Chennai - 600079
Phone : 044-25294466/25292727

Gurudev

SURANA™

yes, the best TMT RE-BARS

DRI Plant

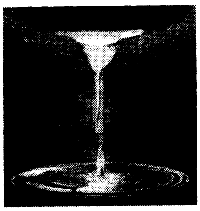

Electric Arc Furnace

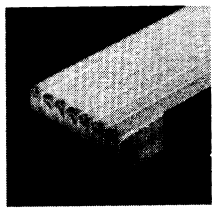

Billets

Rolling Mill

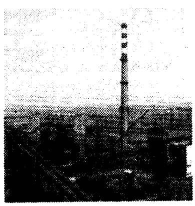

Captive Power Plant

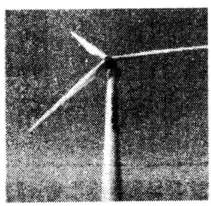

Windmill

With best wishes from

ISO 9001-2008

SURANA INDUSTRIES LIMITED

INTEGRATED STEEL PLANT

MANUFACTURE OF TMT BARS AND ALL KIND OF ALLOY STEEL

29, Whites Road, II Floor, Royapettah, Chennai 600 014/ Ph : 044-28525127 (3 lines) 28525596. Fax: 044-28521143

Email: steelmktg@suranaind.com / www.surana.org.in

STEEL I POWER I MINING

।। श्री महावीराय नमः ।।

हस्ती-हीरा जय जय ! हीरा-मान जय जय !

छोटा सा नियम धोवन का।
लाभ बड़ा इसके पालन का।।

अखण्ड बाल ब्रह्मचारी चारित्र चूड़ामणि, भक्तों के भगवान् 1008
श्री हस्तीमल जी म.सा. के चरणों में हृदय की असीम आस्था से समर्पण
उनके अनमोल खजाने के हीरे-मोती जन-जन के तारणहार
पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री हीराचन्द्र जी म.सा.,
पण्डित रत्न उपाध्याय प्रवर श्री मानचन्द्रजी म.सा.
एवं समस्त

रत्नाधिक साधु साध्वी मण्डल

के चरण कमलों में भावभरा कोटिशः वन्दन एवं समर्पण...

OUR HUMBLE SALUTATIONS TO THE MOST NOBLE SOULS

PRITHIVIRAJ PREM KUMAR KAVAD
690, Trunk Road, Poonamallee, Chennai - 600 056
Ph. 044-26272196 Mob. : 93810-07273

MANGILAL HARISH KUMAR KAVAD
GURU HASTI THANGA MAALIGAI
(JEWELLERS & BANKERS)
5, Car Street, Poonamallee, Chennai-600 056
Ph. : 044-26272609 Mob. : 95-00-11-44-55

जयगुरु हस्ती जयगुरु हीरा जयगुरु मान

प्यास बुझाये, कर्म कटाये
फिर क्यों न अपनायें
धोवन पानी

Narendra Hirawat & Co.

Flat No. 1, Building No. 2, Navjeevan Society,
Senapati Bapat Marg, Matunga (West), MUMBAI-400 016

Trin-Trin

Matunga Office : 022-24370713, 24380713, 66669707
Opera House Office : 022-23669818
Mobile : 09821040899

गजेन्द्र निधि द्वारा संचालित

आचार्य हस्ती मेधावी छात्रवृत्ति योजना

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न युवक परिषद्

रत्न संघ के अष्टम् पट्टधर **परम पूज्य आचार्य भगवंत 1008 श्री हीराचन्द्र जी म.सा.** एवं **पंडितरत्न उपाध्याय प्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा.** एवं **संत-सतीमण्डल** की असीम कृपा एवं **रत्नसंघ के संघनिष्ठ गुरुभक्तों** के पूर्ण सहयोग से गत आठ वर्षों से युवारत्न छात्र-छात्राओं के शैक्षणिक उन्नति एवं नैतिक व आध्यात्मिक जीवन में अभिवृद्धि करने के लिए छात्रवृत्ति योजना निरन्तर रूप से चल रही है। **संघ द्वारा योजना का आगे विस्तार कर दिया गया है।**

संघ द्वारा प्रदत्त वेतन द्वारा संघ सेवा में **सन्नद्ध श्रीमती मधुबाला जी दर्डा, जलगांव** ने आचार्य हस्ती मेधावी छात्रवृत्ति योजना महत्ता को ध्यान में रखते हुए **रुपये 12000/- (अपने 4 माह का वेतन)** का अर्थ सहयोग किया। यह हम सभी प्रबुद्ध लोगों के लिए अनुमोदनीय कार्य है। हम भी इस उत्कृष्ट छात्रवृत्ति सेवा कार्य की महत्ता को समझकर अधिकाधिक राशि द्वारा सहयोग प्रदान करावें।

इस वर्ष के लिए जो भी छात्र-छात्राएँ छात्रवृत्ति प्राप्त करना चाहते हैं, वे अपने आवेदन-पत्र चयन समिति के पास प्रेषित कर सकते हैं। छात्र चयन समिति के पास से आवेदन-पत्र मंगवा सकते हैं। इस योजना से संबंधित नियमावली इस प्रकार है :-

नियमावली

1. आवेदक को प्रतिदिन 1 नवकार मंत्र की माला जपने का संकल्प करना होगा।
2. आवेदक सदाचारी हो एवं उसे सप्त कुव्यसन का त्याग करना होगा।
3. आवेदक को एक महीने में 5 सामायिक करने का संकल्प करना होगा।
4. आमंत्रित विद्यार्थियों को अ.भा. श्री जैन रत्न युवक परिषद द्वारा आयोजित शिविरों में भाग लेना अनिवार्य होगा।
5. छात्रवृत्ति योजना के अंतर्गत Scholarship Requisition Form के आधार पर चयन समिति के निर्णयानुसार छात्रवृत्ति की राशि प्रदान की जायेगी। छात्रवृत्ति राशि की अधिकतम सीमा सारणी के अनुसार है।

Class	Upto Class 10th	11th & 12th	Graduation & Post Graduation	Professional Etc.
Maximum Limit	Rs. 6000/-	Rs. 9000/-	Rs. 12000/-	Rs. 27500/-

6. चयन समिति के अनुसार Scheme 1st में उन विद्यार्थियों का चयन किया जायेगा जो व्यवहारिक शिक्षण में कम से कम 70% और धार्मिक शिक्षण में 60% से अधिक अंक प्राप्त करेंगे। इससे कम अंक वालों को Scheme 2nd में मान्य किया जायेगा।
7. सभी विद्यार्थियों को अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षक बोर्ड जोधपुर की परीक्षा देना अनिवार्य है।

Note : लाभान्वित छात्र-छात्राएँ प्राप्त छात्रवृत्ति राशि को भविष्य में अपनी अनुकूलता अनुसार संघ को वापस प्रदान करते हैं तो उनका स्वागत है।

आवेदक की योग्यता - आवेदक की आयु 12 वर्ष से अधिक एवं 30 वर्ष से कम होनी चाहिए। आवेदक रत्न संघ का सदस्य होना चाहिए।

आवेदन पत्र प्रेषित करने की अन्तिम तिथि - आवेदन पत्र प्रेषित करने की अन्तिम तिथि 31 अगस्त है एवं आवेदन पत्र की प्रतिलिपि (Xerox) मान्य है।

छात्रवृत्ति योजना संबंधी अन्य जानकारी एवं आवेदन पत्र प्रेषित करने के लिए निम्न पते पर सम्पर्क करें-

Shri B. Budhmal Ji Bohra
Dharsan Founsrion, W-570, Park Road,
Annanagar-West Extn., CHENNAI-600101 (Tamilnadu)
Ph. : 044-42728476, Mob. : 9543068382
E-mail : guruhasti_scholarship@yahoo.co.in

जय गुरु हस्ती

जय गुरु हीरा

जय गुरु मान

अगर व्यक्ति प्रभु के मार्ग पर चले तो कहीं भी अशान्ति नहीं हो सकती।

- आचार्य श्री हीरा

सांखला परिवार की ओर से निवेदन

हम :

चौबीसों तीर्थंकरों के चरण
कमलों पर मस्तक रखते हैं
और
विनम्रता तथा गौरव के साथ
जाहिर करते हैं कि
"जिनवाणी" के
उत्कर्षदायी तथा पुण्यात्मक कार्यों में
हमारा सहर्ष
सदैव सहकार रहेगा।

मदन मोहन सांखला,
सौ. हेमलता मदन सांखला
मेहुल मदन सांखला
सौ. प्रणिता मेहुल सांखला और
बेबी बुणम मेहुल सांखला

MAXHEAL

MAXHEAL Group of Companies

Jai Guru Heera

Jai Guru Hasti

Jai Guru Maan

शाश्वत सुख के लिए प्रतिपल प्रयत्न करने वाले जीव मुमुक्षु कहलाते हैं। ये जीव साधक भी हो सकते है और श्रावक भी।

- आचार्य श्री हीरा

BHANSALI GROUP

Dhanpatraj V. Bhansali

BHANSALI DEVELOPERS

Sharda Bhawan, 2nd Floor, Nandapatkar Road,
Vile Parle (E), Mumbai - 400 057
Tel. : (O) 26185801 / 32940462
E-MAIL : bhansalidevelopers@yahoo.com

JAI GURU HASTI JAI GURU HEERA JAI GURU MAAN

प्यास बुझाये, कर्म कटाये
फिर क्यों न अपनायें
धोवन पानी

With best compliments from

SOHANLAL UMEDRAJ SURENDER HUNDIWAL

S.UMEDRAJ JAIN (HUNDIWAL)
098407 18382
2027 'H' BLOCK 4th STREET,12TH MAIN ROAD,
ANNA NAGAR, CHENNAI-600040
044-32550532

BRANCHES

APPOLO BRIGHT STEELS PVT LTD.
S.P.59, 3 rd MAINROAD
AMBATTUR ESTATE CHENNAI-600058
044-26258734, 9840716053, 98407 16056
FAX: 044-26257269
E-MAIL: appolobright@yahoo.com

APPOLO CORRUGATORS PVT LTD.
NO.400 NORTH PHASE, SIDCO INDUSTRIAL ESTATE,
AMBATTUR CHENNAI-60098
FAX: 044-26253903, 9840716054
E-MAIL:appolocorrugators@yahoo.com

आर.एन.आई. नं. 3653/57 डाक पंजीयन संख्या RJ/JPC/M-21/2012-14
मुद्रण तिथि दिनांक 5 से 8 जून, 2014
वर्ष : 72 ★ अंक : 06 ★ मूल्य : 10 रु.
डाक प्रेषण तिथि 10 जून, 2014★ ज्येष्ठ, 2071

Kalpataru

AURA

• Awarded Best Architecture (Multiple Units) at Asia Pacific Property Awards 2010 • A complex of multi-storeyed buildings • Luxurious 2 BHK & E3 homes • Two clubhouses with gymnasium, squash, half-basketball and tennis courts • Mini-theatre • Yoga room • Swimming pool • Multi-functional room • Spa • Landscaped garden and children's play area • Safety and security features

KALPA-TARU®

Site Address: LBS Marg, Ghatkopar (West), Mumbai - 400 086.
Head Office: 101, Kalpataru Synergy, Opp. Grand Hyatt, Santacruz (East), Mumbai - 400 055.
Tel.: 022-3064 3065 • **Fax:** 022-3064 3131
Email: sales@kalpataru.com • **Visit:** www.kalpataru.com

All specifications, designs, facilities, dimensions, etc. are subject to the approval of the respective authorities and the developers reserve the right to change the specifications or features without any notice or obligation. Images are for representative purposes only. All project elevations are an artistic design. Conditions apply.

Kalpataru Limited is proposing, subject to market conditions and other considerations, to make a public issue of securities and has filed a Draft Red Herring Prospectus ("DRHP") with the Securities and Exchange Board of India (SEBI). The DRHP is available on the website of SEBI at www.sebi.gov.in and the respective websites of the Book Running Lead Managers at www.morganstanley.com/indiaofferdocuments, www.online.citibank.co.in/rhtm/citigroupglobalscreen1.htm, www.csinga.com, www.icicisecurities.com, www.nomura.com/asia/services/capital_raising/equity.shtml, www.idfccapital.com. Investors should note that investment in equity shares involves a high degree of risk and for details relating to the same, see 'Risk Factors' in the aforementioned offer documents. This communication is not for publication or distribution to persons in the United States, and is not an offer for sale within the United States of any equity shares or any other security of Kalpataru Limited. Securities of Kalpataru Limited, including its equity shares, may not be offered or sold in the United States absent registration under U.S. securities laws or unless exempt from registration under such laws.

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक – विनय चन्द डागा द्वारा दी डामयण्ड प्रिंटिंग प्रेस, जौहरी बाजार, जयपुर से मुद्रित व सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जयपुर – 302003 से प्रकाशित । सम्पादक – डॉ. धर्मचन्द जैन